पोर्टेबल बाइबल स्कूल
शिक्षक–प्रशिक्षण मैन्युअल

इस मैन्युअल का उद्देश्यः

इस मैन्युअल का उद्देश्य है कि जिन्हें परमेश्वर ने पोर्टेबल बाइबल स्कूल के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिये बुलाया है उनके लिये आवश्यक कार्यनीतियों को उपलब्ध करायें, ताकि फिर वे पोर्टेबल बाइबल स्कूल के लिये शिक्षकों को प्रशिक्षित करें कि उसके अभ्यासक्रम को किस प्रकार पढ़ाया जाये। क्रमानुसार बनायी गई इस मार्गदर्शिका का अभिप्राय यही है कि इसे छः दिनों में पूरा प्रस्तुत किया जाये। तथापि, इसे विभिन्न समूहों, संस्कृतियों और आवश्यकताओं के अनुसार उपयोग में लाया जा सकता है। अवश्य है कि इस मैन्युअल से सिखाने के पहले इसे पूरा पढ़ लिया जाये और इसका अध्ययन किया जाये। कक्षा के भीतर, शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा मात्र उन पाठ्यपुस्तकों का उपयोग किया जाये जिन्हें पोर्टेबल बाइबल स्कूल के अभ्यासक्रम के लिये ठहराया गया हैं। इन में हैं: ''चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग'' और ''टेन्ट्मेकर मैन्युअल।'' निःसंदेह, इस सारी शिक्षा के लिये आधारभूत साहित्य के रूप में, बाइबल का उपयोग किया जाता है।

इस पाठ्यक्रम को जिन लोगों के मध्य सिखाया जायेगा उनके मध्य यह गहरी जड़ पकड़े इसके लिये आवश्यक है कि शिक्षक–प्रशिक्षक मसीह के प्रति समर्पित हो, ऐसा हो कि प्रत्येक सत्र के दौरान पवित्र आत्मा को अनुमति दे कि अपनी सामर्थ्य और अपना जीवन उसमें भरता रहे। इस प्रकार से ही सीखने वाले समूह के मध्य परिपूर्णता और उर्जा लायी जायेगी।

जब हमने इस क्रमानुसार मार्गदर्शिका को तैयार किया, तब यहेजकेल और सूखी हड्डियों का चित्र हमारे मन में आया। हम पवित्रशास्त्र में पढ़ते हैं, ''परमेश्वर यहोवा तुम हड्डियों से यों कहता है, देखो, मैं आप तुम में सांस समवाऊंगा, और तुम जी उठोगी। और मैं तुम्हारी नसें उपजाकर मांस चढ़ाऊंगा, और तुम को चमड़े से ढांपूंगा; और तुम में सांस समावाऊंगा और तुम जी जाओगी; और तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूं'' (यहेजकेल 37:5–6)।

हमारी प्रार्थना है कि यह मैन्युअल सूखी हड्डियों की तराई में मात्र एक कंकाल बन कर ना रह जाये परंतु ऐसे लोगों के हाथों में रखा जाये जो परमेश्वर के द्वारा बुलाये गये हैं कि शिक्षक–प्रशिक्षक बन कर उन लोगों को प्रशिक्षित करेंगे जो फिर आगे पोर्टेबल बाइबल स्कूल के अभ्यासक्रम को सिखायेंगे। हम प्रार्थना करते हैं कि पवित्र आत्मा उन सब में अपना जीवन भर देगा जो इस अभ्यासक्रम के द्वारा प्रभावित किये जायेंगे। जैसे कि परमेश्वर ने सूखी हड्डियों से कहा था, हम भी सब जगह, सब लोगों को पुकारते हैः जीवित हो जाओ और जीओ!

विषय–सूची

विभाग एक

सत्र 1: पोर्टेबल बाइबल स्कूल का उद्देश्य 3
सत्र 2: बाइबल की पुस्तकें (अध्यापन) 7
सत्र 3: बाइबल की पुस्तकें (समूहों में अध्ययन) 10
सत्र 4: बाइबल की पुस्तकें (समूह प्रस्तुतिकरण) 11
सत्र 5: धर्मोपदेशकला (अध्यापन) 12
सत्र 6: धर्मोपदेशकला (समूह कार्य) 13

विभाग दो

सत्र 1: प्रशिक्षण रूपरेखा 14
सत्र 2: पवित्र जीवन (अध्यापन) 18
सत्र 3: पवित्र जीवन (समूहों में अध्ययन) 20
सत्र 4: पवित्र जीवन (समूह प्रस्तुतिकरण)....21
सत्र 5: धर्मोपदेशकला अध्यापन) 23
सत्र 6: धर्मोपदेशकला (समूह कार्य)....24

विभाग तीन

सत्र 1: प्रणाली संबंधी दृष्टिकोण....25
सत्र 2: सिद्धांत (अध्यापन)....27
सत्र 3: सिद्धांत (समूहों में अध्ययन)....29
सत्र 4: सिद्धांत (समूह प्रस्तुतिकरण)....30
सत्र 5: धर्मोपदेशकला (अध्यापन)....32
सत्र 6: धर्मोपदेशकला (समूह कार्य)....35

विभाग चार

सत्र 1: प्रशिक्षण–उपरांत मूल्यांकन....36
सत्र 2: झुंड की चरवाही (अध्यापन भाग 1)....37
सत्र 3: झुंड की चरवाही (अध्यापन भाग 2)....41
सत्र 4: धर्मोपदेशकला (अध्यापन)....45
सत्र 5: धर्मोपदेशकला (समूह कार्य)....47

विभाग पांच

सत्र 1: डिनॉमिनेशनल संबंध....48
सत्र 2: झुंड की चरवाही (अध्यापन भाग 3)....49
सत्र 3: झुंड की चरवाही (व्यक्तिगत अध्ययन)....52
सत्र 4: झुंड की चरवाही (व्यक्तिगत प्रस्तुतिकरण)....53
सत्र 5: धर्मोपदेशकला (अध्यापन)....54
सत्र 6: धर्मोपदेशकला (समूह कार्य)....57
सत्र 7: अंतिम दिन की तैयारी....58

विभाग छ:

पोर्टेबल बाइबल स्कूल का एक आर्दश दिन (प्रशिक्षण–प्राप्तकर्ता शिक्षकों के द्वारा प्रस्तुतिकरण)....59
परिशिष्ट ए से एच....60–74

विभाग एक

सत्र 1: 90 मिनट

पाठ्यपुस्तकः पोर्टेबल बाइबल स्कूल शिक्षक प्रशिक्षण सेमिनार

पोर्टेबल बाइबल स्कूल का उद्देश्य

पोर्टेबल बाइबल स्कूल के लिये बाइबलीय आधार

- बाइबल के आरंभ से लेकर अंत तक, परमेश्वर पतित लोगों को पुनः अपनी सहभागिता में ले आने का कार्य कर रहा है।
  - उत्पत्ति 12:1–3 में परमेश्वर अब्राम से, (जिसे बाद में अब्राहम कहा गया), कहता है कि उसके द्वारा भूमण्डल के सारे कुल आशीष पायेंगे।

> - पूछियेः परमेश्वर की ओर से यह आशीष किस प्रकार उपलब्ध होने वाली थी?
> - पूछियेः अब्राम के द्वारा सारे लोक–समूह या देश किस प्रकार आशीष पायेंगे?
> - उत्तरः परमेश्वर की आशीष अब्राम के वंश के द्वारा आयी। अब्राम के वंश में से यीशु मसीह का जन्म हुआ।
> - उत्तरः यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनःरुत्थान के द्वारा यह संभव हुआ है कि सारे लोग, उसमें विश्वास करने के द्वारा, परमेश्वर के साथ की सहभागिता को पुनः प्राप्त कर सकते हैं।

  - अब्राम का वंश इस्राएल लोग थे।
    - उन्हें परमेश्वर के नाम को पवित्रता के साथ धारण करना था कि अपने आसपास के देशों के समक्ष परमेश्वर के साक्षी ठहरें।
    - प्रचीन इस्राएल जाति के ऐतिहासिक वृत्तांत के बारे में हम पुराना नियम में पढ़ सकते हैं।
    - तत्पश्चात, यह जिम्मेवारी यीशु ने कलीसिया को सौंप दी है (मत्ती 21:43)।

  - प्रकाशितवाक्य 7:9 से 10 ये वचन हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की पूर्णता का चित्र प्रस्तुत करते हैं।
    - हम पढ़ते हैं कि स्वर्ग में, ''हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था . . . सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है।''

- जो परमेश्वर के पीछे चलते हैं उनके लिये उसकी इच्छा का केंद्र यह हैः
  - उन्हें शिष्य बनाना, बपतिस्मा देना, और उन्हें परमेश्वर के संपूर्ण वचन को सिखाना। ये बाइबल की केंद्रिय आज्ञाएं हैं।
  - मत्ती 28:18–20 में कहा गया हैः "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ। और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।"

- महान आदेश का संबंध यीशु मसीह के द्वितीय आगमन से हैः
  - मत्ती 24:14 कहता है, ''राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा ताकि सब जातियों पर गवाही हो, और तब अन्त आ जाएगा।''
  - इसलिये कि हमारे पास संपूर्ण विश्व भर में कार्य करने वाली बहुतेरी मिशन संस्थाओं के द्वारा दी जाने वाली जानकारी है, हम विश्वास करते हैं कि हम इस कार्य के पूरा होने के बहुत–ही निकट हैं।
  - 2 पतरस 3:11–12 में कहा गया है, ''तो जबकि ये सब वस्तुएं, इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चालचलन और भक्ति में कैसे मनुश्य होना चाहिए? और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिए कैसा यत्न करना चाहिए; जिसके कारण आकाष आग से पिघल जाएंगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे?''
  - हम अपने परिश्रम से ना मात्र मसीह के आगमन को जल्दी कर सकते हैं, परंतु हम पवित्र जीवन जीने के द्वारा उसके आने की गति को बढ़ा सकते हैं।

- चारों सुसमाचारों में महान आदेश पाया जाता है।
- मत्ती 28:18–20 में जो महान आदेश है उसमें हम चार ''सब'' या ''सारा'' को देखते हैं:

मत्ती 28:18–20 के महान आदेश में चार ''सब'' या ''सारा'

1. यीशु को परमेश्वर का ''सारा'' अधिकार दिया गया है।
2. हमें मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते हुये ''सब'' लोगों के पास जाना है।
3. हमें उन ''सब'' बातों को मानना है और पालन करना है जो परमेश्वर ने हमें आज्ञा दी हैं।
4. हमें इस प्रतिज्ञा पर भरोसा करना है कि पवित्र आत्मा ''सदैव'' हमारे साथ है।

- हम मत्ती 9:38 में यीशु के द्वारा हमें दिया गया प्रोत्साहन पढ़ते हैं, ''फसल के स्वामी से बिनती करो कि वह अपनी फसल काटने के लिए मज़दूर भेज दें।'' इससे अधिक बल हम प्रार्थना में नहीं दे सकते हैं।
- परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हम देखते हैं कि आज इतने अधिक लोग यीशु में विश्वास कर रहे हैं जितने पहले कभी नहीं किये थे।
- विद्यार्थियों को स्मरण दिलाइये कि जगत में सुसमाचारों से वंचित सारे स्थानों में पहुंचने के लिये कलीसिया को और भी अधिक कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है।

महान आवश्यकता[1]

- संसार की जनसंख्या में से 2.3 अरब लोग स्वयं को मसीही कहते हैं।
- प्रतिदिन 50,000 लोग बपतिस्मा लेते हैं।
- 2015 और 2020 के मध्य 50 लाख से अधिक कलीसियाओं की स्थापना की गई।
- आज संसार में जो 22 लाख पास्टर सेवकाई कर रहे हैं उनमें से मात्र 5 प्रतिशत ने ही विधिवत प्रशिक्षण प्राप्त किया है।
- संसार में 7 अरब 80 करोड लोाग है, इन में से 40 प्रतिशत ऐसे हैं जिन्हें अभी भी यीशु मसीह का सुसमाचार सुनने की आवश्यकता है।[2]
- यह पूर्वानूमान लगाया गया था कि 2015 से 2020 के मध्य स्थापित 50 लाख कलीसियाओं में से 70 प्रतिशत कलीसियाएं असफल हो जायेंगी/समाप्त हो जायेंगी। हम मानते हैं कि अयाजकीय पास्टरों में प्रशिक्षण की कमी–– अर्थात् बाइबल, सिद्धांत, उपदेश–कला, झुण्ड की चरवाही और पवित्र जीवन के क्षेत्रों में मसीही नेतृत्व के प्रशिक्षण की कमी होने के कारण –– यह होना ही था।
    - इस आवश्यकता को पूरा करने के लिये, विश्वव्यापि कलीसिया के लिये आवश्यक है कि प्रतिदिन 1000 नये पास्टरों को प्रशिक्षित किया जाये ताकि इन नयी कलीसियाओं में नये विश्वासियों की चरवाही की जाये।
    - आवश्यकता है कि हम प्रार्थना करें कि प्रतिदिन और अधिक चरवाहे प्रशिक्षित किये जायें।
    - जागतिक मसीहीयत की वृद्धि का अनुमान लगाते हुये, विशेष करके अफ्रीका, एशिया, और दक्षिणी अमेरिका, हम अपने आप से प्रश्न पूछ सकते हैं: आने वाले पांच वर्षों में और कितनी अधिक कलीसियाओं की स्थापना होगी?
    - इन नयी कलीसियाओं की अगुवाई कौन करेगा; इन नये विश्वासियों की चरवाही कौन करेगा?

आइये हम, हर सुबह और हर रात, इस प्रार्थना को करें:
''फसल के स्वामी, अपने फसल के खेतों में और मजदूरों को भेज।''
''प्रभु अपनी फसल के खेत में मुझे भेज।''

पोर्टेबल बाइबल स्कूल्स इस बड़ी आवश्यकता को पूरा करने में सहायता करती हैं।

- स्थानिय कलीसियाएं रचनात्मक, आराधना–भक्ति करने वाली होती हैं जो मजदूरों को पके खेतों में भेजेती हैं।
- पीबीएस इन स्थानिय कलीसियाओं के साथ मिलकर सहायता करती है कि वे उस बात को कर सके जिसे करने के लिये परमेश्वर ने उन्हें बुलाया है ––यह कि परमेश्वर के मिशनरी कार्यों में एक पुनरुत्पादक और मजदूरों को भेजनेवाला समाज बने।
- पीबीएस की संरचना एक नया डिनॉमिनेशन बनने के लिये नहीं की गई है।
- पीबीएस पवित्र आत्मा की भूमिका को प्रदर्शित करती है: एक सहायक की भूमिका को, ऐसा सहायक जो ''सहायता करने के लिये साथ आता है।''

[1] Statistics according to the Lausanne Committee (2015).
[2] As of January 2020.

- इस आवश्यकता को पूरा करने के लिये पीबीएस की संरचना कैसे की गई है?:
  - यह समय में परखी गई है: पीबीएस कार्यक्रम 1986 में आरंभ हुआ। तब से लेकर, लगभग 20 देशों में, 1,60,000 से अधिक स्त्री–पुरुषों को प्रशिक्षित किया गया है, सुसज्जित किया गया है, कि कलीसियाओं में और छोटे समूहों में अयाजकीय पास्टरों के रूप में सेवकाई करें। इनके द्वारा हजारों घरेलू कलीसियाओं की स्थापना हुई है।
  - यह समय के अनुसार प्रभावशाली ठहरी है: मात्र आठ सप्ताहों में लोग सुसज्जित किये जाते हैं कि मसीह के शिष्यों की अगुवाई करें और औरों को भी ऐसा ही करने के लिये प्रशिक्षित करें।
  - यह लागत कुशल है: इव्हेंजिलिज्म रिर्सोसेस प्रति–विद्यार्थी 12 अमेरिकी डॉलर देती है। इससे पढ़ाने वाले शिक्षकों का वेतन देने में तथा कक्षा की सामग्री लेने में सहायता होती है। अधिकांश स्थिति में, पीबीएस प्रशिक्षण विद्यार्थियों के घर के निकट के स्थान में ही चलाया जाता है, अतः उन्हें यात्रा करके दूर जाने की या किसी अन्य स्थान में रहने की व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं होती है।
  - यह स्थिति के अनुसार लचीली है: यह कहीं भी चलाई जा सकती है, कठीन स्थानों में भी! पीबीएस लोगों को ''जहां वे हैं'' वहीं प्रशिक्षित करती है। यह अध्ययन कक्षाओं में, घरों में, बंदीगृहों में, शरणार्थी कैम्प में, अस्पतालों में, पेड़ों के नीचे और घर के छतों के उपर भी चलाई गई है। इसकी समय सारणी भी लचीली है: स्थिति के अनुसार ढाली जा सकती है।
  - यह दूर तक लाभकारी है: पीबीएस कार्यक्रम बहुत व्यापक अवसर देता है कि शिष्यों को अयाजकीय पास्टरों के रूप में प्रशिक्षित किया जाये। इसके द्वारा ऐसी कलीसियाओं में पायी जाने वाली अगुवों की कमी को पूरा किया जा सकता है जो अपने अगुवों को सेमीनरी या बाइबल कॉलेज में नहीं भेज सकते हैं। अपने ही स्थान में प्रशिक्षित किया गया अगुवा अपने लोगों में अच्छे से जाना जाता है, वह अपनी स्थानीय परिस्थिति को अच्छे से समझता है और यह भी अधिक संभव है कि वह अपनी कलीसिया में लम्बे समय तक सेवा करता रहेगा।
  - यह प्रासंगिक है: इससे स्थानीय अयाजकीय पास्टरों के लिये संभव होता है कि पवित्र शास्त्र की सच्चाइयों को स्थानीय लोगों की सांस्कृतिक परिस्थिति में सिखा सकें। यह वहीं चलाई जाती है जहां विद्यार्थी रहते हैं। इसके द्वारा अयाजकीय अगुवों को वह ज्ञान और कुशलता दी जा सकती है जो उनमें अयाजकीय पास्टर होने के आत्मविश्वास और क्षमता को उत्पन्न करेगी जिसके द्वारा, उनके डिनॉमिनेशन में, सुसमाचार प्रचार और शिष्य बनाने के प्रयासों में वृद्धि होगी।

> - उदाहरणः ''जीवन की रोटी मैं हूं'' और ''जीवन का शकरकन्द मैं हूं''
> - उदाहरणात्मक कहानीः अपने अनुभवों में से उस कहानी को बताइये जो इन छः विशिष्टताओं में से किसी एक का महत्व स्पष्ट करेगी।
> - पूछियेः आप जहां रहते हैं या सेवकाई करते हैं, वहां पोर्टेबल बाइबल स्कूल्स किस प्रकार लाभकारी हो सकती हैं?

पोर्टेबल बाइबल स्कूल किस प्रकार कार्य करती है?

- पीबीएस में छः महत्वपूर्ण लोगः
  1. *सुसमाचार प्रचारक* आसपास के नगरों या गांवों में जाते हैं कि वहां सुसमाचार का प्रचार करें और नये विश्वासियों के छोटे समूह स्थापित करें। यदि उस नगर या गांव में पहले से ही कोई स्थायी स्थानीय कलीसिया है, तो सुसमाचार प्रचारक उस कलीसिया के साथ काम करेंगे।
  2. *विद्यार्थी* वे होते हैं जो भविष्य में अयाजकीय पास्टर होंगे, जिन्हें परमेश्वर ने बुलाया है कि छोटे समूहों या कलीसियाओं की अगुवाई करें। प्रत्येक छोटा समूह अपने सदस्यों में से एक या अधिक सदस्यों को पीबीएस में जाने के लिये चुनता है। (विद्यार्थियों को, स्थानीय परिस्थिति के अनुसार, अन्य तरीकों से भी चुना जा सकता है।)
  3. *शिक्षक* वे होते हैं जो विद्यार्थियों को पीबीएस का संपूर्ण अभ्यासक्रम पढ़ाते हैं।
  4. *क्षेत्रीय निरीक्षक* कलीसिया के अनुभवी अगुवों में से होते हैं, अच्छा हो कि ये पास्टरों में से हों। ये अभ्यासक्रम के दौरान पीबीएस विद्यार्थियों के क्षेत्रीय कार्य का निरीक्षण करते हैं और अभ्यासक्रम पूरा हो जाने के बाद पीबीएस से गैज्यूएट हुये विद्यार्थियों के सलाहकार होते हैं।
  5. *प्रशिक्षार्थी* वे विद्यार्थी हैं जो पीबीएस शिक्षक प्रशिक्षण सेमीनार को सीख रहे हैं। इस सेमिनार का उद्देश्य है कि कलीसिया के अनुभवी अगुवों और/या अयाजकीय पास्टरों को बताया जाये कि (1) पीबीएस अभ्यासक्रम की शिक्षा कैसे दी जाये (2) शिक्षक प्रशिक्षक कैसे बनें।
  6. *शिक्षक प्रशिक्षक* ये कलीसिया के अनुभवी अगुवों में से होंगे जो पीबीएस अभ्यासक्रम को जानते हैं, जिन्होंने पीबीएस शिक्षक प्रशिक्षण सेमीनार को ऑन–लाईन या प्रत्यक्ष रीति से पूरा किया है और उस टीम के सदस्य हैं जो प्रशिक्षार्थियों में इस प्रशिक्षण को देती है।

पोर्टेबल बाइबल स्कूल्स का इतिहास

- डेमोक्रेटिक रिप्बलिक ऑफ द कांगो (डीआरसी) में इस का आरंभ, 1986:
  - उस समय डीआरसी में लगभग 70,000 देहात (गांव) थे। इन देहातों में बहुत–से मसीही लोग थे, परंतु मात्र 10,000 देहातों में ही पास्टर थे। इसका परिणाम यह था कि लाखों विश्वासी ऐसे थे जैसे कि ''चरवाहों के बिना भेडे'' होती हैं।
  - तब इव्हेंजिलिजम रिर्सोसेस (इआर) ने पीबीएस कार्यक्रम को तैयार किया कि इस आवश्यकता को पूरा किया जाये। इसके आरंभिक दिनों में पीबीएस एक बड़ी बिना छत की गाडी पर एक तम्बू लगा कर उसी में चलाई जानी थी, जो फिर एक देहात से दूसरे देहात में जाती थी परंतु अब वह शिक्षकों को देहातों में ले जाती है जहां वे विद्यार्थियों को उनके ही स्थान में प्रशिक्षित करते हैं।
  - अब डीआरसी में कलीसिया बहुत मजबूत है और इस बात के लिये किये जाने वाले धन्यवाद में परमेश्वर के उस कार्य का भी धन्यवाद किया जाता है जो पीबीएस के द्वारा वहां किया गया है।
- भारत देश में विस्तार, 1991:
  - 1990 के आरंभिक दिनों में, इआर के द्वारा की गई अनेक भेंटों के दौरान, बहुतेरे भारतीय अगुवों को पीबीएस कार्यक्रम की पहचान दी गई।
  - रेव्ह. लाजरस लालसिंग, दक्षिण भारत में एक एंग्लिकन पास्टर थे। लगभग 15 वर्षों के दौरान, उन्होंने अपने क्षेत्र के गांवों–देहातों में सुसमाचार प्रचार किया और कुछ 2000 से अधिक लोगों को बपतिस्मा दिया। उस समय यह बहुत बड़ी संख्या थी। तब ही उन्हों ने पीबीएस कार्यक्रम के बारे में सुना। उन्हों ने पीबीएस का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद अपने क्षेत्र में पीबीएस का आयोजन करना आरंभ किया। पंद्रह वर्ष बाद, 70,000 लोगों को बपतिस्मा दिया जा चुका था।
  - अंतर यह थाः पीबीएस में सिखाये गये साधन का उपयोग करने के द्वारा, उन्होंने लोगों को ऐसे शिष्य बनाना आरंभ किया कि वे उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य की नकल करें। उन्होंने शिष्यों को अयाजकीय पास्टरों के रूप में सुसज्जित करने का काम किया।
- विश्वभर में विस्तारः
  - आज अफ्रीका, भारत तथा एशिया और लैटीन अमेरिका के अनेक देशों में पीबीएस का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

पोर्टेबल बाइबल स्कूल में क्या पढ़ाया जाता है?

- पीबीएस विद्याथियों तथा शिक्षकों के लिये पाठ्यपुस्तकें:
  - बाइबल: परमेश्वर का सत्य वचन हमारे सारे ज्ञान, समझ और मसीह यीशु के शिष्य होने के जीवन के लिये बुनियाद है।
  - चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग: यह विद्यार्थियों के लिये मुख्य पाठ्यपुस्तक है। इसे 1990 में, पीबीएस की एक संस्थापक थेल्मा ब्राउन के द्वारा लिखा गया था। इसमें 200 पाठ है; इन्हें आठ सप्ताह के समय में पढ़ाया जाना होता है।
  - पोर्टेबल बाइबल स्कूल शिक्षक प्रशिक्षण मैन्युअल: यह शिक्षक–प्रशिक्षक तथा प्रशिक्षार्थी के लिये विस्तारपूर्वक बनाई गई मार्गदर्शिका है कि पीबीएस के साहित्य को किस प्रकार पढ़ाया जाना चाहिये। इस में पाठ–योजना के नमूने, चार्ट, तथा पीबीएस कार्यक्रम के संबंध में जानकारी उपलब्ध है।
  - टेन्ट मेकर्स मैन्युअल: यह एक उपयोगी साधन है जो इसलिये बनाया गया है कि युवाओं को प्रशिक्षित करें ताकि वे अपने साथियों को मसीह के लिये जीत सकें और फिर उन्हें शिष्य बनाने वाले होने के लिये तैयार कर सकें। इस छोटी पुस्तिका में लगभग 20 पाठ हैं जो तीन दिनों में पढ़ाये जा सकते हैं। इसे इस सेमिनार में जोड़ा गया है क्योंकि इस में आत्माओं को जीतने के सात कदम दिये गये हैं।

- विषय जो पढ़ाये जाते हैं:
  - बाइबल को कैसे पढ़ाया जाये: बाइबल के प्रत्येक पुस्तक की समीक्षा।
  - मसीही बुनियादी सिद्धातों को कैसे पढ़ाया जाये: मसीही विश्वास से संबंधित दस मूलभूत सिद्धांतों की समीक्षा
  - बाइबल से उपदेश कैसे दिया जाये: उपदेश की तैयारी तथा बनावट (संरचना) कैसे करें इसके संबंध में पांच पद्धतियां।
  - व्यक्तिगत कुशलता: मूलभूत व्यक्तिगत कुशलता के गुण जो कलीसियाओं तथा छोटे समूहों की अपनी–अपनी परिस्थितियों में चरवाही करने के लिये आवश्यक होंगे।
  - पवित्र जीवन: व्यक्तिगत पवित्रता तथा आत्मिक वृद्धि।

मसीही नेतृत्व की कुशलता तथा ज्ञान	''चरवाही करने के लिये बुलाये गये'' इस पाठ्यपुस्तक में दिये गये पाठ	पाठों की संख्या
बाइबल जानना और सिखाना	पुराना नियम की पुस्तकें, नया नियम की पुस्तकें	20 20
बाइबल के सिद्धांत जानना और सिखाना	सिद्धांत	40
उपदेशों की तैयारी करना, उन्हें प्रचार करना	धर्मोपदेशकला	40
कलीसिया की अगुवाई करना, लोगों की देखभाल करना	झुण्ड की चरवाही	40
पवित्र जीवन जीना, वृद्धि करते जाना	पवित्र जीवन	20
अपने डिनॉमिनेशन तथा दूसरे डिनॉमिनेशन के साथ काम करना	डिनॉमिनेशनल संबंध	20
		200 पाठ, कुल मिलाकर

इस पाठ्य–साहित्य पर प्रार्थना कीजिये और परमेश्वर से सहायता मांगिये, जबकि आप योजना बनाते हैं कि इसकी कार्यनीति को कैसे और कहां उपयोग में लायेंगे, ताकि आप इस कार्य को पूरा करने में अपनी भूमिका को पूरा करें।

सत्र 2: 45 मिनट

पाठ्यपुस्तकः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

बाइबल की पुस्तकें

शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापन

रूपरेखाः

क. विभाग का परिचय

ख. आदर्श पाठ

क. ''बाइबल की पुस्तकें'' इस विभाग का परिचय (5 मिनट)

- बाइबल में परमेश्वर अपने गुणों को, अपनी योजना को, और अपनी सृष्टि के लिये अपनी इच्छा को प्रकट करता है।
- बाइबल वह प्रमुख स्रोत है जो परमेश्वर ने हमें दिया है ताकि हम परमेश्वर को जान सकें और उसके लोगों की चरवाही कर सकें।
- परमेश्वर का वचन सत्य है, और यही हम अपने प्रशिक्षार्थियों तथा पीबीएस के विद्यार्थियों को प्रदान करना चाहते हैं।
- पौलुस, एक अनुभवी प्रेरित ने, एक युवा पास्टर तीमुथियुस को 2 तीमुथियुस 2:15 में लिखा, ''अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति

से काम में लाता हो।''

- पीबीएस पाठ्यक्रम के प्रशिक्षक के रूप में, जो प्रशिक्षार्थी हैं उन्हें इस बात को बलपूर्वक बता देना महत्वपूर्ण है कि दूसरों को संपूर्ण बाइबल से सिखाना कितना महत्वपूर्ण है; ''किसी को एक संपूर्ण मसीही बनाया जाये इसके लिये संपूर्ण बाइबल की आवश्यक होती है'' (ए. डब्ल्यु. टोज़र)।

> आदर्श उदाहरण: कल्पना कीजिये कि आप एक ऐसे स्थान में समुद्र यात्रा कर रहे हैं जहां आप कभी नहीं गये थे और आपके पास एक अधूरा ही नक्शा है। उस अधूरे नक्शे के साथ, हो सकता है कि आप पूरी रीति से खो जायें! इसी प्रकार से, यदि हम बाइबल के मात्र कुछ ही हिस्सों को सिखायेंगे तो हमारे विद्यार्थी पथभ्रष्ट हो जायेंगे, भटक जायेंगे। वे परमेश्वर की उद्धार की योजना को पूरी रीति से समझने के योग्य नहीं होंगे।

- पुराना नियम में परमेश्वर के द्वारा मसीह से संबंधित की गई प्रतिज्ञाओं, योजना तथा तैयारी को प्रगट किया गया है।
- नया नियम इन बातों की परिपूर्णता को दिखाता है जो यीशु के जन्म, क्रूस पर चढ़ाये जाने और पुनःरुत्थान में पूरी हुई है।
- संपूर्ण बाइबल एक अति महत्वपूर्ण उद्धार की कहानी है: परमेश्वर मानव के संपूर्ण इतिहास में काम करता आया है कि सारी सृष्टि के लिये उद्धार तथा नवीनीकरण को ले आये।
- पीबीएस पाठ्यक्रम में वे पाठ हैं जो संपूर्ण बाइबल की पुस्तकों की समीक्षा प्रस्तुत करते हैं। इन सब पाठों को पढ़ाया जाना आवश्यक है।

- पीबीएस पाठ्यपुस्तक में, ''बाइबल की पुस्तकें'' इस विभाग के लिये जो ''परिचय'' का परिच्छेद है उसे कक्षा में जोर से पढ़िये।

ख. आदर्श पाठ (40 मिनट)

पाठ 4: लैव्यव्यवस्था, गिनती तथा व्यवस्थाविवरण

- यह आदर्श पाठ एक नमूना प्रस्तुत करता है कि जिस पाठ में बाइबल के एक से अधिक पुस्तकों को लिया गया है उसे कैसे पढ़ाया जाये।
- जब भी हम एक नया पाठ का आरंभ करते हैं, हम प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर से बिनती करते हैं कि वह हमारा सहायक और मार्गदर्शक होवे। नीचे इसका उदाहरण दिया गया है:

> प्रिय प्रभु, जो हम नहीं जानते, वह हमें सिखा; जो हमारे पास नहीं है, वह हमें दे; जो हम नहीं है, वह हमें बना, आमीन।

- ''चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग'' इस पीबीएस पाठ्यपुस्तक के पाठ 4 के प्रथम परिच्छेद को शिक्षक–प्रशिक्षक या कोई एक प्रशिक्षार्थी, या संपूर्ण कक्षा, मिलकर एक साथ पढ़ सकते हैं।
- प्रशिक्षार्थियों का ध्यान उस चार्ट की ओर ले जाइये जिसे आपने कक्षा के पहले ही तैयार कर रखा है। इस चार्ट में पाठ की प्रमुख बातें लिखी हुई होंगी।
- प्रशिक्षार्थियों को समझाइये कि दृश्य–समाग्री बहुत महत्वपूर्ण होती है। इससे आपको पाठ तैयार करने में सहायता होती है, और विद्यार्थियों को भी जो पढ़ाया जाता है उसे समझने और स्मरण रखने में सहायता होती है।
- चार्ट्स को बड़े पेपर पर, ब्लैक–बोर्ड या व्हाईट–बोर्ड पर या पॉवर–पॉईट पर, चाहे जो उपलब्ध हो सके, बनाया जा सकता है।
- अगले पृष्ठ पर इस पाठ के लिये कुछ चार्ट्स के नमूने दिये गये हैं।

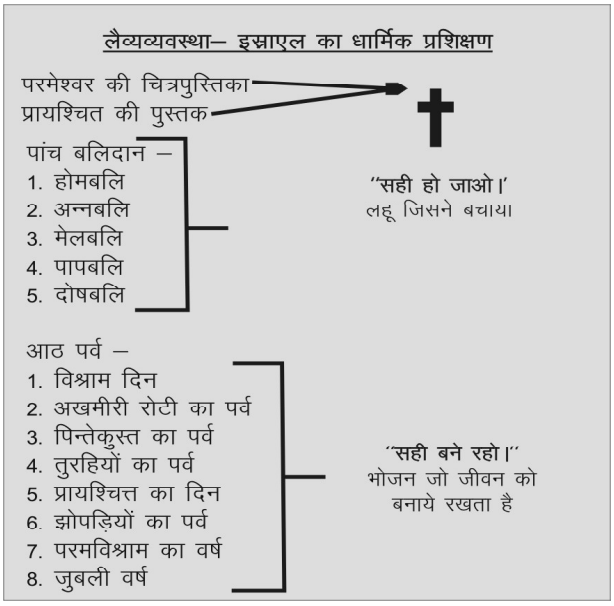

लैव्यव्यवस्था के लिये पाठ का नमूना

- एक प्रशिक्षार्थी को, "चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग" इस पुस्तक के पाठ 4 से लैव्यव्यवस्था के लिये दिया गया भाग पढ़ने कहिये ।
- इस हिस्से के लिये बनाये गये चार्ट को दिखाइये।
- चार्ट की सहायता से लैव्यव्यवस्था की समीक्षा प्रस्तुत कीजिये।
- पाठ के प्रमुख बिन्दुओं को समझाइये या उस हिस्से से प्रश्न पूछिये।
- उदाहरण के लिये, प्रशिक्षार्थियों से कहिये कि लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में पाये जाने वाले पांच बलिदानों को ऊंची आवाज में बतायेंगे।
- आप, सारांश के रूप में, कह सकते हैं, "लैव्यव्यवस्था से हमें यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि हमारे आत्मिक प्रशिक्षण के लिये हमें परमेश्वर के साथ "सही हो जाने" की आवश्यकता है, और हमें परमेश्वर के साथ "सही बने रहने" की भी आवश्यकता है।

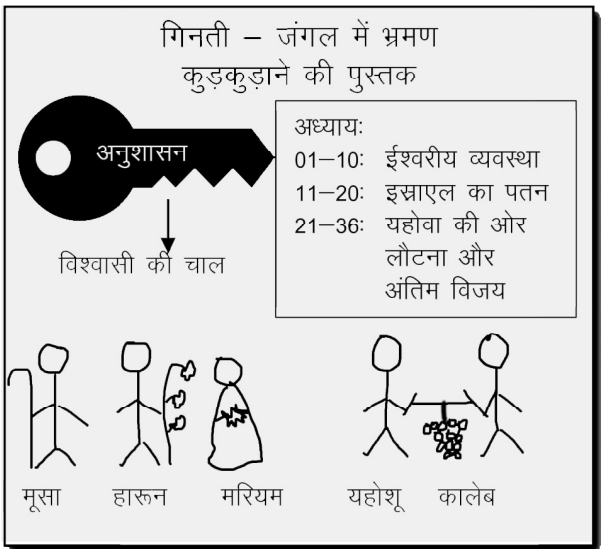

गिनती के लिये पाठ का नमूना

- एक प्रशिक्षार्थी को पाठ 4 से गिनती के लिये दिया गया भाग पढ़ने कहिये।
- इस हिस्से के लिये बनाये गये चार्ट को दिखाइये।
- चार्ट की सहायता से गिनती इस पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत कीजिये।
- पाठ के प्रमुख बिन्दुओं को समझाइये अथवा उस हिस्से से प्रश्न पूछिये।
- आप, सारांश के रूप में, कह सकते हैं, "क्या आप चार्ट पर दिखाये गये प्रत्येक व्यक्ति के संबंध में एक वाक्य का परिचय बता सकते हैं? इन में से किस व्यक्ति के चरित्र की प्रशंसा आप सब से अधिक करते हैं? क्यों?"

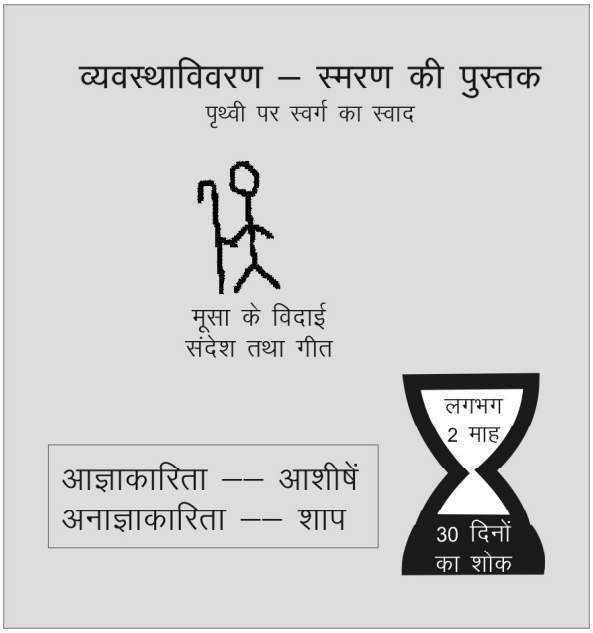

व्यवस्थाविवरण के लिये पाठ का नमूना

- एक प्रशिक्षार्थी को पाठ 4 से व्यवस्थाविवरण के लिये दिया गया भाग पढ़ने कहिये।
- इस हिस्से के लिये बनाये गये चार्ट को दिखाइये।
- चार्ट की सहायता से व्यवस्थाविवरण इस पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत कीजिये।
- पाठ के प्रमुख बिन्दुओं को समझाइये अथवा उस हिस्से से प्रश्न पूछिये।
- ध्यान दिजिये कि पाठ 4 के अंत तक, प्रशिक्षार्थियों ने बाइबल की प्रथम पांच पुस्तकों के प्रमुख बातों को सीख लिया होगा। यह अच्छा अवसर होगा कि उन्होंने क्या सीखा है इस का पुनरावलोकन कर लें।

पाठ 4 का पुनरावलोकन

- चार्ट की सहायता से, पाठ 4 के अंत में दिये गये पुनर्विचार को समझाइये।
- लैव्यव्यवस्था, गिनती तथा व्यवस्थाविवरण के लिये दिये गये पाठ के नमूने को पूरा करने के बाद, एक आह्वान के साथ समाप्त कीजिये। उदाहरण के लियेः

आज, यीशु के बलिदान ने परमेश्वर के साथ ''सही हो जाने'' में हमारी सहायता की है। अब, विश्वासियों के रूप में, हमें हमारे चालचलन में ''सही बने रहने'' की आवश्यकता है। आवश्यक है कि हम परमेश्वर के वचन के अनुसार अनुशासित रहें। आवश्यक है कि हम आज्ञाकारी बने रहें। आप प्रभु के साथ के अपने चालचलन में किस प्रकार ''सही बने हुये'' हैं? भविष्य में पोर्टेबल बाइबल स्कूल्स के पाठ्यक्रम के प्रशिक्षक होने के नाते, आप अपने जीवन को किस प्रकार व्यवस्थित कर रहे हैं कि परमेश्वर के वचन बाइबल के प्रति आज्ञाकारिता के अनुशासन में बने रहेंगे?

- समर्पण की प्रार्थना में अगुवाई कीजिये।

पुनरावलोकन के लिये चार्ट

- उत्पत्ति में, हम मनुष्य को बिगड़ा हुआ देखते हैं;
- निर्गमन में, हम मनुष्य को उद्धार किया गया देखते हैं;
- लैव्यव्यवस्था में, हम मनुष्य को आराधना करता हुआ देखते हैं;
- गिनती में, हम मनुष्य को सेवा करता हुआ देखते हैं;
- व्यवस्थाविवरण में, हम मनुष्य को आज्ञा मानना सीखता हुआ देखते हैं।

- जब भी संभव हो और समय मिले, शिक्षक–प्रशिक्षक प्रत्येक पाठ को प्रशिक्षार्थियों के जीवन में व्यक्तिगत लागूकरण करते हुये समाप्त करें।
- यह लागूकरण प्रार्थना हो सकती है, उपयुक्त गीत, प्रोत्साहन, गवाही का समय हो सकता है अथवा अपनी डायरी में कोई व्यक्तिगत समर्पण लिखा जा सकता है।
- प्रशिक्षार्थियों को प्रोत्साहन दीजियेः हम सब शिक्षक हैं और हम सब विद्यार्थी भी हैं। आइये हम समर्पित रहें कि जब हम सिखाते हैं तब, और जब हम सीखते हैं तब भी, हम परमेश्वर की आवाज को सुनें और जो कुछ वह हम से करने कहता है उसे हां कहें।

सत्र 3: 45 मिनट

पाठ्यपुस्तकः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

बाइबल की पुस्तकें

समूहों में अध्ययन

रूपरेखाः

क. प्रत्येक समूह इस विभाग से एक पाठ का अध्ययन करता है

ख. प्रत्येक समूह प्रस्तुत करने के लिये उस पाठ पर चार्ट बनाता है

समूहों में अध्ययन करने के लिये तैयारी

- कक्षा को समूहों में बांट लीजिये, प्रत्येक समूह में चार से अधिक प्रशिक्षार्थी ना हो।
- यदि संभव हो तो 10 समूहों/जोड़ियों में विभाजित कीजिये ताकि आप इस विभाग के 40 पाठों में से 10 का अध्ययन कर सकेंगे।
- प्रत्येक समूह/जोड़ी को एक पाठ निर्धारित कर दीजिये।
- हम नीचे दिये गये 10 पाठ चुनने का सुझाव देते हैं जो एकसाथ मिलकर संपूर्ण बाइबल का एक उपयुक्त सारांक्ष प्रस्तुत करेंगेः

- भाग एक – पुराना नियम की पुस्तकें: पाठ 2 उत्पत्ति, पाठ 3 निर्गमन, पाठ 6 पहला और दूसरा शमूएल, पाठ 11 भजन संहिता और पाठ 13 यशायाह
- भाग दो – नया नियम की पुस्तकें: पाठ 22 मत्ती, पाठ 25 यूहन्ना, पाठ 26 प्रेरितों के काम, पाठ 27 रोमियों, और पाठ 39 तथा पाठ 40 (एकसाथ) प्रकाशितवाक्य और प्रकाशितवाक्य की रूपरेखा

- यदि प्रशिक्षार्थियों की संख्या इतनी नहीं है कि 10 पाठ पूरे किये जा सके, तो पुराना नियम और नया नियम दोनों भागों से बराबर की संख्या में पाठों का चुनाव कीजिये।
- प्रत्येक समूह को पाठ का अध्ययन करने के लिये कम–से–कम 20 मिनट दीजिये तब उसके बाद उन्हें अपने पाठ के लिये चार्ट बनाने की सामग्री दीजिये।
- प्रशिक्षार्थियों को निर्देश दीजिये कि वे अपने समय का उत्तम उपयोग कैसे कर सकते हैं।

सत्र 4: 150 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

बाइबल की पुस्तकें

समूह प्रस्तुतिकरण

उद्देश्य:

क. समूहों में अध्ययन किये गये प्रत्येक पाठ का प्रस्तुतिकरण

ख. प्रत्येक पाठ पर परस्पर विचार

ग. प्रत्येक पाठ पर आत्मिक प्रोत्साहन

क. समूहों में अध्ययन किये गये पाठ का प्रस्तुतिकरण

- प्रत्येक समूह को पाठों के क्रम के अनुसार आमंत्रित कीजिये कि अपने पाठ तथा चार्ट को प्रस्तुत करेंगे। प्रत्येक प्रस्तुति मात्र 4 मिनट की होगी। सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रोत्साहित कीजिये कि छः दिनों के प्रशिक्षण में, कम–से–कम एक बार कक्षा के समक्ष बोलें, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को पाठ सिखाने का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हो।

ख. प्रत्येक पाठ पर कक्षा में परस्पर विचार

- प्रत्येक समूह के द्वारा प्रस्तुतिकरण किये जाने के बाद, कक्षा के द्वारा पाठ पर प्रतिसाद देने के लिये 4 मिनट का समय दीजिये। आप पाठ पर कुछ प्रश्न पूछ सकते हैं अथवा मूख्य बातों को समझा सकते हैं।

ग. पाठ से आत्मिक प्रोत्साहन

- प्रत्येक प्रस्तुति की समाप्ति पर, प्रत्येक पाठ से एक बात को चुन लीजिये कि उस पर कोई प्रोत्साहन या आत्मिक शिक्षा दी जाये। इस विभाग का समापन प्रार्थना, गीत या किसी चिंतनशील प्रयोग के साथ कीजिये। सुझाये गये पाठों के लिये विभिन्न आत्मिक प्रोत्साहन प्राप्त करने के लिये परिशिष्ट ''ए'' को देखिये।

विभाग एक का समापन: बाइबल की पुस्तकें

- सारे समूहों का प्रस्तुतिकरण हो जाने के बाद, शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा, परमेश्वर के मिशनरी स्वभाव तथा उसकी सारी सृष्टि के लिये उद्धार की योजना पर जोर देते हुये, संपूर्ण बाइबल की समीक्षा को प्रस्तुत किया जाये।
- नीचे समापन के दो नमूने दिये गये हैं। किसी एक को चुन लीजिये या पवित्र आत्मा की अगुवाई में अपनी ओर से कुछ तैयार कीजिये।

समापन का नमूना – 1

उत्पत्ति की पुस्तक	प्रकाशितवाक्य की पुस्तक
1. सूर्य की सृष्टि	1. सूर्य नहीं (परंतु यीशु मसीह)
2. संसार में पाप का प्रवेश,	2. पाप निकाल दिया जाएगा,
3. शाप दिया जाना,	3. शाप का अन्त किया जाएगा,
4. शैतान की विजय,	4. शैतान की हार होगी,
5. जीवन के वृक्ष के पास से निकाल दिया जाना ।	5. जीवन के वृक्ष के पास प्रवेश दिया जायेगा ।

- उत्पत्ति और प्रकाशितवाक्य पर दिये गये उपरोक्त तुलनात्मक चार्ट्स का उपयोग करते हुये, संपूर्ण बाइबल को सिखाने की आवश्यकता पर जोर दिया जा सकता है।
- हमारे उद्धार हेतु परमेश्वर द्वारा की गई योजना के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करने में कक्षा की अगुवाई कीजिये।
- प्रशिक्षार्थियों पर इस संपूर्ण बाइबलीय वर्णन का क्या प्रभाव हुआ है इस पर चर्चा कीजिये।
- यदि समय है तो प्रशिक्षार्थियों को अपने–अपने विचार बताने का अवसर दीजिये।

समापन का नमूना – 2

- इन पाठों के द्वारा हम अति महत्वपूर्ण बाइबलीय वृत्तांत को, मानव इतिहास में परमेश्वर के द्वारा की गई उद्धार की योजना के रूप में देखना आरंभ करते हैं।
    - उत्पत्ति में हम हमारे उद्धार के लिये की गई प्रतिज्ञाओं और तैयारी को देखते हैं।
    - निर्गमन में हम मसीह के बलिदान के चित्र को देखते हैं।
    - पहले और दूसरे शमूएल में हम दाऊद के घराने को मसीह के जन्म के लिये चुना गया देखते हैं।
    - मत्ती में हम देखते हैं कि उद्धारकर्ता इस जगत में हमारे मध्य परमेश्वर के रूप में आया।
    - प्रेरितों के काम में हम देखते हैं कि परमेश्वर अपने लिये अपने लोग अर्थात् कलीसिया बना रहा है।
    - रोमियों में हम परमेश्वर के उद्धार की योजना को पढ़ते हैं।
    - और अंततः, प्रकाशितवाक्य में हम उद्धार को पूरा होता हुआ देखते हैं।
- यह बाइबल के संपूर्ण वृत्तांत का संक्षिप्त चित्र है। यह हमारे उद्धार का चित्र है। यह परमेश्वर की योजना है और यह पूरी की जायेगी।
- हमारे पास जो मूख्य प्रश्न बचता है वह यह है कि इस अति महत्वपूर्ण बाइबल वृत्तांत में हमारी भूमिका क्या है? हमारी बुलाहट क्या है?
- कक्षा को विचार करने तथा प्रार्थना करने में अगुवाई कीजिये।

सत्र 5: 50 मिनट

पाठ्यपुस्तकः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

धर्मोपदेशकला

शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापन

रूपरेखाः

क. विभाग का परिचय

ख. प्रथम पांच पाठ

पीबीएस पाठ्यपुस्तक से निम्नलिखित बिन्दुओं को सिखाइये

क. विभाग का परिचय

- ''धर्मोपदेशकला'' इस विभाग के लिये दी गई प्रस्तावना से आरंभ कीजिये।
- उपदेश के प्रत्येक प्रकार के साथ उसकी तैयारी और प्रस्तुतिकरण के लिये दिये जाने वाले समय के महत्व को बताइये।
- पहले पांच दिनों के लिये दिये गये मुख्य विषय बताइयेः
- चार्ट बनाइये जिसमें उपदेश की रूपरेखा को दिखाया गया हो।
- चार्ट की सहायता से पढ़ाइये।

ख. प्रथम पांच पाठ

- निम्नलिखित पाठ पढ़ाइयेः
  - पाठ 1ः उपदेश क्या है?
  - पाठ 2ः उपदेश का मूल–पाठ
  - पाठ 3ः उपदेश का विषय
  - पाठ 4ः उपदेश की सामग्री को एकत्रित करना
  - पाठ 5ः उपदेश की सामग्री को क्रमबद्ध करना

<u>सत्र 6 40 मिनट</u>

पाठ्यपुस्तकः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

धर्मोपदेशकला

समूह कार्य

रूपरेखाः

क. प्रत्येक समूह उसे सौंपे गये पाठ का कार्य पूरा करेगा

ख. प्रत्येक समूह अपना काम संपूर्ण कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करेगा

क. समूह में अभ्यास–कार्य

- कक्षा को पांच समूहों में बांट दीजिये और प्रत्येक समूह को उसे दिये गये पाठ का कार्य पूरा करने कहीये। अभ्यास–कार्य ''चरवाही djusdsfy;scyk,sx;sijes श्वर के लोग'' इस पुस्तक में दिया गया है और ''अभ्यास–कार्य'' या ''चर्चा'' इस शीर्षक से दर्शाया गया है।
- समूहों को अपना कार्य पूरा करने के लिये 15–20 मिनट का समय दीजिये।

ख. समूह प्रस्तुतिकरण

- प्रत्येक समूह एक व्यक्ति को चुन लेगा कि वह समूह के कार्य को कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करे।
- प्रत्येक समूह को कार्य प्रस्तुत करने के लिये 2 मिनट का समय मिलेगा।
- जब सारे समूह अपना प्रस्तुतिकरण पूरा कर लेते हैं तब शिक्षक–प्रशिक्षक अपना प्रतिसाद/अपनी जानकारी प्रस्तुत करेगा।

शिक्षक प्रशिक्षण सेमिनार के पहले दिन का समापन

- शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा, पहले दिन में सीखी गई बातों का सारांश प्रस्तुत किया जायेगा।
- प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाया जाये कि दूसरे विभाग के लिये तैयार होकर आयेंगे।
- प्रार्थना, आराधना, प्रोत्साहन या समर्पण के साथ समापन कीजिये।

विभाग दो

सत्र 1: 60 मिनट

पाठ्यपुस्तक: पोर्टेबल बाइबल स्कूल शिक्षक प्रशिक्षण सेमिनार

प्रशिक्षण रूपरेखा

विभाग दो का आरंभ आराधना और प्रार्थना के साथ कीजिये (15 मिनट)

पुनरावलोकन प्रश्नोत्तरी खेल (10 मिनट):

- कक्षा को दो समूहों में विभाजित कीजिये। बताइये कि विभाग 2 से 5, प्रश्नोत्तरी के खेल के साथ आरंभ होते जायेंगे जिसके द्वारा पीछले दिन सीखी गईं बातों का पुनरावलोकन किया जायेगा।
- प्रश्नोत्तरी खेल का उद्देश्य पीछले दिन सीखी गईं बातों का पुनरावलोकन करना और कक्षा में प्रोत्साहनात्मक तथा मैत्रीपूर्ण प्रतिस्पर्धा का और अध्ययन के लिये साझेदारी का वातावरण निर्माण करना है।
- आप परिशिष्ट ''बी'' में पाये जाने वाले प्रश्नों का उपयोग कर सकते हैं या स्वयं अपने प्रश्न बना सकते हैं।
- खेल के लिये नीचे दिये गये नियमों को समझाइये:

पुनरावलोक प्रश्नोत्तरी खेल नियम

तैयारी: शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वार 10 प्रश्न तैयार किये जाते हैं जो पीछले दिन सीखे गये पाठों पर आधारित होते हैं। प्रत्येक प्रश्न जिस प्रकार से कठिन या सरल होगा उसे देखते हुये उसके लिये 1 से 5 अंक ठहराये जाते हैं। आपके पास सुविधा होनी चाहिये कि आप समूहों को मिलने वाले अंकों को व्हाइट–बोर्ड पर या ब्लैक–बोर्ड या पेपर पर लिख सकें ताकि सब उसे देख सकें।

नियम 1: सब प्रशिक्षार्थियों को अपने नोट्स को अलग रखना होगा।

नियम 2: एक समूह से प्रश्न पूछा जायेगा और उत्तर प्रस्तुत करने के लिये 1 मिनट का समय दिया जायेगा।

नियम 3: यदि वह समूह गलत उत्तर देता है तो दूसरे समूह को सही उत्तर देने का अवसर दिया जायेगा।

नियम 4: एक–एक समूह को बारी–बारी से प्रश्न पूछा जायेगा।

नियम 5: जो समूह सही उत्तर देगा उसे अंक दिये जायेंगे।

नियम 6: शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा प्रत्येक समूह को प्रतिदिन प्राप्त होने वाले अंक लिखकर रखे जायेंगे ताकि विभाग पांच के अंत में सब अंकों को मिलाकर विजेता होने वाले समूह की घोषणा की जाये।

प्रशिक्षण रूपरेखा का अध्यापन

- आठ सप्ताह के पोर्टेबल बाइबल स्कूल्स की रूपरेखा किस के लिये तैयार की गई है?
  - आठ सप्ताह के पीबीएस की रूपरेखा अयाजकीय पास्टरों, स्त्री–पुरुषों दोनों, के लिये तैयार की गई है। इन लोगों को ''उप–चरवाहे'' कहा जा सकता है क्योंकि वे सेमीनरी से प्रशिक्षित पास्टरों या अगुवों के स्थान पर काम करते हैं।
  - ये अयाजकीय अगुवे कलीसिया के डीकन (उपयाजक या सेवक) या प्राचीनों के बराबर होते हैं, जैसे कि 1 तीमुथियुस 3:1–12

और तीतुस 1:5–9 में वर्णन किया गया है।

- यह मैन्युअल छः दिनों के शिक्षक प्रशिक्षण सेमिनार के लिये है जिसमें प्रशिक्षार्थियों को ऐसी पद्धतियां और साधन उपलब्ध कराये जाते हैं जिसके द्वारा वे आठ सप्ताह का पीबीएस प्रशिक्षण देने योग्य शिक्षकों को तैयार कर पायेंगे।

- आठ सप्ताहों का पीबीएस और छः दिनों का शिक्षक प्रशिक्षण सेमिनार दोनों ऐसे वयस्कों के लिये हैं जिन्हें परमेश्वर की बुलाहट मिली है, जो विश्वास में परिपक्व हैं, और जो निरंतर ईश्वरीय चाल–चलन का जीवन जीते हैं।
- आगे दिया गया चार्ट दिखाइयेः

आठ सप्ताहों के पीबीएस और छः दिनों के शिक्षक प्रशिक्षण सेमिनार में भाग लेने वालेः

1. इन्हें यह गहरा एहसास होना चाहिये कि परमेश्वर उन्हें अपनी विशिष्ट सेवकाई में बुला रहा है।
2. ये कलीसिया के अगुवों के द्वारा ऐसे जाने जाते हों कि परमेश्वर के द्वारा प्रभावी रीति से उपयोग में लाये जाने योग्य हैं।
3. ये अवश्य ही ऐसे हों जो अपने ही स्थान/परिस्थिति में के लोगों के द्वारा चुने गये हैं।

- अयाजकीय अगुवों के द्वारा कलीसियाओं या छोटे समूहों की अगुवाई करना यह कैसे तर्कपूर्ण या व्यावहारिक है?
  - उनके पास विशिष्ट रीति से अपनी नौकरी और/या परिवार की जिम्मेवारियां होती हैं।
    - यह कोई बाधा नहीं है परंतु ताकत है।
    - अयाजकीय अगुवे अपने ही समुदाय और परिस्थिति में प्रशिक्षित किये जाते हैं और वे विशिष्ट रीति से अपने ही समुदाय में बने रहेंगे क्योंकि उनके पास वहीं पर अपनी नौकरी और/या परिवार की जिम्मेवारियां होती हैं। इससे यह संभव होता है कि मसीह की देह को वहीं पर बनाया/बढ़ाया जाये जहां पर काम हो रहा है।
- अयाजकीय अगुवें अपने आसपास पीबीएस से प्रशिक्षित लोगों की टीम रख सकते हैं ताकि कलीसियाओं या छोटे समूहों की अगुवाई करने में उनका साथ दे सके।
  - फिर से, यह कोई बाधा नहीं परंतु ताकत है। हमारी बुलाहट मात्र मसीह के प्रति ही नहीं है परंतु विश्वासियों के समुदाय के प्रति भी है।
    - पवित्र शास्त्र हमें, अर्थात् विश्वासियों के समुदाय को, मसीह की देह कहता है।
    - मसीह की देह एक दूसरे को सुदृढ़ करती है कि मसीह के कार्य को आनंदित नम्रता की मनोवृत्ति के साथ करते रहें।
    - मसीह की देह एक दूसरे को पवित्र जीवन में प्रोत्साहित करती है।
    - मसीह की देह अपनी विभिन्न गतिविधियों में एकजुट रहती है, और ऐसे लोगों का समुदाय बनी रहती है जो अपने सिर मसीह में होकर औरों तक पहुंचते हैं।
- एक अयाजकीय अगुवे के पास वह सब कुछ करने की क्षमता नहीं होती है जो एक पूर्णकालीन पेशेवर पास्टर कर सकता है।
- हम सुझाव देते हैं कि पीबीएस से प्रशिक्षित टीम में नेतृत्व के पांच विभिन्न ''केन्द्रीयकरण'' होने चाहियेः

पीबीएस से प्रशिक्षित अयाजकीय टीम में नेतृत्व का केन्द्रीयकरण

1. एक जन प्रचार करने में केन्द्रित रहे।
2. एक जन झुंड की चरवाही करने में केन्द्रित रहे।
3. एक जन बालकों और युवाओं को सिखाने में केन्द्रित रहे।
4. एक जन कलीसिया के सामग्री की देखभाल करने में केन्द्रित रहे।
5. एक जन सुसमाचार प्रचार द्वारा विस्तार करने में केन्द्रित रहे।

- **पीबीएस प्रशिक्षित अयाजकीय अगुवे के 22 गुणविशेश**
  - पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीही अगुवे में आवश्यक होने वाले गुणों पर चर्चा कीजिये।
  - एक प्रशिक्षार्थी को 1 तीमुथियुस 3:1–12 और दूसरे को तीतुस 1:5–9 पढ़ने कहिये।
  - नीचे दिये गये 22 गुणविशेषों की सूची प्रस्तुत कीजिये। इसे आप चार्ट के रूप में या अलग से पेपर पर लिखकर वितरीत कर सकते हैं।

इन भाास्त्रभागों के अनुसार, मसीह–के–समान होने वाला अगुवा ऐसे होता है

1. निर्दोष,
2. एक ही पत्नी का पति,
3. संयमी,
4. सुशील,
5. सभ्य,
6. पहुनाई करनेवाला,
7. सिखाने में निपुण
8. पियक्कड़ नहीं
9. मारपीट करनेवाला नहीं
10. कोमल
11. झगड़ालू नहीं
12. लोभी नहीं
13. अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो
14. लड़केबालों को सारी गम्भीरता से अधीन रखता हो
15. नया चेला (विश्वास में परिपक्व) न हो
16. बाहरवालों में सुनाम
17. संयमी
18. गम्भीर
19. न्यायी
20. नीच कमाई का लोभी न हो
21. विश्वास के वचन पर स्थिर रहने वाला हो
22. पहले परखा जाए कि निर्दोष निकले

- **आठ सप्ताह के पीबीएस के चार लक्ष्यः**
  - 1. विद्यार्थी, एक पास्टर के मूलभूत कर्तव्यों में कुशल हो जायेंगे।
  - 2. विद्यार्थी बाइबल की सर्वसामान्य विषय–वस्तु को जान लेंगे।
  - 3. विद्यार्थी बाइबल के मूलभूत सिद्धांतों को जान लेंगे और समझ लेंगे।
  - 4. विद्यार्थी पवित्रशास्त्र तथा सिद्धांतों को स्पष्टता से बता पायेंगे।

- **पीबीएस से प्रशिक्षित (ग्रेज्यूएट्स) अयाजकीय अगुवे में विकसित सात कुशलताएंः**
  - 1. ग्रेज्यूएट्स सिखाने में कुशल होंगे
  - 2. ग्रेज्यूएट्स उपदेश का प्रचार करने में कुशल होंगे
  - 3. ग्रेज्यूएट्स सुसमाचार प्रचार करने में कुशल होंगे
  - 4. ग्रेज्यूएट्स आराधना की अगुवाई करने में कुशल होंगे
  - 5. ग्रेज्यूएट्स प्रार्थना समूह चलाने में कुशल होंगे
  - 6. ग्रेज्यूएट्स मसीह यीशु के प्रति व्यक्तिगत समर्पण प्रगट करने में कुशल होंगे
  - 7. ग्रेज्यूएट्स, न मात्र विश्वासियों के प्रति परंतु अविश्वासियों तथा संपूर्ण समाज के प्रति, मसीह केंद्रित सेवकाई प्रदर्शित करेंगे।

- **आठ सप्ताह के पीबीएस कार्यक्रम की कार्यनीति**
  - ''सात ''इ'' कार्यनीतियां'' लिखा हुआ चार्ट दिखाइये अथवा पेपर पर लिखकर वितरीत कीजिये। इससे आठ सप्ताह के पीबीएस कार्यक्रम का एक ''बड़ा चित्र'' प्रस्तुत होगा। (ये सात कार्यनीतियां अंग्रेजी में ''इ'' शब्द से आरंभ होती है इसलिये इन्हें ''इ'' कार्यनीतियां कहा गया है।) नोटः यह एक ''आदर्श'–नमूना' है कि पीबीएस को कैसे चलाया जाना चाहिये। कभी–कभी, विभिन्न परिवेश में, इसे स्थिति के अनुरूप बनाया जाना आवश्यक हो जाता है।

आठ सप्ताह के पीबीएस कार्यक्रम की कार्यनीति की ''सात ''इ'' कार्यनीतियां''

1. पता लगाना: (Enquire) – स्थानीय क्षेत्र का सर्वेक्षण किया जाता है और वहां की आत्मिक दशा को जानने के लिये दलों को भेजा जाता है ताकि उपयुक्त आंकड़ों को एकत्रित किया जाये। दल वहां जाकर उस क्षेत्र पर प्रार्थना करते हैं जहां पोर्टेबल बाइबल स्कूल को चालाया जायेगा।

2. प्रचार करना: (Evangelize) – सुसमाचार प्रचारकों के दल उस सर्वेक्षण किये गये क्षेत्र में भेजे जाते हैं। प्रत्येक दल को कुछ खास स्थान सौंपे जाते हैं कि पीबीएस आरंभ करने के पहले, एक या दो माह के समय में वहां सुसमाचार प्रचार करें। कुछ खास स्थानों में, सुरक्षा की बातों को देखते हुये विशिष्ट सतर्कता की आवश्यकता होगी।

3. स्थापित करना: (Establish) – एक घरेलू कलीसिया या छोटे समूह को स्थापित किया जाता है और नये विश्वासियों में से एक को समूह की अगुवाई करने के लिये चुना जाता है ताकि वह आने वाले दिनों में पीबीएस में प्रशिक्षण लेगा। प्रार्थना तथा बाइबल अध्ययन के नियमित समयों को ठहराया जाता है।

4. प्रशिक्षित करना: (Equip) – पीबीएस के लिये एक केंद्रिय स्थान चुना जाता है। तीन शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है और पीबीएस में अध्ययन करने के लिये अधिकतम 42 विद्यार्थियों को चुना जाता है कि आठ सप्ताह के समय में कक्षा में आकर 200 घंटों की पढ़ाई को पूरा करने हेतु समर्पित होंगे।

5. विस्तार करना: (Expand) – पीबीएस पूण होने पर, ग्रेज्यूएट्स अपने स्थानीय क्षेत्रों और घरेलू कलीसियाओं में या छोटे समूहों में लौटते हैं और अयाजकीय पास्टर के रूप में सेवाकार्य आरंभ करते हैं। ये अयाजकीय पास्टर अपनी कलीसियाओं या समूहों से कम–से–कम पांच सदस्यों को चुनते हैं कि उनके साथ अयाजकीय अगुवाई के दल में शामिल हों। ये दल आसपास के क्षेत्रों में सुसमाचार प्रचार करने जाते रहते हैं और वहां घरेलू कलीसियाओं या छोटे समूहों की स्थापना करते हैं।

6. मूल्यांकन करना: (Evaluate) – क्षेत्रीय निरीक्षक के द्वारा–भेंट करना, प्रार्थना करना, सुधारना, तथा साहित्य के द्वारा–अयाजकीय पास्टर के साथ नियमित मूल्यांकन किया जाता है। ग्रेज्यूएट होने के पहले छः महिनों में, अवश्य है कि क्षेत्रीय निरीक्षक प्रत्येक पीबीएस ग्रेज्यूएट से कम–से–कम तीन बार भेंट करें और मूल्यांकन करें। इसके बाद क्षेत्रीय निरीक्षक को प्रत्येक वर्ष एक बार पीबीएस ग्रेज्यूएट से भेंट करनी चाहिये।

7. प्रोत्साहित करना: (Encourage) – हम सुझाव देते हैं कि जो मसीही सेवकाई में कार्यरत हैं उनके जीवन में एक सलाहकार होना चाहिये जो उन्हें प्रभु में बढ़ने का, सेवकाई में प्रभावी होने का और व्यक्तिगत जबाबदेही निभाने का अनुशासन लगाएगा।

सत्र 2: 45 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

पवित्र जीवन

शिक्षक प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापन

रूपरेखा:

क. विभाग का परिचय

ख. आदर्श पाठ

जबकि आज हमारा विभाग दो में सत्र 2 है, परंतु हम पीबीएस पाठ्यपुस्तक के विभाग 5, ''पवित्र जीवन'' की ओर जाते हैं। आज हम ने सत्र 1 में मसीही अगुवे की विशेषताओं या मनोवृत्ति के संबंध में सीखा है, यह बात हमें पवित्र जीवन पर की शिक्षा से जोड़ती है।

क. ''पवित्र जीवन'' इस विभाग का परिचय (5 मिनट)

- सभी मसीहियों को पवित्रता का जीवन जीने की बुलाहट दी गई है।
- यह पीबीएस प्रशिक्षण का सब से महत्वपूर्ण विभाग है।
- मत्ती 12:34 को दर्शाने वाले चार्ट को दिखाइये। हम यहां पर एक चार्ट दे रहे हैं जिसे आप भी बना सकते हैं।
- प्रशिक्षार्थी परमेश्वर के राज्य के लिये जो कार्य करने जा रहे हैं उसके महत्व को जोर देकर बताइये।
- उन्हें स्मरण दिलाइये कि पवित्रता का जीवन जीना यह परमेश्वर के दयापूर्ण प्रेम के प्रति सच्चा भक्तिपूर्ण प्रतिउत्तर है (रोमियों 12:1)।
- और फिर भी, ''टेढ़े और हठीले संसार में'' (फिलिप्पियों 2:15) पवित्र जीवन जीना चुनौतीपूर्ण हो सकता है जब कि ''इस संसार का ईश्वर'' (2 कुरिंथियों 4:4) नाश, अनैतिकता और बरबादी करने में लगा हुआ है।
- विश्वासियों के समूदाय के रूप में हम स्थिर खड़े रह सकते हैं और ''हर एक बयार से उछाले, और इधर–उधर घुमाए'' ना जाकर इसके विपरीत यीशु मसीह में दृढ़ होकर अपनी ''वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़'' सकते हैं (इफिसियों 4:14; इब्रानियों 12:1)।

ख. पाठ का नमूना (40 मिनट)

पाठ 6: अलगाव

- यह पाठ शिक्षक प्रशिक तथा प्रशिक्षार्थी दोनों को चुनौती देता है कि अपने भीतरी जीवन तथा बाहरी क्रियाओं का परीक्षण करें।
- पढ़ाने के पहले आवश्यक सामग्री तैयार कर लीजिये।
- नीचे ''अलगाव'' से संबंधित एक अनुभवकारी क्रियाकलाप के लिये निर्देश दिये गये हैं।

''अलगाव'' से संबंधित एक अनुभवकारी क्रियाकलाप के लिये निर्देश

तैयारी:

1. दो रंगों के पेपर को छोटे–छोटे टुकड़ों में काट लीजिये। संभव हो तो दो में से एक पेपर सफेद लीजिये।
2. दोनो रंगों के टुकड़ों को मिला लीजिये।
3. इस मिले हुये टुकड़ों को 10 छोटे पेपर के प्यालों में विभाजित कर लीजिये।

''अलगाव'' से संबंधित एक अनुभवकारी क्रियाकलाप के लिये निर्देश (पिछले पृष्ठ से आगे)

क्रियाकलापः

1. पवित्र जीवन का विषय तथा उसका महत्व बताने के बाद, शिक्षक–प्रशिक्षक प्रशिक्षार्थियों को 10 समूह में विभाजित कर ले।
2. दो जनों के द्वारा उस क्रियाकलाप का उदाहरण प्रस्तुत करते हुये आवश्यक निर्देश बता दीजिये।
3. लक्ष्य यह होगा कि दो रंगों के टुकड़ों को ऐसे अलग करें कि प्याले में सफेद रंग के टुकड़े रह जायें। तथापि, एक समय में एक ही प्रशिक्षार्थी, अपने हाथ की मात्र दो ही उंगलियों का उपयोग करते हुये, एक बार में एक ही टुकड़ा प्याले से बाहर निकालेगा।
4. निकाले हुये टुकड़ों को प्रशिक्षार्थी अपनी मेज पर रखेंगे।
5. शिक्षक–प्रशिक्षक ''निकालना'' यह शब्द कहते हुये क्रिया को आरंभ करने का संकेत देंगे। 3 से 5 सेकंड्स के बाद ''अगला'' यह शब्द कहेंगे जिसका अर्थ होगा कि प्रत्येक समूह में टुकड़े निकालने वाला व्यक्ति रुक जायेगा और अगला व्यक्ति टुकड़े निकालना आरंभ करेगा।
6. इन निर्देशों को समझा देने के बाद, प्रत्येक समूह में एक पेपर का प्याला दे दीजिये जिसमें रंगिन टुकड़े होंगे। तब 'निकालना'' यह शब्द कहते हुये क्रिया को आरंभ करने का संकेत दीजिये और 3 से 5 सेकंड्स के बाद ''अगला'' यह शब्द कहते जाइये।
7. कुछ समय तक ''अगला,'' ''अगला,'' ''अगला'' कहने के बाद ''समाप्त'' कह कर रोक दीजिये।
8. प्रशिक्षार्थियों को पूछिये कि क्या उनके प्यालों में मात्र सफेद रंग के टुकड़े रह पाये हैं या अभी भी कुछ रंगीन टुकड़े छुटे हुये हैं?
9. प्यालों और टुकड़ों को जमा कर लीजिये।

- इस क्रियाकलाप को पूरा कर लेने के बाद, उसका पाठ 6 से संबंध जोड़िये।
- प्रशिक्षार्थियों को समय दीजिये कि वे अपने अनुभव को बतायेंगे जो उन्हें रंगीन टुकड़ों को सफेद टुकड़ों से अलग करते समय हुआ होगा। उनके विचारों का उपयोग करते हुये प्रशिक्षार्थियों को इस समझ की ओर ले जाइये कि पवित्र जीवन जीने के प्रयास में ''अलगाव'' अर्थात् अलग करना इसका कितना अधिक महत्व होता है।
- इन बातों को सीखाते सयम मुख्य बातों को व्हाईट–बोर्ड या ब्लैक–बोर्ड या बड़े चार्ट पर लिख लीजिये।
- प्रशिक्षार्थियों से कहिये कि अपने ''समर्पण की सूची'' को अपनी डायरी में लिख लेंगे। उन्हें प्रोत्साहित कीजिये कि वे न मात्र भविष्य में अपने विद्यार्थियों को ये बाते सिखायेंगे परंतु इन समर्पणों को स्वयं भी अपने जीवन में अपनायेंगे। शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा ऐसी किसी एक विशिष्ट परिस्थिति पर छोटी–सी चर्चा कराई जा सकती है जो हमारे मसीह में होने वाले विश्वास को डगमागा सकती है। प्रशिक्षार्थियों को आह्वान दीजिये कि अपने भीतर उन क्षेत्रों को जांचे जिनमें ऐसी कुछ बातें होंगी जो परमेश्वर को पसंद नहीं आती हैं और जिनसे उन्हें दूर होना आवश्यक है क्योंकि वे मसीह में नयी सृष्टि हैं।
- इस आदर्श पाठ को पढ़ाने के पहले, अपने आप से भी ये प्रश्न पूछिये––कदाचित आपको दाऊद के समान प्रार्थना करनी पड़े, ''हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुध्द मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर'' (भजन 51:10)।

पाठ 6 से समर्पणों की सूची

1. मुझे उस प्रत्येक बात से अलग रहना आवश्यक है जो मेरे उस विश्वास को डगमगा सकती है जो परमेश्वर में है।
2. मुझे उस प्रत्येक बात से अलग रहना आवश्यक है जो मेरी गवाही को नष्ट या कमजोर करेगी।
3. मुझे उस प्रत्येक बात से अलग रहना आवश्यक है जो मेरी नैतिकता को कम करेगी और मुझे पाप की ओर ले जाएगी।
4. यदि मेरा कार्य मेरे भाई या बहन के लिए ठोकर का कारण ठहरता है तो मुझे उस कार्य से अलग रहना आवश्यक है।
5. मुझे ऐसी हर एक वस्तु से अलग रहना आवश्यक है जो मेरे शरीर को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से हानि पहुँचाती है।
6. मुझे ऐसे प्रत्येक कार्य से अलग रहना आवश्यक है है जो मसीह को पसंद नहीं है।
7. मुझे ऐसी हर एक बात से अलग रहना आवश्यक है जो मेरी गवाही को कमजोर बनाएगी।

सत्र 3: 45 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

पवित्र जीवन

समूहों में अध्ययन

रूपरेखा:

क. प्रत्येक समूह इस विभाग से एक पाठ का अध्ययन करता है

ख. प्रत्येक समूह प्रस्तुत करने के लिये उस पाठ पर चार्ट बनाता है

समूहों में अध्ययन करने के लिये तैयारी

- प्रशिक्षार्थियों को 10 समूहों में विभाजित कर लीजिये।
- प्रत्येक समूह को एक पाठ निर्धारित कर दीजिये।
- हम नीचे दिये गये 10 पाठ चुनने का सुझाव देते हैं ताकि पवित्र जीवन जीने के विभिन्न विषयों पर सहायक होंगे।

पाठ 1. प्रभु का भय मानो;	पाठ 2. पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन;
पाठ 3. शैतान का सामना करो;	पाठ 7. चरवाहे का व्यक्तिगत जीवन;
पाठ 8. भीतरी प्रेरणाएँ;	पाठ 9. आत्मिक अगुवे की योग्यताएँ;
पाठ 11. परिवार में अगुवाई;	पाठ 14. अनुशासित अध्ययन;
पाठ 16. आलस्य; और	पाठ 18. जब परीक्षाएँ आती हैं

- प्रत्येक समूह को पाठ का अध्ययन करने के लिये कम–से–कम 20 मिनट दीजिये, तब उसके बाद उन्हें अपने पाठ के लिये चार्ट बनाने की सामग्री दीजिये।
- प्रशिक्षार्थियों को निर्देश दीजिये कि वे अपने समय का उत्तम उपयोग कैसे कर सकते हैं।

आदर्श निर्देश

- आपके पास अपना पाठ पूरा करने के लिये 40 मिनट होंगे।
- पहले 20 मिनट पाठ का अध्ययन करने में और तत्पश्चात 20 मिनट चार्ट बनाने में उपयोग कीजिये।
- पाठ को पढ़ लेने के बाद, अपने समूह के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर उसकी मुख्य बातों पर चर्चा कीजिये।
- बाहरी स्रोत से प्राप्त होने वाली जानकारी को इस्तेमाल ना करें; इस पाठ में दी गई सामग्री पर ही केंद्रित रहें।
- 20 मिनट का उपयोग चार्ट बनाने में कीजिये जिसमें आप पाठ के मुख्य विषयों को और आकर्षक पहलुओं को प्रस्तुत करेंगे।
- अपने समूह से एक व्यक्ति को चुनिये कि कक्षा के समक्ष मुख्य बातों को प्रस्तुत करे और बाकी सदस्य चार्ट दिखाने में उसकी सहायता करेंगे।
- आप कक्षा के समक्ष मुख्य बातों को बताने के लिये 4 मिनट का समय लेंगे।
- कक्षा के समक्ष, पाठ पर विचार करने हेतु, दो प्रश्न रखिये।

सत्र 4: 150 मिनट

पाठ्यपुस्तकः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

पवित्र जीवन

समूह प्रस्तुतिकरण

उद्देश्यः

क. समूहों में अध्ययन किये गये प्रत्येक पाठ का प्रस्तुतिकरण

ख. प्रत्येक पाठ पर परस्पर विचार

ग. प्रत्येक पाठ पर आत्मिक प्रोत्साहन

क. समूहों में अध्ययन किये गये पाठ का प्रस्तुतिकरण

- प्रत्येक समूह को पाठों के क्रम के अनुसार आमंत्रित कीजिये कि अपने पाठ तथा चार्ट को प्रस्तुत करेंगे। प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को प्रोत्साहित कीजिये कि कक्षा के समक्ष कम–से–कम एक बार बोलें, ताकि पाठ सिखाने का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हो।

ख. प्रत्येक पाठ पर कक्षा में परस्पर विचार

- प्रत्येक समूह के द्वारा प्रस्तुतिकरण किये जाने के बाद, कक्षा के द्वारा पाठ पर प्रतिसाद देने के लिये 4 मिनट का समय दीजिये। आप पाठ पर कुछ प्रश्न पूछ सकते हैं अथवा मूख्य बातों को समझाइये।

ग. पाठ से आत्मिक प्रोत्साहन

- प्रत्येक प्रस्तुति की समाप्ति पर, प्रत्येक पाठ से एक बात को चुन लीजिये कि उस पर कोई प्रोत्साहन या आत्मिक शिक्षा दी जाये। इस विभाग का समापन, सब के साथ मिलकर समर्पण करने के द्वारा कीजिये।

पवित्र जीवन विभाग का समापनः

- शिक्षक–प्रशिक्षक तथा प्रशिक्षार्थी दोनों के लिये, पवित्र जीवन यह विषय आत्मिक आत्म–परीक्षण का होना चाहिये।
- प्रशिक्षार्थियों को प्रोत्साहित कीजिये कि अपने पाठ्यपुस्तक या डायरी में अपनी ''मैं निर्णय करता हूं'' की सूची को देखेंगे और पवित्रता के नये समर्पणों को जोड़ेंगे। ''मैं निर्णय करता हूं'' की सूची प्रशिक्षार्थियों के लिये एक तरीका होगा कि अपने पाठों पर विचार करें, मसीह के प्रति समर्पण करें और अपने जीवनों को उन विशिष्ट बातों पर केंद्रित करें जिनके प्रति उन्हें शिष्यता की बुलाहट दी गई है।
- प्रशिक्षार्थियों को प्रोत्साहित कीजिये कि हम सब मसीह के समूदाय के भाग हैं, और यह बात हम पर जबाबदेही ठहराती है।
- संसार से अलगाव करने के विषय को ''मसीह में'' इस वस्तुपाठ से समाप्त करने पर विचार कीजिये।
- इस वस्तुपाठ के प्रयोग का प्रदर्शन करने के बाद, प्रशिक्षार्थियों की प्रार्थना में अगुवाई कीजिये कि अपने दिनों के प्रत्येक क्षण के लिये परमेश्वर की सहायता मांगे। प्रार्थना कीजिये कि उनकी सेवकाइयां परमेश्वर की आशीषों से बहुत फलदायी हों। स्तुति के गीत के साथ समाप्त कीजिये।

''मसीह में'' वस्तुपाठ (प्रयोग को प्रदर्शित करना)

- आवश्यक सामग्री: कांच का 1 बड़ा बरतन, 1 छोटा प्याला, कुछ पत्थर (छोटे और बड़े जो ग्लास में जा सकेंगे), चुटकी भर रेत और/या धूल।

- प्रयोग की तैयारी: बड़े बरतन को पर्याप्त पानी से भर दीजिए कि उसमें छोटा प्याला पूरा डूब सके। खाली प्याले को बरतन के साथ रख लीजिये।

- नीचे दिये गये छः कदमों में प्रयोग को प्रदर्शित कीजियेः

1. मैंने पवित्र आत्मा के द्वारा परिपूर्ण होने के विषय में सुना और पढ़ा था और उसकी लालसा की थी। मैं अपना प्रातःकालीन मनन करता (प्याले को पानी में डुबाइए कि पूरा भर जाए), परन्तु दोपहर होते–होते मुझे आत्मा से आधा ही भरा हुआ महसूस होता (प्याले को हिलाइए ताकि पानी बाहर गिरे)। जैसे–जैसे परेशानियां या परीक्षाएं आतीं, मैं और, फिर और खाली होता जाता (पानी प्याले से बाहर छलकाते रहिए)।

2. (प्याले को बड़े बरतन के भीतर पानी में रखिते हुये कहियेः) हम इफिसियों 1 में ''मसीह में'' होने के के बारे पढ़ते हैं। (किसी प्रशिक्षार्थी से कहिये कि पानी को स्पर्श किए बिना पानी के भीतर रखे प्याले को स्पर्श करे। तब वह यही कहेगा कि वह ऐसा नहीं कर सकता।) जब हम मसीह में होते हैं, तब शैतान हम तक नहीं पहुंच सकता। (फिर उस प्रशिक्षार्थी से कहिए कि प्याले को पानी के भीतर रखते हुए ही उठाकर उल्टा करे।) क्या वह खाली हो जाता है? (उससे कहिए कि प्याले को पानी के भीतर ही हिलाये)। पहले, जब प्याला पानी के बाहर था और हम ने उसे हिलाया था, वह खाली हो गया था, परन्तु अब वह पूरा भरा ही रहता है!

3. (प्याले को पानी से भरा हुआ बाहर निकालते हुए उसमें कुछ बड़े पत्थर डालिए।) क्या प्याला पूरा भरा हुआ है? पत्थरों ने पानी की जगह ले ली है। कुछ लोग ऐसा जीवन जीते हैं जहां पाप (पत्थर) उन्हें आत्मा से परिपूर्ण होने से रोकते हैं। आपके हृदय में क्या है जो पवित्र आत्मा का स्थान ले रहा है? आप किस से भरे हुये हैं? पाप या मसीह? पानी प्याले के मुंह तक भरा हुआ दिखाई दे सकता है परंतु पत्थरों के कारण प्याले में पानी मात्र आधा प्याला ही होगा।

4. (कुछ पत्थरों को निकालिये और प्याले को पुनः पानी से भरिये। तब पानी में चुटकी भर रेत या धूल डालिए। किसी से पूछिये कि उस पानी को पीना चाहेंगे क्या?) यद्यपि धूल थोड़ी–सी है फिर भी वह प्याले के पूरे पानी को गंदा कर देती है।

5. (स्वच्छ प्याले को पानी के भीतर रखिए और कुछ पानी को उससे बाहर गिराने का प्रयास कीजिए।) जब मैं प्याले को पानी के भीतर रखता हूं और उसमें से कुछ उंडेलता हूं, तो बाहर क्या निकलता है? जब कोई आपको क्रोध दिलाता है तब आपके मुख से क्या निकलता है? शाप या आशीषें? यदि मैं मात्र मसीह से भरा हूं तो मुझ से मात्र मसीह बाहर निकलेगा।

6. परमेश्वर चाहता है कि हम पवित्र आत्मा से भरा हुआ जीवन व्यतित करें ताकि हम उसके उद्देश्य के अनुसार जीवन जी सकें। ये पत्थर पाप के समान हैं। वे रुकावटें हैं, जो हमें पवित्रता के गहरे जीवन में बढ़ने से रोकती हैं। (पत्थरों को एक–एक करके बाहर निकालिये और जोर देकर यह कहते जाइये कि अभिलाषाओं और पाप को अपने जीवन से अलग कर देना आवश्यक है।) हमारे लिये आवश्यक है कि सभी गलत बातों को अपने जीवन से अलग करें। इसके लिये हमें परमेश्वर के क्षमा की और परिवर्तनकारी प्रेम की आवश्यकता है। आइये हम परमेश्वर के अद्‌भुत प्रेम के प्रति प्रतिसाद दें।

सत्र 5: 50 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

धर्मोपदेशकला

शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापन

रूपरेखा:

क. विभाग का परिचय

ख. पाठ क्रमांक 6 से 10

क. विभाग का परिचय

- धर्मोपदेशकला इस विभाग की प्रस्तावना से मुख्य बातों को प्रस्तुत करें जैसे कि पहले दिन बताई गई थी।
- प्रथम पांच पाठों के नाम पुनः बताते हुये दूसरे पांच पाठों के नाम भी बताइये।

ख. क्रमांक छः से 10 पाठ

- निम्नलिखित पाठों को पढ़ाइये।
  - पाठ 6: उपदेश की उत्तम क्रमबद्धता
  - पाठ 7: उपदेश का परिचय, अच्छे परिचय की विशेषताएं
  - पाठ 8: उपदेश का तर्क (मुख्य भाग)
  - पाठ 9: उपदेश का उपसंहार
  - पाठ 10: उदाहरण और उनके लाभ

- अच्छे उपदेश की क्रमबद्धता
  - चार्ट दिखाते हुये रूपरेखा पढ़ाइये।
- उपदेश का परिचय
  - प्रशिक्षार्थियों से कहीये कि अपनी पुस्तकों को बंद करें और उपदेश के परिचय पर चर्चा करें।
  - चर्चा के बाद, पुनः पाठ्यपुस्तक से पढ़ाइये।
- अच्छे परिचय की विशेषताएं
  - पाठ्यपुस्तक से पढ़ाने के बाद, प्रशिक्षार्थियों से कहीये कि, अपने स्मरण से, अच्छे परिचय की तीन विशेषताएं बताइये।

उपदेश की रूपरेखा

मूल विषय

शास्त्रपाठ

परिचय

रूपरेखा (मुख्य भाग – तर्क)

1. ————————

2. ————————

3. ————————

उपसंहार

आमंत्रण

- उपदेश का तर्क (मुख्य भाग)
  - इस बात पर जोर दीजिये कि उपदेश में दिये जानेवाले प्रत्येक मुख्य बिन्दुओं के मध्य तर्कपर्ण संबंध जोडना महत्वपूर्ण होता है।
- उपदेश का उपसंहार
  - इस बात पर जोर दीजिये कि उपदेश के उपसंहार को संक्षिप्त और उपदेश के लिये उपयुक्त रखना महत्वपूर्ण होता है।
- उपदेश का आमंत्रण
  - इस बात पर जोर दीजिये कि आमंत्रण को जोड़ना महत्वपूर्ण होता है। पीबीएस शिक्षक प्रशिक्षण सेमिनार तथा पीबीएस कक्षाओं के दौरान भी प्रस्तुत किये जाने वाले उपदेशों में आमंत्रण जोड़ा जाना महत्वपूर्ण होता है। जब कभी परमेश्वर का वचन प्रचार किया जाता है, यीशु के पीछे चलने का नया समर्पण करने के लिये अथवा अपने समर्पण को पुनः–नया करने के किये आमंत्रण दिया जाना चाहिये।

सत्र 6: 40 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

धर्मोपदेशकला

समूह कार्य

रूपरेखा:

क. प्रत्येक समूह उसे सौंपे गये पाठ का कार्य पूरा करेगा

ख. प्रत्येक समूह अपना काम संपूर्ण कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करेगा

क. समूह में अभ्यास–कार्य

- कक्षा को पांच समूहों में बांट दीजिये और प्रत्येक समूह को उसे दिये गये पाठ का कार्य पूरा करने कहीये। अभ्यास–कार्य ''चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग'' इस पुस्तक में दिया गया है और ''अभ्यास–कार्य'' या ''चर्चा'' इस शीर्षक से दर्शाया गया है।
- समूहों को, अपना कार्य पूरा करने के लिये 15–20 मिनट का समय दीजिये।

ख. समूह प्रस्तुतिकरण

- प्रत्येक समूह एक व्यक्ति को चुन लेगा कि वह समूह के कार्य को कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करे।
- प्रत्येक समूह को कार्य प्रस्तुत करने के लिये 2 मिनट का समय मिलेगा।
- जब सारे समूह अपना प्रस्तुतिकरण पूरा कर लेते हैं तब शिक्षक–प्रशिक्षक अपना प्रतिसाद/अपनी जानकारी प्रस्तुत करेगा।

विभाग तीन

सत्र 1: 60 मिनट

पाठ्यपुस्तक: पोर्टेबल बाइबल स्कूल शिक्षक प्रशिक्षण सेमिनार

प्रणाली संबंधी दृश्टिकोण

विभाग 3 का आरंभ आराधना और प्रार्थना के साथ कीजिये (15 मिनट)

पुनरावलोकन प्रश्नोत्तरी खेल (10 मिनट)

- इससे संबंधित नियमों को विभाग 2 से देखिये। परिशिष्ट ''बी'' में दिये गये प्रश्नों का उपयोग कीजिये अथवा स्वयं अपने प्रश्न तैयार कीजिये।

प्रणाली संबंधी दृश्टिकोण पर शिक्षा

वयस्कों का सीखने का तरीका

- प्रस्तावना: पाठ्यवस्तु के प्रस्तावना में दिये गये भाग को पढ़िये।
- नीचे दिया गया चार्ट दिखाते हुये इस बात में अंतर दिखाइये कि वयस्क अध्ययनकर्ता किस प्रकार बालक अध्ययनकर्ताओं से भिन्न होते हैं।
- पहली भिन्नता ''प्रेरणा'' के बारे में चर्चा कीजिये–नीचे दिया गया परिचय इस्तेमाल कीजिये।

वयस्कों का सीखने का तरीका

1. प्रेरणा
2. अनुभव
3. स्वायत्तता
4. परिवर्तन
5. उपयोगिता
6. आदर

चर्चा आरंभ करने के लिये नमूना

जब हम प्रेरणा के बारे में सोचते हैं, तब मैं एक पश्न पूछता हूं: बालक क्यों स्कूल जाते हैं? इसका उत्तर होगा कि क्योंकि यह उनके लिये अनिवार्य बनाया गया है। बालकों के पास कोई चुनाव नहीं होता है। क्या वयस्कों को स्कूल जाना अनिवार्य होता है? प्रायः नहीं। विशिष्ट रूप से, वयस्क अध्ययनकर्ताओं को इस बात से प्रेरणा मिलती है कि अपनी उस शिक्षा के लिये उनके पास कुछ खास लक्ष्य होता है। वयास्कों के शिक्षक के लिये यह जान लेना महत्वपूर्ण होता है कि उसके विद्यार्थियों की उस प्रशिक्षण से क्या आशा है? वह उन्हें उन लक्ष्यों को पाने में सहायता करें।

- कक्षा से कहिये कि 2–3 के समूहों में होकर अन्य भिन्नताओं के गुणों पर चर्चा करें जो चार्ट में दर्शायी गई हैं। विचार करें कि प्रत्येक गुण में वयस्क अध्ययनकर्ता किस प्रकार बालक अध्ययनकर्ताओं से भिन्न होते हैं। (चार मिनट का समय दीजिये।)। कक्षा को पुनः अपने स्थान में बुलाइये और प्रत्येक भिन्नता पर चर्चा कीजिये और उन बातों का वयस्कों के शिक्षाकों के लिये महत्व बताइये।

- **अनुभवकारी अध्ययन**
  - बताइये कि ऐसी कुछ बातें होती हैं जो हम स्कूल से या पुस्तकों से सीखते हैं, और अन्य ऐसी बातें होती हैं जो हम अनुभव से सीखते हैं।
  - उदाहरण दीजिये, जैसे कि: ''मैं विश्व के देशों के और उनकी राजधानियों के नाम पुस्तकों से या स्कूल की पढ़ाई से जानता हूं। परंतु मैंने साइकल चलाना या खाना पकाना यह अनुभव से सीखा है।
    - प्रशिक्षार्थियों से कहिये कि वे अपने साथ बैठे हुये साथी को वह एक बात बतायें जो उन्होंने अनुभव से सीखी है।

- कुछ लोगों से कहीये कि अपने उदाहरण सारी कक्षा को बतायेंगे।

o बताइये कि पीबीएस में आने वाले विद्यार्थी अनेक बहुमूल्य अनुभवों के साथ आते हैं और पीबीएस शिक्षकों के द्वारा उनके अनुभवों के प्रति आदर प्रगट किया जाना चाहिये, जैसे कि:
- अपने विद्यार्थियों के अनुभवों से सीखने के द्वारा
- पाठों को अपने विद्यार्थियों के अनुरूप तैयार करने के द्वारा
- पाठ्यक्रम की सामग्री तथा विद्यार्थियों के अनुभवों के बीच संबंध जोड़ने के द्वारा

- **क्षेत्रीय अनुभव प्रशिक्षण प्रबंध**
  - o प्रशिक्षार्थियों को आठ महिनों के पीबीएस से ग्रेज्यूएट होने के बाद छः महिने तक किये जाने वाले फॉलोअप का महत्व स्मरण दिलाइये।
  - o प्रशिक्षार्थियों से कहीये कि परिशिष्ट ''सी'' में दिये गये 'क्षेत्रीय अनुभव प्रशिक्षण मूल्यांकन' के फार्म को देखेंगे। निम्नलिखित आवश्यकताओं पर जोर दीजियेः
    - तुरंत किया जाने वाला मूल्यांकन
    - प्रोत्साहित करने हेतु किया जाने वाला मूल्यांकन
    - सुधार हेतु किया जाने वाला मूल्यांकन

  - o ध्यान दीजिये कि मूल्यांकन का लागूकरण उस स्थान की परिस्थिति के अनुरूप होना आवश्यक है।

- **संस्कृति–संगत प्रशिक्षण। शिक्षकों के लिये निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं:**
  - o स्थानीय भाषा में पढ़ाया जाये; आवश्यक है कि शिक्षक स्थानीय भाषा में धाराप्रवाह (सहज रीति से बोलने वाले) होने चाहिये।
  - o पवित्रशास्त्र की सच्चाइयों को इस तरीके से बताने वाले हों कि विद्यार्थि उन्हें समझ सकेंगे।
    - अपने विद्यार्थियों के लोगों और संस्कृति को जानिये और उसका सम्मान कीजिये।
    - विद्यार्थियों को बौद्धिक रीति से कभी–भी निम्न या छोटा मत समझिये।
    - ऐसे धर्मशास्त्रीय (थेआलाजिकल) शब्दों का उपयोग करना टालीये जिन्हें समझने में विद्यार्थियों को अड़चन लगेगी।
    - ऐसे ही उदाहरणों का उपयोग कीजिये जो उनकी संस्कृति में समझने लायक होंगे।
    - विद्यार्थियों को उनकी अपनी संस्कृति से दूर करने का प्रयास न करें। विद्यार्थियों की संस्कृति की ताकत को आंकने का प्रयास तो कीजिये परंतु बाइबल की सच्चाइयों को विश्वासयोग्यता से थामें रहिये।
    - ऐसी ही शिक्षण सामग्री का उपयोग कीजिये जो विद्यार्थियों के लिये सहजता से उपलब्ध हो सकती है। उदाहरण के लिये, यदि पीबीएस देहात में चलाया जा रहा होगा तो सिखाते समय उपयोग की जाने वाली दृश्य–सामग्री उस सामग्री से अलग होगी जो शहरी क्षेत्र के पीबीएस में काम में लायी जायेगी।

- **रचनात्मक शिक्षण पद्धति**
  - o कक्षा से प्रश्न कीजिये कि क्या शिक्षक को दिन–प्रतिदन मात्र व्याख्यान पद्धति का ही उपयोग करना चाहिये? क्यों करना चाहिये या क्यों नहीं? उत्तरः विभिन्न रचनात्मक पद्धतियों का उपयोग करने के द्वारा विद्यार्थियों के लिये शिक्षा में अधिक हिस्सेदारी, प्रोत्साहन, प्रविणता और अधिकाई से स्मरण रखने की सुविधा उपलब्ध करायी जा सकती है।
  - o विभिन्न रचनात्मक पद्धतियों को चार्ट पर लिखा हुआ दिखाइये, या उन्हें बोर्ड पर लिखिये। ध्यान दीजिये कि इनमें बताई गई प्रत्येक पद्धति किस प्रकार पीबीएस शिक्षक प्रशिक्षण सेमिनार में काम में लाई गई है या लाई जायेगी।

1. लेक्चर (व्याख्यान)	2. प्रश्न–उत्तर	3. क्रियाकलाप और खेल (क्वीझ)
4. गीत	5. चार्ट और चित्र	6. समूह कार्य
7. लघु–नाटक	8. विद्यार्थी और शिक्षक	9. नोटबूक्स और डायरी
10. प्रोत्साहन	11. प्रयोग प्रदर्शन	

  - o प्रशिक्षात्रियों को इन पद्धतियों को अपनी डायरी में लिख लेने कहिये। इस में वे अपने विचार से और भी पद्धतियों को जोड़ सकते हैं।

सत्र 2: 45 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

सिद्धांत

शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापन

रूपरेखा:

क. विभाग का परिचय

ख. आदर्श पाठ

क. विभाग का परिचय

- यीशु के अनुयायी होने के नाते, सिद्धांत हमारे सामुदायिक पहचान की बुनियाद है।
- 1 पतरस 3:15 को पढ़िये और प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि उन्हें अगुवों के रूप में बहुतेरे कठिन प्रश्नों का सामना करना पड़ेगा, जैसे कि:

  - यीशु कैसे परमेश्वर और मनुष्य दोनों हो सकता है?
  - यह कैसे है कि परमेश्वर एक ही है और इसके साथ ही वह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा भी है?
  - परमेश्वर यीशु मसीह के व्यक्तित्व में होकर रोमी क्रूस पर एक अपराधी की मृत्यु कैसे मर सकता है?
  - यदि परमेश्वर भला है, तब क्यों इस संसार में इतने क्लेश हैं?

- ऐसे प्रश्नों के उत्तर के लिये निश्चय ही हम परमेश्वर के वचन, बाइबल की गहराई को ही देखते हैं। तथापि हम ऐतिहासिक विश्वास से भी सीख सकते हैं।
- प्रशिक्षार्थी, पीबीएस के पाठ्यक्रम में, मसीही विश्वास के दस केंद्रिय सिद्धांतों को सीखते हैं: (1) परमेश्वर, (2) मसीह यीशु, (3) पवित्र आत्मा, (4) मनुष्य, (5) उद्धार, (6) कलीसिया, (7) पवित्र शास्त्र, (8) स्वर्गदूत, (9) शैतान और (10) अन्तिम बातें।
- इन मूलभूत सिद्धांतों की बुनियादी समझ को प्राप्त करना एक ऐसी नाव पर सवार हो जाने के समान है जो लंगर डालकर सुरक्षित ठहराई गई है।

  - <u>वर्णन कीजिये:</u> कल्पना कीजिये कि एक जहाज या नाव है जिसका लंगर नहीं है। समय के साथ, हवा और लहरें नाव को समुद्र की तरंगों पर या चट्टानों पर बहा ले जायेगी। हो सकता है कि नाव खो जाये। मात्र यदि वह नाव लंगर के द्वारा सुसज्जित की गई होती, और वह लंगर सही रीति से उपयोग में लाया जाता, तब ही कदाचित वह नाव अच्छी रीति से सुरक्षित रही होती। मसीहियों के लिये भी यही बात लागू होती है।
  - <u>स्पष्टीकरण कीजिये:</u> परमेश्वर के सत्य को हम पर यीशु मसीह के व्यक्तित्व और परमेश्वर के वचन बाइबल के द्वारा प्रगट किया गया है। यह सत्य ही हमारा लंगर है जो हमें मार्ग से भटकाने वाली किसी भी गलत शिक्षाओं के मध्य संभाल सकता है। महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रश्न और किसी विशिष्ट संदर्भ के मुद्दे उसी एक लंगर से सुलझाये जा सकते हैं जो परमेश्वर के सत्य और व्यक्तित्व में दृढ़ता से गाड़ा गया है।

- इफिसियों 4:13–15 पढ़िये। यहां पौलुस लिखता है कि कलीसिया किस प्रकार से मसीह की देह के रूप में बनाई जाती है जबकि वह विभिन्न वरदानों को प्राप्त किये हुये विभिन्न लोगों का समूह होती है। यह इसलिये हो सकता है क्योंकि मसीह की देह, पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से, एक विविधतापूर्ण ईकाई के रूप में बढ़ती जाती है, ताकि हम मसीह में परिपक्व होते जा सकते हैं।
- यह विविधतापूर्ण ईकाई का तत्व बुनियादी मसीही सिद्धांतों की शिक्षा के लिये अनिवार्य है; समय–समय पर और अलग–अलग स्थानों में, पवित्र शास्त्र के अपरिवर्तनीय सत्य के प्रति नये प्रश्न पूछे जायेंगे।

ख. आदर्श पाठ (40 मिनट)

पाठ 2: परमेश्वर का व्यक्तित्व

पद्धतिः पलटाये जाने वाले चार्ट्स **(Flip Charts)**

- इस पाठ को पढ़ाने का नमूना यह प्रस्तुत करने के लिये भी कीजिये कि पाठ्यपुस्तक से मुख्य बातों को सिखाने के लिये पलटाये जाने वाले चार्ट्स का उपयोग कैसे किया जाता है।
- पहले से ही तीन पलटाये जाने वाले चार्ट्स (Flip Charts) तैयार कर लीजिये।
    - पहला चार्टः ''उसका स्वभाव'' – प्रश्न कीजिये– ''परमेश्वर क्या है?'' – (1) परमेश्वर एक आत्मिक अस्तित्व (सत्व) है जो भौतिक स्थान में सीमित नहीं है; (2) हर एक आत्मिक और भौतिक बात पर परमेश्वर पूर्ण प्रभुता रखता है; (3) परमेश्वर व्यक्तिगत समीपता देने वाला है, और उसका एक व्यक्तिगत नाम भी है; (4) उसकी महिमा उसके महत्व का वर्णन करती है।
    - दूसरा चार्टः ''उसका व्यक्तित्व'' – प्रश्न कीजिये– ''परमेश्वर कौन है?'' – (1) दयालु (2) कृपालु (3) विलम्ब से कोप करने वाला (4) प्रेम, विश्वासयोग्यता और न्याय से भरपूर (5) दोषी को कदापि बिना दण्ड के न जाने देने वाला।
    - तीसरा चार्टः ''उसकी एकता'' – यह एक ऐसा वर्णन है जो उसमें और बाकी सब ईश्वर कहलाये जाने वालों में अंतर दर्शाता है – (1) वह एकमात्र जीवित परमेश्वर है; (2) वह एक ही परमेश्वर हैः पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा; (3) वह महिमायम सृष्टिकर्ता परमेश्वर है, कोई अन्य उसके बराबरी में नहीं है।
- पीबीएस पाठ्यपुस्तक से इस पाठ की प्रस्तावना में दिया भाग पढ़िये।
- आपके पीबीएस पाठ्यपुस्तक में दिये गये तीन उपशीर्षकों को पढ़ियेः उसका व्यक्तित्व, उसका स्वभाव, उसकी एकता।
- **''उसका स्वभाव''** – ''परमेश्वर क्या है?'' इस प्रश्न पर विचार कीजिये। हम बाइबल से जानते हैं कि परमेश्वर आत्मा है।
    - इसका अर्थ यह हुआ वह किसी भौतिक स्थान में सीमित नहीं है, जैसे कि हम सीमित हैं।
    - इसका अर्थ यह भी हुआ कि कभी–कभी, परमेश्वर अपने आप को लोगों पर विशिष्ट तरीकों से प्रगट कर सकता है। पढ़ियेः निर्गमन 3:1–6
    - वह एक भावात्मक शक्ति नहीं है, परंतु अपनी वास्तविक व्यक्तिगत समीपता को उपलब्ध कराता है। उसका व्यक्तिगत नाम भी है। पढ़ियेः निर्गमन 3:7–15
    - यहोवा यह एक विशिष्ट नाम है जो परमेश्वर ने अपने आप को दिया है, इस सच्चाई को बताने के लिये कि वह सर्व–व्यापक है।
        - पूछियेः परमेश्वर क्या है?
        - उत्तरः परमेश्वर, या यहोवा, सरल शब्दों में कहे तो, ''है'' और यह सच्चाई कभी बदलेगी नहीं।
    - पहले चार्ट का उपयोग करते हुये निम्नलिखित बातों का खुलासा कीजियेः
        - यह समझ लेना सही है कि परमेश्वर एक आत्मिक अस्तित्व है जो किसी भौतिक स्थान में सीमित नहीं है और वह हर एक आत्मिक और भौतिक बात पर परमेश्वर पूर्ण प्रभुता रखता है।
        - यह भी समझ लेना सही है कि बाइबल का परमेश्वर व्यक्तिगत समीपता देने वाला है, और उसकी महिमा उसके महत्व का वर्णन करती है।
        - तथापि यह समझ लेना गलत है कि हम परमेश्वर को पूर्णतः वर्गीकृत कर सकते हैं। वह यूं ही हमारे ''बक्सों'' में फिट नहीं होता (हमारे विचारों के अनुसार समझा नहीं जा सकता)।
        - इसीलिये यह महत्वपूर्ण है कि हम न मात्र इस बारे में बात करें कि परमेश्वर क्या है परंतु यह भी जानें कि वह कौन है।
- **''उसका व्यक्तित्व''** – यह इस प्रश्न पर विचार करता है कि ''परमेश्वर कौन है?'' हम बाइबल से सीखते हैं कि परमेश्वर दयालुता से भरपूर न्यायी है और न्यायपूर्ण रीति से दयालु है। पढ़ियेः निर्गमन 33:12–23
    - यहां हम पढ़ते हैं कि मूसा किस प्रकार बहुत ही साहस करके परमेश्वर की महिमा को देखने की मांग करता है।
    - महिमा वह शब्द है जिसका उपयोग हम परमेश्वर के महत्व का, अर्थात् उसकी असीमित सुंदरता, पवित्रता, सिद्धता और अद्‌भुत जटीलता का वर्णन करने के लिये करते हैं।
    - पढ़ियेः निर्गमन 34:5–7। दूसरे क्रमांक के चार्ट का उपयोग कीजिये जब आप बाइबल के हिस्से का खुलासा निम्न तरीके से करते हैं।
        - यहां हम परमेश्वर के व्यक्तित्व को, या चरित्र को पहचानते हैं कि वह दयालु, कृपालु, विलम्ब से कोप करने वाला, प्रेम से भरपूर, विश्वासयोग्य और न्यायी है।

- **''उसकी एकता''** – यह इस पीबीएस के पाठ्यपुस्तक में तीसरा बिन्दु है। परमेश्वर की एकता को त्रिएकता के सिद्धांत के द्वारा पूर्ण रीति से समझा जाता है। इसे पीबीएस के पाठ्यपुस्तक के पाठ 5 में विस्तार से बताया गया है। इस पाठ में हम जान लें कि परमेश्वर की एकता यह उसका वह वर्णन है जो उसे अन्य तथाकथित ईश्वरों की अनेकता की तुलना में अलग दर्शाता है।
    - तीसरे क्रमांक के चार्ट का उपयोग करते हुये ''उसकी एकता'' को निम्न लिखित तरीके से बताइये:
        - ये कुछ बातें हैं जो बताती है कि अन्य तथाकथित ईश्वरों की तुलना में बाइबल का परमेश्वर बिल्कुल अलग है। वह जीवित परमेश्वर हैं। वह एक परमेश्वर है: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। वह महिमामय सृष्टिकर्ता परमेश्वर है। उसके समान कोई नहीं है।
- 'प्रशिक्षार्थियों की अगुवाई कीजिये कि पीबीएस के पाठ्यपुस्तक में पाये जाने वाले इस पाठ में दिये गये सात वचनों को रेखांकित करें।
- 'उन्हें प्रोत्साहित कीजिये कि इन में से प्रत्येक वचन को और उसके आसपास के हिस्सों को पढ़ेंगे। उन्हें 10 मिनट दीजिये कि इन वचनों पर विचार करेंगे और स्वयं से इन प्रश्नों को पूछेंगे: ये वचन परमेश्वर के स्वभाव, परमेश्वर के व्यक्तित्व और उसकी एकता के बारे में हमें क्या बताते हैं?
- 'आत्मिक प्रोत्साहन के साथ समाप्त कीजिये। नीचे एक उदाहरण दिया गया है। ध्यान रखिये कि यह मात्र एक नमूना है––यदि आपको पवित्र आत्मा अगुवाई करता है तो निःसंकोच कोई दूसरा प्रोत्साहन दीजिये।

आदर्श प्रोत्साहन

प्रभु हमारा परमेश्वर एक परमेश्वर है। यह सच्चाई हमारे लिये अद्‌भुत है। हमारे पास एक परमेश्वर है जो हमारी सभी आवश्यकताओं के लिये, हमारी सभी संतुष्टियों के लिये पर्याप्त है। आइये हम अपने परमेश्वर की स्तुति करें कि उसने अपना यह सत्य ज्ञान हमें बाइबल में दिया है।

सत्र 3: 45 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

सिद्धांत

समूहों में अध्ययन

रूपरेखा:

क. प्रत्येक समूह इस विभाग से एक पाठ का अध्ययन करेगा।

ख. प्रत्येक समूह अपने पाठ के लिये प्रस्तुत करने हेतु पलटाये जाने वाले चार्ट्स को तैयार करेगा।

समूहों में अध्ययन की तैयारी:

- प्रशिक्षार्थियों से कहिये कि समूह या जोड़ियां बनाइये।
- प्रत्येक समूह या जोड़ी को पाठ्यपुस्तक के सिद्धांत विभाग से एक पाठ सौंप दीजिये।
- हम नीम्नलिखित 10 पाठों का सुझाव देते हैं जो सब मिलकर इस विभाग का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करेंगे।
  पाठ 5 – त्रिाएकता; पाठ 7 – मसीह का ईश्वरत्व; पाठ 12 – पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व;
  पाठ 17 – मनुष्य का पतन; पाठ 19 – मन फिराव (पश्चात्ताप); पाठ 26 – कलीसिया की परिभाषा तथा स्थापना;
  पाठ 30 – बाइबल के विषय में दो प्रकार की सात बातें; पाठ 32 – बाइबल स्वर्गदूतों के विषय में क्या कहती है;
  पाठ 35 – पराजित शत्रु; और पाठ 39 – दुष्टों का अन्तिम भविष्य
- समूहों/जोड़ियों को 20 मिनट दीजिये कि अपने पाठ का अध्ययन करेंगे, तत्पश्चात चार्ट्स बनाने की सामग्री वितरीत कीजिये।
    - प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि इन छः दिनों के सेमिनार में, सिखाने के लिये विभिन्न रचनात्मक पद्धतियों का नमूना प्रस्तुत किया जायेगा।
    - इस विभाग में वे पलटाये जाने वाले चार्ट्स को बनायेंगे और प्रस्तुत करेंगे।
- प्रशिक्षार्थियों को निर्देश दीजिये कि अपने समय का उत्तम उपयोग कैसे करेंगे।

आदर्श निर्देशः

- आपको अपना पाठ पूरा करने के लिये 40 मिनट दिये जायेंगे।
- 30 मिनट पाठ का अध्ययन करने में दीजिये और 10 मिनट में पलटाये जाने वाले चार्ट्स बनाइये।
- पाठ को पढ़ने के बाद, पाठ की प्रमुख बातों पर, अपने समूह के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर चर्चा कीजिये।
- बाहरी स्रोत या जानकारी का उपयोग करना टालिये; पूर्णतः पाठ की विषय–वस्तु पर ही केंद्रित रहिये।
- अंतिम 10 मिनट में, प्रमुख बातों को प्रस्तुत करने के लिये चार्ट बनाइये।
- प्रमुख बातों को कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करने के लिये एक सदस्य को चुनिये जब कि अन्य साथी चार्ट्स दिखाने में उसकी सहायता करेंगे।
- कक्षा के समक्ष पाठ की प्रमुख बातों को बताने के लिये 4 मिनट लीजिये।

सत्र 4: 150 मिनट

पाठ्यपुस्तकः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

सिद्धांत

समूह प्रस्तुतिकरण

क. समूहों में अध्ययन किये गये प्रत्येक पाठ का प्रस्तुतिकरण
ख. प्रत्येक पाठ पर परस्पर विचार
ग. प्रत्येक पाठ पर आत्मिक प्रोत्साहन

क. समूह प्रस्तुतिकरण

- प्रत्येक समूह को पाठों के क्रम के अनुसार आमंत्रित कीजिये कि अपने पाठ तथा फ्लिप चार्ट्स को प्रस्तुत करेंगे। प्रत्येक प्रस्तुतिकरण 4 मिनट का होगा। सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रोत्साहित कीजिये कि कक्षा के समक्ष कम से कम एक बार बोलें, ताकि पाठ सिखाने का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होवे।

ख. प्रत्येक पाठ पर कक्षा में परस्पर विचार

- प्रत्येक प्रस्तुतिकरण के बाद, कक्षा के द्वारा पाठ पर प्रतिसाद देने के लिये 4 मिनट का समय दीजिये। आप पाठ पर कुछ प्रश्न पूछ सकते हैं अथवा मुख्य बातों को समझाइये।

ग. पाठ से आत्मिक प्रोत्साहन

- प्रत्येक प्रस्तुति की समाप्ति पर, प्रत्येक पाठ से एक बात को चुन लीजिये कि उस पर कोई प्रोत्साहन या आत्मिक शिक्षा दी जाये। इस के लिये प्रार्थना, गीत, चिंतनशील प्रयोग का उपयोग किया जा सकता है। हम ने तीसरे दिन के आत्मिक प्रोत्साहनों के नमूने परिशिष्ट ''इ'' में दिये हैं। कृपया पाठ 19 के लिये दिया गया प्रदर्शन साधन को देखिये।

विभाग 2: ''सिद्धांत'' का समापन

- इस विभाग का समापन नीचे दिये गये क्रियाकलाप के द्वारा कीजिये। यह इस बात को दर्शाने के लिये है कि औरों को सही सिद्धांतों से सुसज्जित करने के लिये स्वयं को सुसज्जित करना महत्वपूर्ण है।

अनुभवकारी क्रियाकलापः अंधे की अगुवाई करना

1. प्रशिक्षार्थियों से कहिये कि अपने लिये एक साथी को लेकर उसका हाथ पकड़कर खड़े रहिये।
2. कहिये कि प्रत्येक जोड़ी में जो साथी दाहिनी ओर है वह अपनी आंखें बंद करेगा और तब दूसरे साथी के द्वारा कक्षा के कमरे में से बाहर ले जाया जाकर एक नियुक्त स्थान तक पहुंचाया जायेगा।
3. बाहर तक जाने के मार्ग में कुछ कुर्सियां या मेज रुकावटों के रूप में रखिये।
4. सारी जोड़ियों को नियुक्त किये गये स्थान तक ले जाइये, इस बात का ध्यान रखते हुये कि किसी को कोई चोट ना लगे।
5. जब सब नियुक्त स्थान पर पहुंच जायेंगे तब सब को आंखे खोलने कहिये।
6. जोड़ियों को अपनी भूमिकाओं को बदलने कहिये। अब जो पहले आंखे खुली रखते हुये अगुवाई कर रहे थे वे आंखे बंद करेंगे और अपने साथी के द्वारा ले जाये जायेंगे।
7. विकल्पः एक जोड़ी को कहिये कि दोनों साथी आंखे बंद करते हुये एक दूसरे को ले जाने का प्रदर्शन करेंगे कि ''अंधा अंधे की अगुवाई'' कर रहा है। उन्हें 1 मिनट दीजिये कि इस बात का प्रयास करेंगे।

<u>तत्पश्चात, नीचे दिये गये प्रश्नों पर चर्चा कीजियेः</u>

जब आपको ले जाया जा रहा था तब आपको कैसा अनुभव हुआ?

जब आप अगुवाई कर रहे थे तब आपको कैसा अनुभव हुआ?

दोनों साथियों का आंखे बदं करके एक दूसरे को ले जाना यह प्रदर्शन देखने में कैसे लग रहा था?

स्वयं देखने में असमर्थ रहने पर दूसरे की अगुवाई करने में कैसे अनुभव हुआ?

जो देख नहीं सकता ऐसे के द्वारा अगुवाई लेने में कैसे लगा?

बाइबल के सिद्धांतों को जानना और सिखाना अत्यंत महत्वपूर्ण है इसके बारे में यह प्रदर्शन हमें क्या सीखाता है?

सत्र 5: 50 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

धर्मोपदेशकला

शिक्षक–प्रशिक्षक द्वारा अध्यापन

रूपरेखा:

क. जीवन–वृत्तांत संबंधी, वर्णनात्मक, पाठ–विषयक, और प्रासंगिक या विषयसंबंधी उपदेशों का परिचय
ख. जीवन–वृत्तांत संबंधी उपदेश का नमूना; ग. वर्णनात्मक उपदेश का नमूना
घ. पाठ–विषयक उपदेश का नमूना; च. प्रासंगिक या विषयसंबंधी उपदेश का नमूना

क. विभाग का परिचय

- पीबीएस में सिखाये जाने वाले उपदेश के पांच प्रकार के नाम बताइये। तब बताइये कि आज हम प्रथम चार प्रकार के उपदेशों की समीक्षा प्रस्तुत करेंगे और पीबीएस के पाठ्यपुस्तक से उनके नमूने की रूपरेखा देखेंगे।
- बताइये कि पीबीएस के विद्यार्थियों को उपदेशों को तैयार करने और प्रस्तुत करने के बहुतेरे अवसर मिलते हैं, जैसे कि कक्षा में, स्कूल के प्रार्थनालय (चैपल) में, और सप्ताह के अंत में किये जाने वाले क्षेत्रीय अनुभव के दौरान भी।

ख. जीवन–वृत्तांत संबंधी उपदेश का नमूना

- स्पष्ट कीजिये कि जीवन–वृत्तांत संबंधी उपदेश यह वर्णनात्मक उपदेश का ही प्रकार है।
- उपदेश की रूपरेखा दर्शाने वाला चार्ट तैयार कीजिये।
- उस चार्ट में – उपदेश का मूल विषय, परिचय, उपसंहार और आमंत्रण ये हिस्से छिपा दीजिये अथवा खाली रखिये। (नीचे दिया गया चार्ट देखिये। यहां इस मैन्युअल में, विद्यार्थियों के लिये छिपाये जाने वाले हिस्से रेखांकित किये गये हैं।)
- क्या नहीं दिया गया है इसे पहचानिये।
- कक्षा की चर्चा करने में अगुवाई कीजिये और आप जो हिस्से खाली है उसे भरते जाइये। साथ ही साथ, इन हिस्सों को पढ़ाते जाइये। (पाठ्यपुस्तक के छिपाये जाने वाले हिस्से रेखांकित किये गये हैं।)
- उपदेश में मिलते–जुलते हवालों को (बाइबल के अन्य पदों को) जोड़ने की उपयोगिता भी बताइये।

जीवन–वृत्तांत संबंधी उपदेश
अब्राहम के चार समर्पण

मूल विषय : संपूर्ण समर्पण
शस्त्रपाठ : उत्पत्ति 12:1 – उत्पत्ति 22
परिचय :
1. अन्जान मांगों को पूरा करते–बलिदान करते जाना
क. विवाह, व्यवसाय, संतान
ख अब्राहम के लिये इसका अर्थ क्या था?
तर्क (मुख्य भाग) :
2. अब्राहम के चार समर्पण
क. अपने देश और अपने पिता के घर को छोड़ना (उत्प. 12:1 और लूका 14:26)
ख. लूत से अलग होना (उत्प. 13:9 और लूका 5:27–28)
ग. हाजिरा और इश्माएल को निकाल देना (उत्प. 21:10 और लूका 22:42)
घ. इसहाक का बलिदान (उत्प. 22 और यूहन्ना 14:6)
उपसंहार :
3. हम जो कुछ है और हमारा जो कुछ है उस सब कुछ का समर्पण करें
लूका 14:33
आमंत्रण :

- इस बात पर जोर दीजिये कि जब कभी परमेश्वर का वचन प्रचार किया जाता है तब–तब वह परमेश्वर का वचन होता है। जब कभी वे कक्षा में अभ्यास–कार्य के रूप में उपदेश तैयार करके प्रस्तुत करते हैं तब–तब प्रशिक्षार्थियों और विद्यार्थियों के हृदय पवित्र आत्मा के द्वारा स्पर्श किये जा सकते हैं।
- उपसंहार के बाद, प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि उपदेश के अंत में आमंत्रण देना महत्वपूर्ण होता है। उन्हें स्मरण दिलाइये कि उपदेश के समापन का परिणाम श्रोताओं के द्वारा एक निर्णय लिया जाना होना चाहिये, जो वे अपनी इच्छा से करेंगे। उपदेश श्रोताओं के लिये एक चुनौती हो जाना चाहिये और प्रचारक के लिये आवश्यक होता है कि उन्हें प्रतिउत्तर देने का अवसर प्रदान करें।
- मरकुस 10:46–52 का उपयोग करते हुये आमंत्रण का एक नमूना दीजिये। ''बरतिमाई यीशु के पास बुलाया गया कि उसके पास आये। वह अंधा था और अपना कपड़ा ओढ़े हुये था। वह कपड़ा उसके आने में रुकावट था, इसलिये उसने उसे फेंक दिया। अब यह कपड़ा जो था वह निश्चय ही फटा हुआ और धूल से भरा हुआ होगा, परंतु वह उसे अपने पर ओढ़े रहता होगा क्योंकि वह रात को उसे गरमाहट देता होगा। परंतु वचन में लिखा है कि उसने उसे फेंक दिया। क्या कोई बात है जो आपको यीशु के पास जाने से रोक रही है? वह जो कुछ हो, यदि परमेश्वर आप से बात कर रहा है, तो अभी वह समय है कि सारी रुकावटों को फेंक दें, उसके पास आ जायें और परमेश्वर के प्रेम के प्रति अपना संपूर्ण समर्पण कर दें।'' जीवनवृत्तांत के उपदेश के लिये एक और उदाहरण, जो पाठ्यपुस्तक में नहीं दिया गया है, वह ''महसूल लेने वाले की कहानी'' हो सकता है।

ग. वर्णनात्मक उपदेश का नमूना

- पाठ्यपुस्तक से वर्णनात्मक उपदेश का नमूना सिखाइयेः सिंहों की मांद में दानियेल

वर्णनात्मक उपदेश का नमूना
सिंहों की मांद में दानियेल

विषय : परमेश्वर अपने सन्तानों की चिन्ता करता है
परिचय : बन्धुवाई के देश में युवक की कहानी
मूल–पाठ : दानियेल 6:19–23
तर्क (मुख्य भाग) :
1. दुष्टता का षड्यन्त्र (दनियेल 6:1–9)
2. दैनिक रीति (दनियेल 6:10)
3. ईश्वरीय प्रबन्ध (दनियेल 6:21–24)

उपसंहार : दानियेल खतरे का सामना बड़े हियाव के साथ कर सका, क्योंकि उसका अपने परमेश्वर के साथ बहुत घनिष्ट सम्बन्ध था।
आमंत्रण : क्या आप परमेश्वर के साथ इतनी निकटता में चलते रहे हैं कि आपके जीवन में चाहे जो भी परिस्थिति आये, आप उसका सामना कर सकेंगे?

घ. पाठ–विशयक उपदेश का नमूना

- प्रशिक्षार्थियों को उपदेश के पांच प्रकार स्मरण दिलाइयेः जीवन–वृत्तांत संबंधी उपदेश, वर्णनात्मक उपदेश, पाठ–विषयक उपदेश, प्रासंगिक या विषयसंबंधी उपदेश और व्याख्यात्मक उपदेश।
- पाठ–विषयक उपदेश और प्रासंगिक या विषयसंबंधी उपदेश में अंतर बताइयेः

  <u>पाठ–विषयक उपदेशः</u>
  यह पवित्रशास्त्र के विशिष्ट पाठ पर केंद्रित होता है
  परंतु
  <u>प्रासंगिक या विषयसंबंधी उपदेशः</u>
  यह विषय या किसी प्रसंग पर केंद्रित होता है।
  इसमें पवित्रशास्त्र के अलग–अलग पाठ से लिये गये वचनों का उपयोग हो सकता है।

- नीचे दी गई रूपरेखा दिखाते हुये, पाठ्यपुस्तक से ''एक बंधनरहित भेंट'' यह उपदेश प्रस्तुत कीजिये

पाठ–विशयक उपदेश का नमूना
एक बन्धनरहित भेंट

मूल विषय : अर्पण
मूल–पाठ : रोमियों 12:1
परिचय : अर्पण शब्द का अर्थ बताइये।
तर्क (मुख्य भाग) :
1. कौन अर्पित हो सकता है?
2. अर्पण का आग्रहः
3. अर्पण की प्रक्रियाः
4. अर्पण के तर्क
5. मुझे क्या अर्पित करना है?

उपसंहार :
आमंत्रण :

च. प्रासंगिक या विशयसंबंधी उपदेश का नमूना

- प्रशिक्षार्थियों को पाठ–विषयक उपदेश और प्रासंगिक या विषयसंबंधी उपदेश में अंतर स्मरण कराइये।
- ''आओ और पीओ'' इस उपदेश का चार्ट दिखाकर उस पर चर्चा कीजिये। उपसंहार को छोड़ दीजिये।

प्रासंगिक या विशयसंबंधी उपदेश का नमूना
आओ और पीओ

मूल विषय : जीवन का जल
मूल पाठ : यूहन्ना 7:37
परिचय : क्या आप कभी जल से वंचित हुए हैं?
तर्क (मुख्य भाग) :
1. जीवन का जल – उसकी विशेषता
   क. जीवित (यूहन्ना 4:10)
   ख. स्वच्छ (प्रका 22:1)
   ग. शुद्ध (प्रका 22:1)
   घ. अत्याधिक–भरपूर (यहेजकेल 47:1–9)
   च. निःशुल्क – (प्रका 21:6)
2. यह किसके लिए दिया गया है?
   क. प्यासे के लिए (प्रका 21:6)
   ख. जो कोई चाहे उसके लिए (प्रका 22:17)
3. उसे पाने का मार्ग
   1. आओ (प्रका 22:17)
   2. ले लो (प्रका 22:17)

उपसंहार : इसे प्रशिक्षार्थी तैयार करेंगे।
आमंत्रण :

सत्र 6: 40 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

धर्मोपदेशकला

समूह कार्य

रूपरेखा:

क. प्रत्येक समूह उसे सौंपे गये उस दिन का अभ्यास–कार्य पूरा करेगा

ख. प्रत्येक समूह अपना अभ्यास–कार्य संपूर्ण कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करेगा

क. समूह में अभ्यास–कार्य

- कक्षा को समूहों में बांट दीजिये और प्रत्येक समूह को अलग–अलग शास्त्रपाठ बांट दीजिये: मत्ती 6:5–15; मरकुस 4:35–41; लूका 9:51–62; और इब्रानियों 11:1–6
- प्रत्येक समूह अपने लिये निश्चित करेगा कि वह किस प्रकार के उपदेश को तैयार करेगा, उसका शीर्षक और मूल–विषय क्या होगा।
- समूहों को, अपना कार्य पूरा करने के लिये 15–20 मिनट का समय दीजिये।

ख. समूह प्रस्तुतिकरण

- प्रत्येक समूह एक व्यक्ति को चुन लेगा कि वह समूह के कार्य को कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करे।
- प्रत्येक समूह को कार्य प्रस्तुत करने के लिये 2 मिनट का समय मिलेगा।
- जब सारे समूह अपना प्रस्तुतिकरण पूरा कर लेते हैं तब शिक्षक–प्रशिक्षक अपना प्रतिसाद/जानकारी प्रस्तुत करेगा।
- सत्र को प्रार्थना के साथ समाप्त कीजिये और अगले दिन के लिये आवश्यक सूचनाएं दीजिये।

विभाग चार

सत्र 1: 45 मिनट

पाठ्यपुस्तकः पोर्टेबल बाइबल स्कूल शिक्षक प्रशिक्षण सेमिनार

प्रशिक्षण–उपरांत मूल्यांकन

विभाग 4 का आरंभ आराधना और प्रार्थना से कीजिये (15 मिनट)

पुनरावलोकन प्रश्नोत्तरी खेल (10 मिनट)

- इससे संबंधित नियमों को विभाग 2 से देखिये। परिशिष्ट ''बी'' में कुछ प्रश्नों का सुझाव दिया गया है; आप स्वयं अपने प्रश्न भी तैयार कर सकते हैं।

प्रश्नोत्तरी खेल के पश्चात् निम्नलिखित बातों को सिखाइये।

प्रशिक्षण–उपरांत मूल्यांकन

- प्रस्तावनाः निरंतर चलने वाले मूल्यांकन की आवश्यकता पर जोर दीजिये, यह पहचानते हुये कि विद्यार्थियों की सफलता के लिये प्रभावी संगठन, साहित्य और पद्धितियों की आवश्यकता होती है। रचनात्मक मूल्यांकन दोनों प्रकार का हो सकता है––सकारात्मक और नकारात्मक भी; जिसका लक्ष्य हमेशा यही होगा कि विद्यार्थियों की कुशलता, ज्ञान और चरित्र का निर्माण किया जाये।

- **मूल्यांकन प्रक्रिया में कौन सम्मिलित होता है?**
  - हर एक जनः शिक्षक, विद्यार्थी, क्षेत्रीय निरीक्षक और प्रबंधक
- **किस बात का मूल्यांकन किया जाना चाहिये?**
  - पाठ साहित्य, शिक्षा पद्धतियां, शिक्षकों की प्रभावकारिता, और समूदाय पर होने वाला प्रभाव। हमें यह समझ लेना चाहिये कि विद्यार्थी के मंद कार्य–संपादन का कारण अस्पष्ट, उलझाने वाली या अव्यवस्थित शिक्षा पद्धति भी हो सकती है।
  - कक्षा में किये जाने वाले कार्य का मूल्यांकन करने के बजाय सेवकाई के कार्य–संपादन का मूल्यांकन करना अधिक महत्वपूर्ण है।
- **मूल्यांकन कैसे किया जाये?**
  - मूल्यांकन सरल और सस्ता होना चाहिये परंतु प्रभावकारिता से समझौता न किया जाये।
- **मूल्यांकन के लिये पद्धतियों का सुझावः**
  - पद्धतियों में प्रश्नोत्तरी और परीक्षा, विद्यार्थियों के साथ साक्षात्कार और कक्षा में तथा क्षेत्रीय अनुभवों में किया जाने वाला अवलोकन हो सकता है।
- परिशिष्ट ''डी,'' ''एफ'' और ''एच'' में दिये गये मूल्यांकन फार्म को देखिये।
- यह अच्छा समय होगा कि प्रशिक्षार्थियों को यह बताया जाये कि इव्हेंजेलिजम रिर्सोसेस के द्वारा कुछ पोर्टेबल बाइबल स्कूल्स् के लिये प्रति–विद्यार्थी 12 डालर का अनुदान दिया जाता है।

सत्र 2: 90 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग
और टेन्टमेकर मैन्युअल

झुंड की चरवाही

शिक्षक–प्रशिक्षक द्वारा अध्यापन (भाग 1)

रूपरेखा:
क. विभाग का परिचय
ख. आदर्श पाठ

क. इस विभाग का परिचय (5 मिनट)

- स्पष्ट कीजिये कि यह विभाग दो भागों में विभाजित किया जायेगा जिन्हें सेमिनार के चौथे और पांचवें दिन पढ़ाया जायेगा।
  - भाग 1: पाठ 14 से 18
  - भाग 2: पाठ 1–13 और 19–32
- यीशु ने पतरस से झुण्ड की चरवाही करने कहा था (यूहन्ना 21:15–17)
- चरवाहा होने की एक जिम्मेवारी यह है कि अपने झुण्ड के सदस्यों को अन्य लोगों को यीशु के लिये खोजने और उन्हें शिष्य बनाने के लिये सिखाना।
- स्पष्ट कीजिये कि पीबीएस अयाजकीय पास्टर्स को विश्वासियों के झुण्ड की चरवाही करने के लिये तैयार करती है। विश्वासियों का झुण्ड रविवार को, और कदाचित बुधवार को भी, एकत्रित होगा। अन्य दिनों में, झुण्ड संसार के ऐसे लोगों के मध्य होगा जिन्हें प्रभु की आवश्यकता है। इसलिये चरवाहे के लिये आवश्यक है कि अपने झुण्ड को यीशु मसीह की गवाही देने के लिये भी तैयार करे।
- ''झुंड की चरवाही'' यह विभाग पीबीएस की पाठ्यपुस्तक में है और इस में विश्वासियों के ''झुण्ड'' की चरवाही कैसे करें इसके संबंध में 40 व्यावहारिक उपयोग के पाठ दिये गये हैं। विश्वासियों का ''झुण्ड'' इस प्रकार हो सकता है:
  - एक छोटे देहात में कलीसिया
  - एक बड़े नगर में घरेलु कलीसिया
  - किसी भी अन्य प्रकार का मसीही विश्वासियों का समूह
- हर एक बार जब हम पाठ का आरंभ करेंगे, तब हम प्रार्थना करेंगे और परमेश्वर से मांगेंगे कि हमारा मार्गदर्शक और सहायक होवे। जैसे कि:

''पिता, तेरे वचन के लिये धन्यवाद, जो सत्य और सलाह और बुद्धि से भरपूर है; और तेरे पवित्र आत्मा के लिये धन्यवाद, जो हमारे हृदयों में निवास करता है और हमारे मनों को तेरी सुंदर उपस्थिति से भरता है। तू दयालु चरवाहा है, जो अपने झुण्ड की रखवाली करता है और अपने मेमनों को अपनी बाहों में उठा लेता है। अब हमारी सहायता कर, हम तुझ से बिनती करते हैं, जबकि हम इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर विचार करते हैं कि अयाजकीय पास्टर्स को उनके झुण्डों की चिंता करने के लिये तैयार करें और उन्हें प्रशिक्षित करें। जिन्हें तू ने हमारे सुपुर्द किया है उन से प्रेम करने में हमारी सहायता कर। होने दे कि हमारा उनकी चरवाही करना इसमें इस बात का प्रदर्शन हो कि तू कितने प्रेम से और कोमलता से हमारी चिंता करता है। आमीन।''

पूछिये:
हम किस प्रकार के पास्टर्स प्रशिक्षित करना चाहते हैं? हम अपने प्रशिक्षण में किन गुणों और कुशलताओं पर जोर देंगे?
उत्तर दीजिये: पास्टर होने में विभिन्न प्रकार के अनेक सेवाकार्य और भूमिकायें निभानी होती है।
स्पष्ट कीजिये:
कोई भी दो पास्टर्स एक समान नहीं होते हैं। कुछ बहुत अच्छे प्रचारक और बाइबल शिक्षक होंगे, जबकि कुछ प्रार्थना सेवकाइयों में, कुछ लोगों को मसीह के लिये जीतने में या कुछ सलाहकार होने में या कुछ अन्य बहुतेरी सेवकाइयों में श्रेष्ठ होंगे।

- चार मूलभूत विशेषताएं, जो उस प्रकार के पास्टर्स का वर्णन करेंगी जैसे हम तैयार करना चाहते हैं, वे अंग्रेजी के उन अक्षरों से आरंभ होती है जिन से अंग्रेजी का "HUGS" शब्द बनता है:

○ हृदय	○ "H" = Heart
○ अनिवार्य विरोध	○ "U" = Unavoidable opposition
○ आत्मिक वरदान	○ "G" = Spiritual gifts
○ सेवक–नेतृत्व	○ "S" = Servant leadership

- हृदयः पास्टर के हृदय का संबंध उसके मसीह के साथ की चाल से, परमेश्वर के साथ के प्रेम से, और उसके विश्वास से होता है।

> गवाहीः अपने जीवन के अनुभवों में से किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में विद्यार्थियों को बताइये जो एक पास्टर का हृदय प्रदर्शितत करता है।

- अनिवार्य विरोधः आत्मिक नेतृत्व की कोई भी जिम्मेवारी, जैसे कि, पास्टर होना, आत्मिक युद्ध के हमलों और विरोध को उत्पन्न करती ही है जिसके साथ परीक्षाएं भी आती हैं। 1 पतरस 5:8 और इफिसियों 6:13–18 को पढ़िये।
- आत्मिक वरदानः प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को सिखाइये कि अपने उन क्षेत्रों में वृद्धि करें जिन में उन्हें पवित्र आत्मा ने विशेष वरदान दिये हैं। प्रशिक्षार्थियों को प्रोत्साहित कीजिये कि वे और उनके भावी विद्यार्थी भी अपने विशिष्ट वरदानों का विकास करेंगे और साथ ही अन्य बातों की ओर भी ध्यान देंगे जिनमें वृद्धि करने की आवश्यकता है। इफिसियों 4:11 पढ़िये ।
- सेवक–नेतृत्वः ईश्वरीय नेतृत्व यह सेवकपन से भरा हुआ नेतृत्व हेाता है। यीशु ने शिष्यों के पैर धोये, दाऊद राजा बनने के पहले एक चरवाहा था, बिली ग्राहम अपने कॉलेज में मात्र अतिथियों का स्वागत करने वाली टीम के सदस्य थे।

ख. आदर्श पाठः पाठ क्रमांक 14 से 17 (40 मिनट)

पाठ 14: गवाही क्यों दें? और पाठ 15: आत्मा जीतने वालों को काम में लगाना

- कक्षा को दो समूहों में विभाजित कीजिये। उन्हें पाठ 14 और पाठ 15 का अध्ययन करने के लिये 10 मिनट का समय दीजिये। तब कक्षा को एक साथ बुलाकर आदर्श पाठ आरंभ कीजिये।
- यशायाह 6:8 को एक साथ पढ़िये: "मैं यहां हूं! मुझे भेज।"
- चार्ट को दिखाते हुये पाठ्यपुस्तक से मुख्य बातों को सिखाइये।

आत्मा जीतने वाले लोगों को कैसे तैयार करें

1. अपने उदाहरण के द्वारा अगुवाई कीजिये।
2. आत्मा जीतना इस विषय पर उपदेश दीजिये।
3. आत्मा जीतने का प्रशिक्षण दीजिये।
4. आत्मा जीतना इस विषय पर पुस्तकें या लेख दीजिये।

पाठ 16: आत्मा जीतने के कारण

- "आत्माा जीतने के 7 कारण" यह चार्ट दिखाइये।
- पाठ्यपुस्तक से मुख्य बातों को पढ़ाइये।
- पाठ्यपुस्तक में दी गई रूपरेखा में किस प्रकार विषय–वस्तु, उदाहरण और स्पष्टिकरण को जोड़ना है इसका उदाहरण नीचे दिया गया है:

> - पाठ्यपुस्तक से पाठ की प्रस्तावना का प्रथम वाक्य पढ़िये।
> - प्रशिक्षार्थियों को, बाइबल से उन वचनों को पढ़ने कहीये जो दिये गये इस कथन को आधार देते हैं: लूका 5:10, प्रेरितों 5:14, यूहन्ना 1:41–42, और नीतिवचन 11:30
> - प्रस्तावना के इस प्रथम कथन पर संक्षिप्त चर्चा कीजिये।

- इस बात पर जोर दीजिये कि पास्टर के लिये यह आवश्यक है कि आत्माओं को जीतने में अपने लोगों की अगुवाई करे। पढ़िये: 1 पतरस 2:5–9

आत्मा जीतने के 7 कारण

1. प्रत्येक आत्मा का मूल्य: एक आत्मा का मूल्य संपूर्ण जगत के सारे धन से अधिक है।
2. नरक की वास्तविकता: आज बहुतेरे लोग नरक के अस्तित्व का इन्कार करना चाहते हैं। यदि आप को कोई रोग है परंतु आप कहते हैं, ''मुझे यह रोग नहीं है,'' तो इससे यह सच्चाई नहीं बदलती कि आपको वह रोग है। यदि कोई आत्मा यीशु का इन्कार करती है तो आत्मा नरक में जायेगी। (मरकुस 9:47–48; मत्ती 25:41; लूका 16:23; इत्यादि)
3. स्वर्ग की अत्यंत महिमा: स्वर्ग भी एक वास्तविक स्थान है और वहां की अत्यंत महिमा वर्णन से बाहर है। (लूका 23:43; प्रकाशित 21:4; 21:21–25; इत्यादि)
4. प्रत्येक पापी के लिए मसीह ने क्रूस पर सही यातनाएँ: यीशु ने सब के लिये यातनाएं सही हैं इसलिये हमें जगत के सब लोगों के पास जाना आवश्यक है।
5. इस संसार का खोखलापन और मूर्खता: इस संसार का सुख–विलास घास के समान मुरझा जाता है।
6. स्वर्ग में अपने परिवार के सारे सदस्य हो ऐसी इच्छा: जब यीशु फिर से आयेगा, मात्र वे ही स्वर्ग जायेंगे जिन्होंने मसीह में विश्वास किया है। यह अत्यंत, अविलम्ब आवश्यक है कि हम अपने रिश्तेदारों को मसीह के लिये जीत लें।
7. व्यक्तिगत पुरस्कार: विश्वासयोग्य आत्मा–जीतने वालों को व्यक्तिगत पुरस्कार दिया जायेगा (दानियेल 12:3)।

- आत्मा जीतने वाले बनने के लिये आवश्यक बातें बताने वाला चार्ट दिखाइये।
- पाठ्यपुस्तक से मुख्य बातों को सिखाइये।
- अपनी शिक्षा को मजबूत बनाने के लिये शास्त्र–वचनों का उपयोग कीजिये और विद्यार्थियों को अपनी बाइबल में उन वचनों को देखने प्रोत्साहित कीजिये।
- टिप्पणी: ऐसे कुछ अपवाद मिले हैं जिनमें आत्मा जीतने वालों के पास बाइबल का पर्याप्त ज्ञान नहीं था या उसे उपयोग में लाने की जानकारी नहीं थी। उदाहरण के लिये: यूहन्ना 9 में वह अंधा मनुष्य जिसे यीशु ने चंगा किया वह यीशु के बारे में बहुत अधिक नहीं जानता था, परंतु वह साहसी और स्पष्ट गवाह बना जब उसने फरीसियों से कहा, ''मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं। मैं एक बात जानता हूं कि मैं अन्धा था और अब देखता हूं।''
- पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न से या उसके समान ही किसी प्रश्न से समापन कीजिये, जैसे कि: क्या आप और अन्य किसी आवश्यकता या गुणविशेष के बारे में जानते हैं जो मसीह के एक अच्छे गवाह में होना चाहिये?''

आत्मा जीतने वाले बनने के लिये आवश्यक बातें

1. अवश्य है कि वह स्वयं उद्धार पाया हुआ हो और अपने उद्धार के प्रति सुनिश्चित हो।
2. अवश्य है कि वह पवित्र जीवन व्यतीत करता हो। (भजन 24:3–5)
3. अवश्य है कि वह प्रेम की आत्मा में कार्य करे। (1 यूहन्ना 4:7–8)
4. अवश्य है कि उसे बाइबल का पर्याप्त ज्ञान तथा उसे उपयोग में लाने की जानकारी हो।
5. अवश्य है कि वह प्रार्थना करने वाला जन हो।
6. अवश्य है कि वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो।
7. अवश्य है कि उसमें खोई हुई आत्माओं के लिए दया, करुणा हो।

- वह चार्ट दिखाइये जिसमें उन सात कदमों को दिखाया गया हो जिसके द्वारा कोई व्यक्ति गवाही के जीवन की ओर बढ़ता है।
- पाठ्यपुस्तक से मुख्य बिन्दुओं को पढ़ाइये।

एक गवाह का जीवन कैसे जीये

1. बपतिस्मा लीजिये।
2. कलीसिया से जुड़कर उसमें नियमित सहभागी होइये।
3. प्रार्थना सभाओं (बाइबल अध्ययन, छोटे समूह, शिष्यता समूह) में कम–से–कम सप्ताह में एक बार उपस्थित रहिये।
4. प्रभु–भोज में नियमित भाग लीजिये।
5. जब कभी संभव हो, गवाहियों की सभाओं में उपस्थित रहिये।
6. मित्र, रिश्तेदार और पडोसियों को गवाही दीजिये।
7. यह सब (बपतिस्मा को छोड़कर बाकी सब) बार–बार करते रहिये।

पाठ 17: गवाही कैसे दें?

- पाठ्यपुस्तक से मुख्य बातों को सिखाइये। इस बात पर जोर दीजिये कि ''चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग'' में बताये गये गवाही देने के सात तरीके इसलिये हैं कि स्त्री–पुरुषों को मसीह में विश्वास करने की ओर लाया जाये।
- प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि यह पाठ्यक्रम मात्र आत्मा जीतने वाले बनने के लिये ही नहीं है, परंतु उन्हें यह सिखाने के लिये है कि वे दूसरों को कैसे सिखायेंगे कि वे भी आत्मा जीतने वाले बनें।
- प्रशिक्षार्थियों को एक लघु–नाटक का प्रदर्शन दिखाइये। तीन सहयोगियों को भाग लेने हेतु आमंत्रित कीजिये। नीचे दिये गये लघु–नाटक के वृत्तांत को पढ़कर भी यह प्रर्दशित किया जा सकता है। तथापि, यह बेहतर होगा कि शिक्षक इसे प्रस्तुत करने के पहले इन तीन गवाहियों से परिचित हो जाये।
- इस का उद्देश्य यह है कि व्यक्तिगत गवाही और व्यक्तिगत उद्धार की गवाही में अंतर बताया जाये।

लघु–नाटक प्रदर्शन

1. पहले व्यक्ति (एक युवक) का जन्म मसीही परिवार में ही हुआ था। उसे अभिमान है कि वह जन्म से ही मसीही है और अपनी बाइबल को नियमित पढ़ता है। यह आपको बताता है कि वह अपनी कलीसिया में युवाओं का अगुवा है। जब उससे व्यक्तिगत पापों की क्षमा के बारे में पूछा जाता है तो वह कहता है कि वह पापी नहीं है क्योंकि उसका जन्म मसीही परिवार में हुआ है। ऐसे लगता है कि उसे अभी तक उद्धार का अनुभव नहीं हुआ है।

2. इस दूसरे व्यक्ति (एक युवती) के पास अद्‌भुत चंगाई का अनुभव है। उसे एक ऐसी बीमारी थी कि जो ठीक नहीं हो सकती थी, जबकि वह अनेक डॉक्टरों के पास, मंदिरों में और अन्य बाबा और साधुओं के पास भी गई थी। तब किसी ने उसे एक मसीही समूह के बारे में बताया जिसका पास्टर यीशु मसीह के नाम से चंगाई की प्रार्थना करता था। उसका परिवार उसे उस पास्टर के पास ले गया जहां उस पास्टर ने उन्हें चंगाई के लिये यीशु में विश्वास करने कहा। इसके बाद, वह चंगी हो गई! तब से वह उस कलीसिया में जाने लगी। वह दावा करती है कि उसका पूरा विश्वास है कि यीशु चंगाई करने वाला ईश्वर है, परंतु उसे पश्चताप और पापों की क्षमा का अनुभव नहीं हुआ है।

3. इस तीसरी व्यक्ति (एक महिला) का भी जन्म मसीही परिवार में हुआ था परंतु उसने अपनी युवावस्था में मसीह में नये जन्म का भी अनुभव किया है। वह आपको बताती है कि उसने बचपन से यीशु के बारे में सुना था और नियमित संडे–स्कूल में जाती थी। वह बताती है कि जैसे–जैसे वह बड़ी होती गई, वह गलत आदतों में पड़ गई। तब एक दिन, उसने एक उपदेश सुना जिसमें प्रचारक ने यीशु को व्यक्तिगत उद्धारकर्ता और प्रभु स्वीकार करने की आवश्यकता को बताया। उसने अपने पापों से पश्चाताप किया और यीशु को उसका उद्धारकर्ता और प्रभु होने के लिये स्वीकार किया। वह आपको बताती है कि ऐसा करने के बाद से उसका जीवन बदल गया और वह प्रभु की आज्ञाओं को मानने का चालचलन चलती रही है।

इस लघु–नाटक के प्रदर्शन के बाद कहिये:

किस व्यक्ति के पास उद्धार की गवाही है?

आप जिम्मेवार है कि भावी अगुवों और पास्टर्स को यह सिखायेंगे कि एक ही कलीसिया के भीतर ऐसी अलग–अलग गवाहियों के प्रति कैसा प्रतिउत्तर देंगे ताकि जिनका उद्धार नहीं हुआ है उन्हें प्रभु में उद्धार पाने की ओर अगुवाई करेंगे।

उन तरीकों के बारे में विचार कीजिये जिनके द्वारा आप दूसरों को सच्चे पश्चाताप, पापों की क्षमा और नये जीवन हेतु यीशु की ओर फिरने के लिये प्रोत्साहित कर सकेंगे।

सत्र 3: 150 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

झुंड की चरवाही

शिक्षक–प्रशिक्षक द्वारा अध्यापन (भाग 2)

रूपरेखा:

क. आदर्श पाठ: पाठ 18

ख. गवाही देने की पांच पद्धतियां

क. आदर्श पाठ: पाठ 18

पाठ 18: गवाही देने की पद्धतियां

- पाठ्यपुस्तक से मुख्य बातों को पढ़ाइये। प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि वे न मात्र इन पद्धतियों का उपयोग स्वयं करेंगे परंतु दूसरों को भी इनका उपयोग करना सिखायेंगे।

ख. गवाही देने की पांच पद्धतियां

पद्धती 1: चार आत्मिक नियम

- जिस प्रकार भौतिक नियम होते हैं जो भौतिक जगत को निर्धारित करते हैं, उसी प्रकार आत्मिक नियम होते हैं जो लोगों के परमेश्वर के साथ के संबंध को निर्धारित करते हैं।
- सुसमाचार–प्रचार की यह पद्धति बिल ब्राइट के द्वारा तैयार की गई थी और यह सुननेवालों को सुअवसर प्रदान करती है कि सुसमाचार के प्रति वे अपनी प्रतिक्रिया प्रगट करें।
- इन नियमों को उसी क्रम में बताना चाहिए जैसे वे नीचे लिखे गए हैं, क्योंकि प्रत्येक अगला नियम उसके पहले के नियम पर आधारित है।
- प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि यह महत्वपूर्ण है कि सुनने वालों को पूछा जाये कि क्या वे ''चार आत्मिक नियमों'' को सुनने के बाद मसीह को स्वीकार करना चाहेंगे? जो ''हां'' कहते हैं उनके साथ प्रार्थना कीजिये।
- ''चार आत्मिक नियम'' इस पद्धति का आदर्श प्रस्तुतिकरण करने के बाद, कक्षा को कहिये कि जोड़ी–जोड़ी बनाकर आपस में 4–5 मिनट तक इस पद्धति का अभ्यास करेंगे।

1. परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और आपके जीवन के लिए अद्‌भुत योजना प्रस्तुत करता है (यूहन्ना 3:16; यूहन्ना 10:10)

2. मनुष्यजाति पापी है और परमेश्वर से दूर कर दी गई है। अतः हम परमेश्वर के प्रेम तथा अपने जीवन के लिए उसकी योजना को जान नहीं सकते और अनुभव नहीं कर सकते (रोमियों 3:23; रोमियों 6:23)।

3. यीशु मसीह ही वह एकमात्र प्रबन्ध है जो परमेश्वर ने मनुष्यजाति की पाप–क्षमा के लिए किया है। उसके द्वारा हम अपने जीवन के लिये परमेश्वर के प्रेम तथा योजना को जान सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं (रोमियों 5:8; 1 कुरिन्थियों 15:3–6; यूहन्ना 14:6)।

4. आवश्यक है कि हम व्यक्तिगत रीति से यीशु को उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करें तब हम अपने जीवन के लिये परमेश्वर के प्रेम तथा योजना को जान सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं (यूहन्ना 1:12; इफि. 2:8–9; यूहन्ना 3:18; प्रकाशित. 3:20)।

पद्धति 2: भाब्द–रहित पुस्तक

- 4 से 5 मिनट तक ''चार आत्मिक नियम'' इस पद्धति का अभ्यास कर लेने के बाद, प्रशिक्षार्थियों को अपने स्थान पर लौटने कहिये ताकि दूसरी पद्धति को सीखेंगे।
- प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि वे ''शब्द–रहित पुस्तक'' इस पद्धति का न मात्र स्वयं उपयोग करेंगे परंतु दूसरों को भी इसका उपयोग करना सिखायेंगे।
- स्पष्ट कीजिये कि वे जब इस पद्धति का उपयोग किसी को व्यक्तिगत रीति से सुसमाचार सुनाने के लिये करना चाहेंगे तब वे अपनी जेब में आ सकने वाले आकार की रंगीन पुस्तिका रंगीन कपडों या पेपर के द्वारा बनाकर रख सकते हैं या रंगीन फीतों के द्वारा इसे तैयार कर सकते हैं।
- स्पष्ट कीजिये कि यदि वे कलीसिया के भीतर या किसी सभा या कार्यक्रम में इसका प्रदर्शन करना चाहते हैं, तो पांच रंगों के बड़े आकार के कपड़े या पेपर को पकड़कर दिखाने के लिये पांच सहयोगियों की सहायता ले सकते हैं।
- प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि यह महत्वपूर्ण है कि ''शब्द–रहित पुस्तकं'' का प्रदर्शन करने के बाद सुनने वालों को पूछा जाये कि क्या वे मसीह को स्वीकार करना चाहेंगे? जो ''हां'' कहते हैं उनके साथ प्रार्थना कीजिये।
- ''शब्द–रहित पुस्तकं'' इस पद्धति का आदर्श प्रस्तुतिकरण करने के बाद, कक्षा को कहिये कि जोड़ी–जोड़ी बनाकर आपस में 4–5 मिनट तक इस पद्धति का अभ्यास करेंगे।

पीला या ''सुनहरा'' – यह पीला रंग मुझे सोने का स्मरण दिलाता है। सोना बहुमूल्य है और मुझे स्वर्ग का स्मरण दिलाता है। प्रकाशितवाक्य 21:21 में हम एक नगर के बारे में सुनते हैं जो स्वर्ग से नीचे उतरता है, जिसकी सड़के शुद्ध सोने की हैं। बाइबल हमें बताती है कि स्वर्ग एक बेहतरीन, अद्भुत स्थान है। स्वर्ग में आंसू नहीं हैं, भूख, रोग, अंधकार और मृत्यु नहीं हैं। स्वर्ग में, परमेश्वर की उपस्थिति में अनंत जीवन है। यही परमेश्वर आप से और मुझ से प्रेम करता है और चाहता है कि हम उस स्थान में जायें।

काला या ''अंधकार''–परंतु एक बात है जो हमें वहां जाने से रोकती है। यह काला रंग मुझे पाप का स्मरण दिलाता है। पाप हमारे जीवन में अंधकार है। जब हम अपने सारे पापों के साथ अपने पवित्र परमेश्वर के समक्ष खड़े होते हैं, वह क्या कहेगा? उसे यही कहना पड़ेगा, ''स्वर्ग से दूर हो जाओ। इस पवित्र स्थान से दूर हो जाओ और उस स्थान में जाओ जो दुष्टों के लिये और शैतान के लिये तैयार किया गया है––नरक!''

लाल – परंतु बात यहीं समाप्त नहीं होती है। यह लाल रंग मुझे उस मार्ग के बारे में बताता है जो परमेश्वर ने आपके और मेरे उद्धार के लिये तैयार किया है। यह लाल रंग मुझे यीशु मसीह के लहू का स्मरण दिलाता है। रोमियो 5:8 में हम पढ़ते हैं, ''जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।'' यूहन्ना 3:16 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपने एकलौते पुत्र यीशु को भेजा कि क्रूस पर अपना प्राण दे। जब यीशु ने क्रूस पर अपना प्राण दिया, उसने हम सब के पापों को अपने ऊपर उठा लिया। जबकि यीशु क्रूस पर मरा और कब्र में गाड़ा गया, वह तीसरे दिन पुनः जी उठा। यीशु जीवित उद्धारकर्त्ता है। वह – आपको आपके पापों से उद्धार देने के लिए – आपका उद्धारकर्त्ता बनना चाहता है।

सफेद या ''स्वच्छ''– यह सफेद रंग मुझे पवित्रता का स्मरण दिलाता है। आवश्यक है कि हम विश्वास करें कि यीशु ने अपना लहू हमें हमारे पापों से शुद्ध करने के लिये बहाया। हमें अपने पापों के लिये क्षमा मांगने की आवश्यकता है। जब हमारे हृदय पश्चतापि होते हैं और हम यीशु में सच्चा विश्वास रखते हैं, तब हम अपने पापों से शुद्ध किये जाते हैं।

हरा – यह हरा रंग मुझे स्मरण दिलाता है कि जो कोई मसीह यीशु में है वह नयी सृष्टि है। यह हरा रंग मुझे उन सारे पेड़–पौधों का स्मरण दिलाता है जो बढ़ते जाते हैं। यीशु मसीह में जो नया जीवन होता है वह भी बढ़ता जाता है। वह शिष्यता का जीवन होता है। और जब हम इस नये जीवन में लगातार बने रहते हैं, तब एक दिन, जब इस पृथ्वी पर का जीवन समाप्त होगा, तब हम उस स्थान स्वर्ग में जायेंगे जो परमेश्वर ने हमारे लिये तैयार किया है (पीले रंग की ओर संकेत कीजिये)। क्या आप इस स्थान में रहने जाना चाहेंगे? क्या आप अपने पापों से पश्चाताप करना चाहेंगे? क्या आपने कभी पश्चाताप किया है? जो आप को शुद्ध करेगा वह एकमात्र उपाय केवल यीशु का लहू है। कदाचित आपने अपने बचपन से यीशु के बारे में सुना होगा–परंतु क्या आपने इस पवित्रता का, अपने हृदय में पापों से शुद्ध किये जाने का अनुभव किया है? क्या आप अभी ऐसा करना चाहेंगे? यदि आप ऐसा चाहते हैं, तो कृपया इस प्रार्थना को कीजिये। अपनी आंखों को बंद कीजिये और प्रार्थना कीजिये।

पद्धति 3: पांच उंगलियों द्वारा सुसमाचार

- 4 से 5 मिनट तक ''शब्द–रहित पुस्तक'' इस पद्धति का अभ्यास कर लेने के बाद, प्रशिक्षार्थियों को अपने स्थान पर लौटने कहिये ताकि गवाही देने की तीसरी पद्धति को सीखेंगे।
- प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि वे ''पांच उंगलियों द्वारा सुसमाचार'' इस पद्धति का न मात्र स्वयं उपयोग करेंगे परंतु दूसरों को भी इसका उपयोग करते हुये गवाही देना सिखायेंगे।
- इस पद्धति का परिचय देते हुये इस बात पर जोर दीजिये कि अपने एक हाथ की पांच उंगलियों का उपयोग करते हुये, उद्धार के लिये परमेश्वर के द्वारा ठहराई गई योजना को बताना संभव है।
- तैयार किये गये चार्ट को दिखाते हुये ''पांच उंगलियों द्वारा सुसमाचार'' पद्धति को सिखाइये।
- प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि यह महत्वपूर्ण है कि ''पांच उंगलियों द्वारा सुसमाचार'' का प्रदर्शन करने के बाद सुनने वालों को पूछा जाये कि क्या वे मसीह को स्वीकार करना चाहेंगे? जो ''हां'' कहते हैं उनके साथ प्रार्थना कीजिये।
- ''पांच उंगलियों द्वारा सुसमाचार'' इस पद्धति का आदर्श प्रस्तुतिकरण करने के बाद, कक्षा को कहिये कि जोड़ी–जोड़ी बनाकर आपस में 4–5 मिनट तक इस पद्धति का अभ्यास करेंगे।

''पांच उंगलियों द्वारा सुसमाचार''

पहली उँगली – परमेश्वर आपसे प्रेम करता है

''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' (यूहन्ना 3:16)

दूसरी उँगली – सब ने पाप किया है

''सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।'' (रोमियों 3:23)

तीसरी उँगली – यीशु मसीह ने आपके पापों की कीमत चुकाने के लिए अपना प्राण दिया

''पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, और गाड़ा गया; और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।'' (1 कुरिन्थियों 15:3,4)

चौथी उँगली – विश्वास कीजिए कि यीशु मसीह आपके पापों के लिए मरा

''जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।'' (यूहन्ना 1:12)

पाँचवी उँगली – जब आप यीशु में विश्वास करते है, तब आप अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं

''पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।'' (रोमियों 6:23)

पद्धति 4: उद्धार का रोमी रास्ता

- 4 से 5 मिनट तक ''पांच उंगलियों द्वारा सुसमाचार'' इस पद्धति का अभ्यास कर लेने के बाद, प्रशिक्षार्थियों को अपने स्थान पर लौटने कहिये ताकि गवाही देने की चौथी पद्धति को सीखेंगे।
- प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि वे ''उद्धार का रोमी रास्ता'' इस पद्धति का न मात्र स्वयं उपयोग करेंगे परंतु दूसरों को भी इसका उपयोग करते हुये गवाही देना सिखायेंगे।
- प्रशिक्षार्थियों को बताइये कि यह पद्धति ऐसा तरीका है जिसमें रोमियों की पुस्तक के चार वचनों का उपयोग करते हुये उद्धार का मार्ग बताया जाता है।
- रोमियों के चार वचनों के लिये तैयार किये गये चार्ट को दिखाते हुये इस पद्धति को सिखाइये।
- प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि यह महत्वपूर्ण है कि ''उद्धार का रोमी रास्ता'' का प्रदर्शन करने के बाद सुनने वालों को पूछा जाये कि क्या वे मसीह को स्वीकार करना चाहेंगे? जो ''हां'' कहते हैं उनके साथ प्रार्थना कीजिये।
- ''उद्धार का रोमी रास्ता'' इस पद्धति का आदर्श प्रस्तुतिकरण करने के बाद, कक्षा को कहिये कि जोड़ी–जोड़ी बनाकर आपस में 4–5 मिनट तक इस पद्धति का अभ्यास करेंगे।

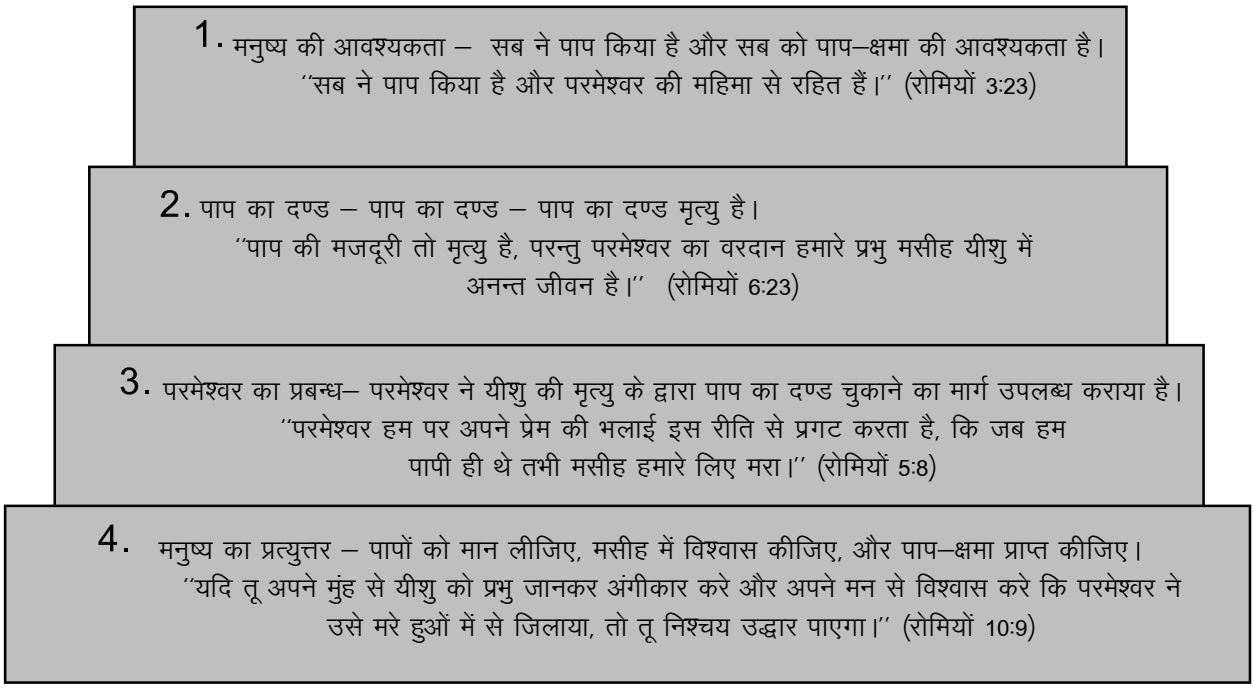

1. मनुष्य की आवश्यकता – सब ने पाप किया है और सब को पाप–क्षमा की आवश्यकता है।
''सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।'' (रोमियों 3:23)

2. पाप का दण्ड – पाप का दण्ड – पाप का दण्ड मृत्यु है।
''पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।'' (रोमियों 6:23)

3. परमेश्वर का प्रबन्ध– परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु के द्वारा पाप का दण्ड चुकाने का मार्ग उपलब्ध कराया है।
''परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।'' (रोमियों 5:8)

4. मनुष्य का प्रत्युत्तर – पापों को मान लीजिए, मसीह में विश्वास कीजिए, और पाप–क्षमा प्राप्त कीजिए।
''यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।'' (रोमियों 10:9)

पद्धति 5: रेखांकित किया हुआ नया नियम

- 4 से 5 मिनट तक ''उद्धार का रोमी रास्ता'' इस पद्धति का अभ्यास कर लेने के बाद, प्रशिक्षार्थियों को अपने स्थान पर लौटने कहिये ताकि गवाही देने की पांचवीं पद्धति को सीखेंगे।
- प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि वे ''रेखांकित किया हुआ नया नियम'' इस पद्धति का न मात्र स्वयं उपयोग करेंगे परंतु दूसरों को भी इसका उपयोग करते हुये गवाही देना सिखायेंगे।
- प्रशिक्षार्थियों को बताइये कि इस पद्धति में बाइबल में फितों के चिन्ह लगाकर नया नियम के मुख्य पदों तक पहुंचना आसान बनाया जाता है ताकि उन्हें नीचे दिये गये क्रम में बता सकेंगे:
    - रोमियों 3:23;
    - रोमियों 6:23;
    - यूहन्ना 1:12;
    - 1 यूहन्ना 1:9;
    - प्रकाशितवाक्य 3:20;
    - 1 यूहन्ना 5:10–13
- कक्षा को अपना रेखांकित किया हुआ नया नियम दिखाइये ताकि वे सुसमाचार सुनाने की इस पद्धति को समझ सकेंगे।

विभाग 4 – झुण्ड की चरवाही का समापन:

- इस पाठ का समापन करते हुये प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि यीशु मसीह के लिये गवाही देना महत्वपूर्ण है।
- यह हमें दिया गया सम्मान है कि हम परमेश्वर के द्वारा मनुष्य के साथ मेल कर लिये जाने के मिशन में भागीदार बनाये गये हैं।
- हमारे लिये आवश्यक है कि हम प्रेम में होकर आतुर हों कि औरों के साथ मिलकर इस काम में सहभागी हो जायें।
- हमारे लिये आवश्यक है कि हम आतुर हों कि औरों को आमंत्रित करें और सिखायें कि इस अद्भुत जिम्मेवारी में सहभागी हो जायें ताकि संपूर्ण जगत में मसीह यीशु के सुसमाचार को प्रचार करें।
- इस विभाग का समापन व्यक्तिगत विचार प्रगट करने से, प्रार्थना और गीत से कीजिये।

सत्र 4: 50 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

धर्मोपदेशकला

शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापन

रूपरेखा:

क. व्याख्यात्मक उपदेश का परिचय

ख. इन्डक्टीव बाइबल स्टडी के तत्व

क. व्याख्यात्मक उपदेश का परिचय

- प्रशिक्षार्थियों को उपदेश के पांच प्रकार स्मरण दिलाइये: जीवन–वृत्तांत संबंधी उपदेश, वर्णनात्मक उपदेश, पाठ–विषयक उपदेश, प्रासंगिक या विषयसंबंधी उपदेश और व्याख्यात्मक उपदेश।
- व्याख्यात्मक उपदेश का परिचय ''व्याख्यात्मक'' इस शब्द की परिभाषा के साथ आरंभ कीजिये: ''व्याख्यात्मक'' का अर्थ होता है ''किसी बात को स्पष्ट करने का या उसका वर्णन करने का उद्देश्य रखना'' और उपदेश का अर्थ है ''किसी नैतिक विषय पर व्याख्यान देना ताकि श्रोताओं को किसी प्रतिउत्तर के लिये प्रोत्साहित किया जाये।''
- व्याख्यात्मक का अर्थ वादविवाद या अपने विचार बताना नहीं है, परंतु पवित्रशास्त्र का सही स्पष्टिकरण देना है।
- प्रशिक्षार्थियों से कहिये कि वे (और वे भावी शिक्षक भी जिन्हें वे प्रशिक्षित करेंगे) परमेश्वर के वचन पर आधारित निष्कर्ष निकालने और प्रतिउत्तर देने की ओर लोगों की अगुवाई कर सकते हैं।
- इन्डक्टीव बाबइल स्टडी (आई. बी. एस.) के साधन और पद्धति इस बात को निश्चित बनाती है कि व्याख्यात्मक उपदेश पवित्रशास्त्र पर ही आधारित हो। आई. बी. एस. पद्धति के तीन कदमों को दर्शाने वाला चार्ट प्रस्तुत कीजिये।

इन्डक्टीव बाबइल स्टडी पद्धति

1. यह क्या कहता है? (अवलोकन)
2. इसका अर्थ क्या है? (व्याख्या)
3. इसे मैं अपने जीवन में कैसे लागू करूंगा? (लागूकरण)

- **अवलोकन: यह क्या कहता है?**
  - चुना गया शास्त्रपाठ पढ़िये। पुनः पढ़िये। उसके साथ सुपरिचित हो जाइये।
  - चुने गये शास्त्रपाठ के आस–पास का संदर्भ पढ़िये।
  - आपके मन में, पढ़ते समय जो प्रश्न आते हैं उन्हें लिख लीजिये।
  - साहित्य का प्रकार पहचानिये।
  - संदर्भ का वर्णन कीजिये।
  - लेखक का अध्ययन कीजिये।
  - प्राप्तकर्ता का अध्ययन कीजिये।
  - अन्य लोगों को पहचानिये।
  - मुख्य शब्दों और वाक्यांशों को चिन्हित कीजिये।
  - प्रश्न कीजिये: क्या? कहां? क्यों? कौन? कब? और कैसे?
  - इस पुस्तक का या पत्री का मूल–विषय क्या है?
  - आप जिस अध्याय से बोलने वाले हैं उसका मुख्य विषय क्या है?
  - आपके उपदेश के पाठ का मुख्य बिंदु क्या है?
  - प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये: परमेश्वर का मुख्य बिन्दु ही मेरा मुख्य बिन्दु होना चाहिये क्योंकि मैं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता/करती हूं।

- **व्याख्याः इसका अर्थ क्या है?**
    - o व्याख्या करने का अर्थ अपने विचार बताना नहीं होता है। आवश्यक है कि जो पवित्रशास्त्र में बताया गया है उससे आगे हम ना बढ़ें। व्याख्या का संबंध बाइबल के उस भाग को लिखने वाले लेखक के उद्देश्य से होता है।
    - o आई. बी. एस. के सात तत्व व्याख्या करना सिखाते हैं।

- **लागूकरणः इसे मैं अपने जीवन में कैसे लागू करूंगा?**
    - o लागूकरण का महत्व बताने के लिये याकूब 1:22–25 पढ़िये।
    - o आई. बी. एस. के लागूकरण कदम के लिये अगुवाई करने हेतु प्रशिक्षार्थियों को चार उपयोगी प्रश्न उपलब्ध कराइये।
        1. अब, इस पाठ को समझने के बाद, परमेश्वर मुझ से ''क्या'' चाहता है?
           ''क्या'' यह प्रश्न उस निर्देश में ध्यान केंद्रित करता है जो बाइबल के पाठ के साथ सीधे जुड़ता है – यही कि हमें लोगों को वही करने का निर्देश देना है जो वह बाइबल पाठ उनसे चाहता है।
        2. अब यह मैं ''कहां'' करूं, परमेश्वर मुझ से ''कहां'' इसका लागूकरण चाहता है?
           ''कहां'' यह प्रश्न विशिष्ट परिस्थिति में ध्यान केंद्रित करता होता है। यदि आप ''कहां'' से संबंधित लागूकरण नहीं देते हैं तो आपके निर्देश मात्र कल्पना रह जाते हैं। उदाहरण के लिये, ''अपने पड़ोसी से प्रेम कर'' यह एक व्यापक बात है। तथापि इस निर्देश के साथ यह कहना अधिक सहायक होगा, उदाहरण के लिये, कि ''अपने कार्य क्षेत्र में उन लोगों से प्रेम करो जो आपके विश्वास के कारण आपकी उपेक्षा करते हैं।'' अपने लागूकरण को विशिष्ट रीति से बताने में निश्चित रहिये। वास्तविक परिस्थिति में अपनी आज्ञाकारिता को समझने में लोगों की सहायता करना यह सर्वदा प्रभावी प्रचार का चिन्ह/लक्षण होता है।
        3. परमेश्वर जो चाहता है वह करना मेरे लिये ''क्यों'' आवश्यक है?
           ''क्यो'' यह प्रश्न प्रेरणा या कारण में ध्यान केंद्रित करता है। लागूकरण के लिये उचित कारण या प्रेरणा दीजिये। नियमों का पालन तो फरीसी भी कर सकते हैं। श्रोताओं को यह जानना आवश्यक है कि उन्हें लागूकरण का पालन करना क्यों आवश्यक है। अनुग्रह के द्वारा प्रेरणा दीजिये, दोषी ठहराते हुये या किसी बात का लालच दिखाते हुये नहीं।
        4. जो परमेश्वर चाहता है वह मैं ''कैसे'' कर सकता हूं?
           ''कैसे'' यह प्रश्न सक्षम बनाये जाने में ध्यान केंद्रित करता है। लोगों को मात्र यह मत बताइये कि उन्हें क्या करना है, परंतु यह भी बताइये कि कैसे करना है। व्यावहारिक कदम बताइये और आत्मिक स्रोत बताइये जो लागूकरण को शक्य बनाते हैं।

ख. आई. बी. एस. के सात तत्व

- आई. बी. एस. के सात तत्व दर्शाने वाला चार्ट दिखाइये। इन्हें शब्दों या चिन्हों या दोनों के द्वारा दर्शाइये।

आई. बी. एस. के सात तत्व

1. दिये गये पाठ के अर्थ को उसका संदर्भ निश्चत करता है। पाठ का संदर्भ पाठ को समझने के लिये और लागू करने के लिये अत्यंत महत्व का होता है।
2. सर्वदा परमेश्वर के वचन की संपूर्ण मनसा जानने का प्रयत्न कीजिये। मिलते जुलते हवालों से जांच लीजिये।
3. पवित्रशास्त्र का एक भाग कभी भी पवित्रशास्त्र के दूसरे भाग से विरोधी बात नहीं कहेगा। पवित्रशास्त्र को ही पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने दीजिये।
4. अस्पष्ट वाक्यों/अंशों पर अपने सिद्धांत/शिक्षा को आधारित मत कीजिये।
5. पवित्रशास्त्र का शब्दशः अर्थ बताइये/व्याख्या कीजिये, जब तक कि संदर्भ कोई और मांग नहीं करता।
6. दिये गये अंश में लेखक का निर्दिष्ट अर्थ क्या है इसे देखिये। इसके लिये शब्द का अध्ययन करना सहायक हो सकता है।
7. विश्वसनीय टीका (कमेंटरी) का उपयोग करते हुये, अथवा किन्हीं परिपक्व मसीहियों की सहायता से, अपने निष्कर्ष जांच लीजिये।

सत्र 5: 40 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

धर्मोपदेशकला

समूह कार्य

रूपरेखा:

क. प्रत्येक समूह उस दिन के लिये दिये गये अभ्यास–कार्य को पूरा करता है।

ख. प्रत्येक समूह पूरे किये गये अभ्यास–कार्य को संपूर्ण कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करता है।

क. समूह में अभ्यास–कार्य

- कक्षा को समूहों में विभाजित कीजिये और उन्हें प्रेरितों के काम 5:17–32 या लूका 19:1–10 से जानकारी एकत्रित करने कहिये। इसके लिये वे आई. बी. एस. के तीन कदम: अवलोकन, व्याख्या और लागूकरण का उपयोग करेंगे। (10 मिनट)
- इससे दो उद्देश्य पूरे होंगे: एक यह कि प्रशिक्षार्थियों को पवित्रशास्त्र से जानकारी एकत्रित करने का अभ्यास होगा, और दूसरा यह कि आगे की सेवकाई के लिये नये उपदेशों को बनाने के लिये उन्हें शास्त्रपाठ उपलब्ध होंगे।

ख. समूह प्रस्तुतिकरण

- प्रत्येक समूह, अपने कार्य को प्रस्तुत करने के लिये, अपने में से एक व्यक्ति को चुनेगा।
- प्रत्येक समूह को अपना कार्य प्रस्तुत करने के लिये 2 मिनट का समय दिया जायेगा।
- जब सब समूह अपना कार्य प्रस्तुत कर देंगे, उसके बाद उनके प्रस्तुतिकरण पर अपने विचार प्रगट कीजिये।
- प्रार्थना के साथ सत्र को समाप्त कीजिये और अगले दिन की शिक्षा के लिये उचित सूचना दीजिये।

विभाग पांच

सत्र 1: 60 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

डिनॉमिनेशनल संबंध

शिक्षक–प्रशिक्षक द्वारा अध्यापन

विभाग 5 का आरंभ आराधना और प्रार्थना से कीजिये (15 मिनट)

पुनरावलोकन प्रश्नोत्तरी खेल (10 मिनट)

- इससे संबंधित नियमों को विभाग 2 से देखिये। परिशिष्ट ''बी'' में कुछ प्रश्नों का सुझाव दिया गया है; आप स्वयं अपने प्रश्न भी तैयार कर सकते हैं।

पीबीएस पाठ्यपुस्तक से नीचे दिये गये बिन्दुओं को पढ़ाइये।

डिनॉमिनेशनल संबंध और एकता पर शिक्षा

- पीबीएस का प्रशिक्षण अनेक डिनॉमिनेशन्स् के मध्य दिया जाता है और इसलिये इस विभाग के पाठों को पीबीएस शिक्षकों के द्वारा अपने–अपने विशिष्ट डिनॉमिनेशन के अनुरूप तैयार किया जाना होगा।
- प्रशिक्षार्थियों को निम्नलिखित बातें बताइये:
    - इस विभाग में 20 पाठ हैं। पहले 10 पाठों का संबंध कलीसिया की संस्था से संबंधित है और अगले 10 पाठों का संबंध अयाजकीय पास्टर और डिनॉमिनेशन के बीच के रिश्ते से है।
- पाठ्यपुस्तक से इन 20 पाठों की संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत कीजिये। शिक्षक–प्रशिक्षक अपने प्रशिक्षार्थियों से उनके डिनॉमिनेशन के संबंध में जानकारी, जैसे कि डिनॉमिनेशन का इतिहास, संस्थागत ढांचा और कार्यप्रणाली, पूछ सकता है।
- कहिये कि यूहन्ना 17 में यीशु ने अपने अनुयायियों को एकता के लिये प्रार्थना करना सिखाया है, परमेश्वर से एकता और आपस में भी एकता, ताकि जगत में गवाह ठहर सकें। इसमें डिनॉमिनेशन्स् के भीतर की और आपस की एकता का भी समावेश है।
    - यह चार्ट दिखाइये जो दो प्रकार की एकता को दर्शाता है

- प्रशिक्षार्थियों से यूहन्ना 17:20–23 पढ़ने कहिये।
    - इस बात पर जोर दीजिये कि यीशु प्रार्थना कर रहा है कि कलीसिया एक हो।
    - क्यों? ताकि जगत यह जान ले कि यीशु को परमेश्वर ने भेजा और यह भी कि परमेश्वर जगत से वैसा ही प्रेम करता है जैसा कि उसने अपने पुत्र से प्रेम किया।
    - मुख्य बिन्दु: आवश्यक है कि हम जिन्हें प्रशिक्षित कर रहे हैं उनकी हम सहायता करें कि वे मसीह की देह को एक बनाने का हर प्रयास करेंगे। आवश्यकता है कि हम प्रार्थना करें! प्रार्थना करें कि परमेश्वर की कलीसिया एक की जाये!
- कलीसिया की एकता को दर्शाने वाले निम्नलिखित प्रदर्शनों में से एक को चुनिये। यूहन्ना 12:32 को मुख्य वचन लीजिये।

प्रदर्शन 1

- एक प्रशिक्षार्थी को एक कुर्सी पर बैठने कहिये और बताइये कि हम मान लेते हैं कि यह व्यक्ति यीशु को दर्शाता है।
- कक्षा को अपने प्रदर्शन के बारे में बताइये, और कहिये ''मैं ––– इस डिनॉमिनेशन से हूं। मैं अकेले, इस कुर्सी को बहुत ऊंचे तक नहीं उठा सकता हूं।''
- एक प्रशिक्षार्थी को बुलाइये जो कि किसी अन्य डिनॉमिनेशन से होगा, और कहिये ''मैं ––– इस डिनॉमिनेशन से हूं, परंतु मेरा मित्र ––––– इस डिनॉमिनेशन से है। हम दोनों मिलकर इस कुर्सी को थोड़ा और ऊंचे तक उठा सकते हैं। दोनो मिलकर कुर्सी को उठाइये।
- अन्य और 2 –3 प्रशिक्षार्थी को भी साथ बुलाकर ऐसे ही कीजिये अर्थात् कुर्सी को एक समूह के द्वारा उठाये जाने दीजिये। (सुरक्षा का ध्यान रखिये।)
- यूहन्ना 12:32 को पुनः पढ़िये। इस बात पर जोर दीजिये कि यीशु के नाम को ऊंचा उठाने के लिये आवश्यकता है कि हम सब एक कलीसिया के रूप में एक साथ आयें ताकि जगत उसे जान सके।

प्रदर्शन 2

- प्रशिक्षार्थियों से कहिये कि आप एक–दो–तीन कहेंगे और तीन कहते ही सब एक साथ अपने–अपने डिनॉमिनेशन का नाम जोर से पुकारेंगे।
- तीन तक गिनती गिने। आपके तीन कहते ही प्रशिक्षार्थी अपने–अपने डिनॉमिनेशन का नाम पुकारेंगे।
- इसके बाद प्रशिक्षार्थियों से कहिये कि आप एक–दो–तीन कहेंगे और तीन कहते ही सब एक साथ यीशु का नाम जोर से पुकारेंगे।
- तीन तक गिनती गिने। आपके तीन कहते ही सब प्रशिक्षार्थी यीशु का नाम पुकारेंगे।
- इस बात को बल देकर बताइये कि जब सब ने अपने–अपने डिनॉमिनेशन का नाम पुकारा था तब कैसे मात्र गड़बड़ और हुल्लड़ ही सुनाई दिया था।
- इसकी तुलना में, इस बात को जोर देकर बताइये कि जब सब ने अपनी आवाज को एक साथ यीशु के नाम को पुकारने में लगाया तब कितनी स्पष्टता से वही नाम सुनाई दिया था।

- इस प्रदर्शन के बाद, प्रशिक्षार्थियों को प्रोत्साहित कीजिये कि इन दो बातों के लिये प्रार्थना करेंगे, जैसे कि यीशु ने हमें कहा हैः फसल के लिये अधिक मजदूर भेज, और कलीसिया एक हो। एकसाथ संयुक्त प्रार्थना से इस सत्र को समाप्त कीजिये।

सत्र 2: 45 मिनट

पाठ्यपुस्तकः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

झुंड की चरवाही

शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापन (भाग 3)

रूपरेखाः

क. विभाग का परिचय

ख. एक जिम्मेदार चरवाहे की व्यक्तिगत विशेषताएं

ग. सर्वसामान्य सेवकाइयां और विशिष्ट सेवकाइयां

पीबीएस की पाठ्यपुस्तक से निम्नलिखित बातें पढ़ाइये

क. ''झुंड की चरवाही'' का परिचय (5 मिनट)

- स्पष्ट कीजिये कि अपनी कलीसिया का अच्छा चरवाहा होने के लिये अयाजकीय पास्टर में कुछ विशिष्ट गुणों का होना आवश्यक है।

- विभाग चार से ''गवाही देना'' इसका सारांश दीजिये।
- अगला हिस्सा प्रस्तुत करते हुये तीन उप–विभागों का परिचय दीजिये।
    - जिम्मेदार चरवाहे की व्यक्तिगत विशेषताएं
    - संपूर्ण कलीसिया के लिये सर्वसामान्य सेवकाइयां
    - कलीसिया के विशिष्ट सदस्यों के लिये विशिष्ट सेवकाइयां

ख. – जिम्मेदार चरवाहे की व्यक्तिगत विशेशताएं

- चार्ट को दिखाइये जिसमें दर्शाया गया हो कि पास्टर को अपने अलग–अलग प्रकार के लोगों और उनकी आवश्यकताओं के कारण विभिन्न प्रकार की सेवकाइयां करनी होती हैं। एक ही कलीसिया के विभिन्न लोगों को और उनकी आवश्यकताओं के दर्शाने के लिये उन्हें अलग–अलग रंगों से दर्शाना सहायक होगा (जैसे कि नीचे दिया गया है)। विभिन्न संभावनाओं के बारे में बताइये।
- यीशु ने पतरस से प्रश्न किया था कि क्या वह उससे प्रेम करता है, और तब उससे कहा था, ''मेरी भेड़ों को चरा।'' मसीह यीशु से प्रेम करने का परिणाम यही होगा कि हम उसकी भेड़ों को चरायेंगे, अर्थात् जिन लोगों की जिम्मेवारी हम पर है उनकी हम देखभाल करेंगे (यूहन्ना 21:15–17)।
- आवश्यक है कि हम अपने झुण्ड के लोगों को चरायें, उनकी रखवाली करें और उनके सामने अपने मसीही जीवन का नमूना प्रस्तुत करें (1 पतरस 5:2)।
- पौलुस कलीसिया के प्राचीनों को प्रोत्साहित करता है कि अपने झुण्डों की चिंता करें और उनकी देखभाल करें (1 पतरस 1–4)।

- पाठ 5, 6, 7, 8, 9 के शीर्षकों को लिखा हुआ चार्ट दिखाते हुये पाठों का परिचय दीजिये।
    - ये पांच पाठ अन्य पाठों से अलग हैं क्योंकि ये अयाजकीय पास्टर्स की सहायकता करते हैं कि वे उन सेवकाइयों के लिये आवश्यक गुणों को विकसीत करें जो उन्हें विभिन्न प्रकार के लोगों के, अनुभवों के और आवश्यकता के अनुरूप अपने छोटे समूह या कलीसिया में करनी होती हैं।
    - पाठ्यपुस्तक से पाठ 5 से 9 पढ़ाइये।

झुण्ड की चरवाही

पाठ 5 – प्रेम : एक दोहरी सेवकाई
पाठ 6 – सार्वजनिक सेवकाई
पाठ 7 – अपनी सेवकाई में सन्तुलन रखिए
पाठ 8 – नियतकालिक (समय–समय पर) मूल्यांकन
पाठ 9 – परामर्श की सेवकाई

- **पाठ 5 – प्रेम : एक दोहरी सेवकाई**
    - अयाजकीय पास्टर के लिये एक दोहरी सेवकाई होती हैः उन्हें आत्मा–जीतने वाले बनाना और उन्हें शिष्य बनाना कि मसीह के साथ के प्रेम में गहरे होते जाना, लोगों के साथ के प्रेम में बढ़ना। आत्मा–जीतने और शिष्य बनाने की सेवकाई के लिये प्रेम बहुत ही आवश्यक विषय है।
- **पाठ 6 –सार्वजनिक सेवकाई**
    - अयाजकीय पास्टर के लिये आवश्यक है कि अपने लोगों को परमेश्वर की संपूर्ण मनसा को जानने में प्रशिक्षित करें। ''परमेश्वर की संपूर्ण मनसा'' को उदाहरण देकर समझाइये।
- **पाठ 7 – अपनी सेवकाई में सन्तुलन रखिए**
    - प्रचार करना और व्यवहार करना
    - परमेश्वर के प्रेम और परमेश्वर की पवित्रता को सिखाना
    - स्वर्ग के लिये प्रोत्साहन देना और नकर के प्रति सावधान करना
    - सुसमाचार–प्रचार तथा आत्मिक–जागृति के लिये प्रचार करना
- **पाठ 8 –नियतकालिक ;समय–समय परद्ध मूल्यांकन**
    - अयाजकीय पास्टर के लिये आवश्यक है कि अपने आत्मिक जीवन का और उसके साथ ही अपनी कलीसिया या छोटे समूह का मूल्यांकन करें।
- **पाठ 9 –परामर्श की सेवकाई**
    - आवश्यक है कि अयाजकीय पास्टर अपने उन लोगों के साथ हो लें जो दुःखों में हैं, ताकि उन्हें आवश्यक सलाह और सेवा दें।

ग. – संपूर्ण कलीसिया के लिये सर्वसामान्य सेवकाइयां और कलीसिया के विशिश्ट सदस्यों के लिये विशिश्ट सेवकाइयां (45 मिनट)

- दोनों प्रकार की सेवकाइयों को दर्शाने वाला चार्ट दिखाइये।
- प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि पहले बताई गई पांच सेवकाइयां (पाठ 5, 6, 7, 8 और 9) इनका केंद्र चरवाहे में या अयाजकीय पास्टर में विशिष्ट गुणों को बढ़ाना था।
    - बाकी के पाठों का परिचय दो विशिष्ट गुटों के रूप में दिजिये।

सर्वसामान्य सेवकाइयां	विशिश्ट सेवकाइयां
पाठ 1 – वचन का प्रचार करो	पाठ 20 – समझाने का कार्य कैसे करें
पाठ 2 – हमें आत्मिक–जागृति की आवश्यकता क्यों है	पाठ 21 – झुंड में व्याप्त पाप से कैसे निबटें
पाठ 3 – आत्मिक–जागृति के लिए प्रचार करना	पाठ 22 – परमेश्वर से विमुख होने वालों से निपटना
पाठ 4 – आत्मिक–जागृति के लिए प्रार्थना	पाठ 23 – तलाक
पाठ 10 – सहभागिता को बढ़ावा देना	पाठ 24 – व्यभिचार
पाठ 11 – सुसमाचार–प्रचारीय उपदेश	पाठ 25 – जादू टोना
पाठ 12 – उद्धार का आश्वासन	पाठ 26 – मदिरापान के विरुद्ध प्रचार क्यों करें?
पाठ 13 – नए उद्धार पाए हुओं को शिष्य बनाना	पाठ 27 – दुःख उठाने वाले मसीहियों की सहायता करना
पाठ 19 – दान देने के विषय में शिक्षा	पाठ 28 – बीमारों के लिए सेवकाई करना
पाठ 34 – प्रभु के दिन का पालन करना	पाठ 29 – मृत्यु के समय की सेवकाई
पाठ 35 – पितृ–दिवस	पाठ 30 – मंगेतरों को परामर्श देना
पाठ 36 – मातृ–दिवस	पाठ 31 – सन्तानहीन दम्पति को परामर्श कैसे दें
पाठ 37 – पारिवारिक वेदी की स्थापना करना	पाठ 32 – विधवाओं के प्रति सेवकाई
पाठ 38 – पूर्ण परिवार को मसीह में लाना	पाठ 33 – उद्धार न पाए हुए जीवन–साथी के साथ मसीही विश्वासी
पाठ 39 – अयाजकों को सेवा के लिए अग्रसर करना	
पाठ 40 – स्त्रियों के वरदानों का उपयोग करना	

सत्र 3: 45 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

झुंड की चरवाही

व्यक्तिगत अध्ययन

रूपरेखा:

क. प्रत्येक प्रशिक्षार्थी, इस विभाग के एक पाठ का अध्ययन करेगा

ख. प्रत्येक प्रशिक्षार्थी प्रस्तुत करने के लिये अपने पाठ पर चार्ट बनायेगा

व्यक्तिगत अध्ययन के लिये तैयारी:

- स्पष्ट कीजिये कि प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को एक पाठ दिया जायेगा और समय दिया जायेगा कि अध्ययन करें और चार्ट तैयार करें और 3 मिनट में कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करें।
- पहले से ही पाठों को चुन कर अलग–अलग पेपर पर उनके क्रमांक और नाम लिखकर तैयार रखिये कि प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को एक पाठ दिया जायेगा।
- हम कम–से–कम 10 पाठों का सुझाव नीचे दे रहे हैं:

  पाठ 1 – वचन का प्रचार करो
  पाठ 11 – सुसमाचार–प्रचारीय उपदेश
  पाठ 13 – नए उद्धार पाए हुओं को शिष्य बनाना
  पाठ 21 – झुंड में व्याप्त पाप से कैसे निबटें
  पाठ 22 – परमेश्वर से विमुख होने वालों से निपटना
  पाठ 23 – तलाक
  पाठ 27 – दु:ख उठाने वाले मसीहियों की सहायता करना
  पाठ 30 – मंगेतरों को परामर्श देना
  पाठ 39 – अयाजकों को सेवा के लिए अग्रसर करना
  पाठ 40 – स्त्रियों के वरदानों का उपयोग करना

- प्रशिक्षार्थियों को निर्देश दीजिये कि अपने समय का उत्तम उपयोग कैसे करेंगे।

आदर्श निर्देश

- आप को अपना पाठ पूरा करने के लिये 40 मिनट मिलेंगे।
- 30 मिनट पाठ का अध्ययन कीजिये और 10 मिनटों का उपयोग चार्ट बनाने के लिये कीजिये।
- पाठ को पढ़ने के बाद, अपने पाठ का क्रमांक और नाम चार्ट के सामने वाले हिस्से में लिखिये ताकि कक्षा को दिखाया जाये।
- चार्ट की दूसरी ओर पाठ की महत्वपूर्ण बातों को लीखिये ताकि कक्षा को बताई जायें।
- किसी बाहरी स्रोत या विचारों का उपयोग मत कीजिये, मात्र पाठ्यवस्तु पर ही केंद्रित रहिये।
- मुख्य बातों को कक्षा के सामने प्रस्तुत करने में चार मिनट का समय लीजिये।

सत्र 4: 150 मिनट

पाठ्यपुस्तकः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

झुंड की चरवाही

व्यक्तिगत प्रस्तुतिकरण

रूपरेखाः

क. प्रत्येक पाठ का प्रस्तुतिकरण

ख. सब पाठों का प्रस्तुतिकरण हो जाने के बाद आत्मिक प्रोत्साहन

क. व्यक्तिगत प्रस्तुतिकरण

- कुर्सियों को गोल घेरे में रखिये और प्रत्येक प्रशिक्षार्थियों को, अपने चार्ट को लेकर, पाठों के क्रम से बैठाइये।
- प्रत्येक व्यक्ति अपने पाठ का नाम बताने से आरंभ करेगा और सारी कक्षा उस नाम को दोहराइयेगी। प्रत्येक प्रस्तुतिकरण 3 मिनट का होगा।
- इस प्रकार की पद्धति में, प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को कक्षा के समक्ष पाठ प्रस्तुत करने का कम–से–कम एक बार अवसर मिलेगा। इससे प्रत्येक को समूह के समक्ष बोलने का अनुभव मिलेगा।

ख. आत्मिक प्रोत्साहन

- सारे प्रस्तुतिकरण के बाद, प्रशिक्षार्थियों से प्रश्न कीजिये कि उन्हें उन सारी सेवकाइयों को देखना और सुनना कैसे लगा जिनके लिये प्रत्येक चरवाहा जिम्मेवार होता है?
- इस बात पर जोर देकर बताइये कि चरवाहे को ऐसे ही सुसज्जित किया जाना आवश्यक है कि वह अपनी कलीसिया या छोटे समूह में औरों को प्रशिक्षित कर सके ताकि वे भी इन सेवकाइयों में उसकी सहायकता करने में साथ दे सकें।
- मुख्य बातः इसलिये कि परमेश्वर ने मुझ से प्रेम किया है, मैं उसकी भेड़ों की चरवाही करूंगा। प्रभु, मेरा जीवन तू ले और इसे तेरे लिये ही अर्पित रहने दे।

विभाग 4 का समापनः झुण्ड की चरवाही

- चरवाहे की जिम्मेवारियों पर जोर देते हुये विभाग 4 का समापन कीजिये।
    - प्रशिक्षार्थियों को क्रम से आगे आकर अपने–अपने चार्ट को दिवार पर या किसी ऊंचे स्थान पर टेप से चिपकाने कहिये, और इस समय कोई भक्ति गीत गाते रहिये। यह कार्य, परमेश्वर की आराधना करने का और अपने आप को अर्पित करने का चिन्ह होगा।
- प्रशिक्षार्थियों की अगुवाई कीजिये कि वे परमेश्वर के लोगों के अच्छे चरवाहे होने के लिये, और परमेश्वर के लोगों के लिये अच्छे चरवाहे तैयार करने के लिये, अपने आप को समर्पित करें।
- समर्पण का यह समय प्रर्थना और गीत से पूरा कीजिये। यह नीचे दिया गया गीत पढ़िये या गाइयेः

प्रभु हम तुझ से प्रेम करें
और तेरी भेड़ों को चरायें
तेरे पीछे चलने में,
आनंदित हमारी आत्माएं!
प्रभु, तुझे आनंद मिले,
हमारे सारे कामों से,
हो तेरी दृष्टि में यह सब ––
––मधुर, मधुर !!

सत्र 5: 50 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

धर्मोपदेशकला

शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापन

रूपरेखा:

क. व्याख्यात्मक उपदेश के नमूने की रूपरेखा: आई. बी. एस. के तत्वों का उपयोग करते हुये

ख. व्याख्यात्मक उपदेश को प्रस्तुत करने का नमूना

क. व्याख्यात्मक उपदेश के नमूने की रूपरेखा: आई. बी. एस. के तत्वों का उपयोग करते हुये

- रोमियो 5:6–11 को जोर से पढ़िये या किसी प्रशिक्षार्थी को पढ़ने कहिये।
- रूपरेखा बनाने का तरीका प्रस्तुत करने के लिये आई. बी. एस. के तत्वों का उपयोग कीजिये। प्रशक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि एक व्याख्यात्मक उपदेश की रूपरेखा का नमूना उनके पीबीएस पाठ्यपुस्तक में मिलेगा।
- पहले से चार्ट तैयार कर लेना सहायक होगा, जिसमें शास्त्रभाग से प्राप्त होने वाली महत्वपूर्ण जानकारी को लिखा होगा ताकि उसकी सहायता से व्याख्यात्मक उपदेश की रूपरेखा तैयार की जाये। चार्ट के बहुतेरे नमूने इस मैन्युअल में दिये गये हैं।

- **कदम 1: अवलोकन – यह क्या कहता है?**

रोमियो 5 का संदर्भ

- साहित्य : पत्री
- लेखक : प्रेरित पौलुस (अन्यजातियों के लिये प्रेरित)
- प्राप्तकर्ता : रोम की कलीसियाएं
- लेखक/प्राप्तकर्ता का संदर्भ : पौलुस कुरिंथुस में था; रोम की कलीसिया शांति/चैन के समय को अनुभव कर रही थी, परंतु सुसमाचार के प्रति कुछ अनभिज्ञ थी।
- मुख्य शब्द : सुसमाचार, विश्वास, क्रोध, उद्धार, अनुग्रह, पवित्रता, मेल
- मुख्य/मूल विषय : सुसमाचार – मनुष्य पापी है, उद्धार विश्वास के द्वारा है, मसीह ने दाम चुकाया है, हमारा छुटकारा स्थायी है, हमें पवित्र जीवन जीना है

- आप एक और चार्ट दिखा सकते हैं जिस पर रोमियों 5 के आस–पास के अध्यायों की मुख्य बातें दिखाई गई हो, जैसे कि:
  - अध्याय 1: मनुष्य का पाप
  - अध्याय 2: परमेश्वर की धार्मिकता, विश्वास
  - अध्याय 3: कोई धर्मी नहीं है
  - अध्याय 4: विश्वास (क्रमशः)
  - अध्याय 5: परमेश्वर से मेल, मसीह में आशा, आदम के द्वारा मृत्यु और मसीह द्वारा जीवन
  - अध्याय 6: पाप से छुटकारा
  - अध्याय 7: व्यवस्था और पाप
  - अध्याय 8: आत्मा में जीवित रहना
- आप एक और चार्ट दिखा सकते हैं जिस में रोमियों अध्याय 5 की समीक्षा प्रस्तुत की गई हो, जैसे कि:
  - उद्धार पाये हुये विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराये गये हैं (परमेश्वर के अनुग्रह से)
  - दुःख सहन का प्रतिफल
  - मसीह की मृत्यु हमें हमारे उद्धार को दिलाती है (उसने हमारे दण्ड को चुका दिया)
  - मनुष्य का पाप मृत्यु की ओर ले जाता है
  - अनंत जीवन सब के लिये उपलब्ध है

- आप एक और चार्ट दिखा सकते हैं जिसमें रोमियों अध्याय 5 में के व्यक्तियों की सूची दी गई हो।
    - परमेश्वर
    - यीशु
    - लोग जो यीशु में विश्वास करने के द्वारा उद्धार पाये हैं
    - लोग जो अभी भी यीशु के अनुयायी/शिष्य नहीं हैं

> पूछिये:
> - क्या इन में से किसी व्यक्ति के संबंध में और अधिक परिचय या स्पष्टिकरण देने की आवश्यकता है? पौलुस किसे लिख रहा था?
> - आप अपना उपदेश किन श्रोताओं के लिये प्रचार करेंगे?

- आप एक और चार्ट दिखा सकते हैं जिसमें रोमियों 5:6–11 के मुख्य विषयों को दर्शाया गया हो, जैसे कि:
    - मसीह पापियों के लिये (हमारे लिये/सब के लिये) मरा इसके पहले कि हम धर्मी ठहराये जाते
    - मसीह की मृत्यु पापियों को दण्ड से छुटकारा दिलाती है
    - मसीह की मृत्यु के द्वारा उद्धार पाये हुओं का मेल परमेश्वर से किया गया है, अब वे परमेश्वर के साथ मेल में जी सकते हैं।

> प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये: अब हम ने ''यह क्या कहता है?'' इस प्रश्न का उत्तर दिया है। हम अपने उत्तर को कल्पना से नहीं लिख सकते ना ही हमें अपने विचारों को लिखना है। हम ने दिये गये शास्त्रपाठ का अध्ययन किया और तब अपने उत्तरों को लिखा है जो हमारे उन बुनियादी प्रश्नों के लिये हैं जो हमें लेखक के उद्देश्य को समझ लेने में सहायता करते हैं।

- **कदम 2: व्याख्या – इसका अर्थ क्या है?**
    - आई. बी. एस. के तत्वों को दिखाने के लिये पहले ही बनाया गया चार्ट पुनः दिखाइये और प्रशिक्षार्थियों को पूछिये कि उन में से कौन सा तत्व व्याख्या के लिये अगुवाई करेगा जिसकी सहायता से व्याख्यात्मक उपदेश को तैयार किया जा सकता है।
    - क्रमांक 5 के तत्व का नमूना प्रस्तुत कीजिये : पवित्र शास्त्र का शब्दशः अर्थ बताइये/व्याख्या कीजिये, जब तक कि संदर्भ कोई और मांग नहीं करता।
    - रोमियों में के इस अध्याय का अर्थ यह बताता है कि : परमेश्वर के प्रेम के कारण, मसीह मरा ताकि पापियों का परमेश्वर के साथ मेल कराया जाये।

> प्रशिक्षार्थियों को बताइये कि ''धर्मी ठहराया जाना'' और ''मेल कराया जाना'' ऐसे थियॉलाजिकल शब्दों को श्रोताओं के लिये स्पष्ट किया जाना आवश्यक होगा। प्रशिक्षार्थियों से कहिये कि सावधान रहिये कि उनकी रोमियों 5:6–11 की व्याख्या पौलुस के उस संपूर्ण संदेश से सुसंगत होनी चाहिये जो इसके पहले के और बाद के अध्यायों में है।

- **कदम 3: लागूकरण – यह मेरे जीवन से कैसे लागू होता है?**
    - रोमियों 5:6–11 हमें बताता है जो लोग मसीह की उनके पापों के दण्ड को चुकाने के लिये, उनके बदले में हुई मृत्यु को स्वीकार नहीं करते वे अंततः परमेश्वर के द्वारा दी जाने वाली सजा को सहेंगे और अपने पृथ्वी पर के जीवन में परमेश्वर के साथ के मेल को प्राप्त नहीं करेंगे। बुद्धिमान श्रोता यीशु के दान को स्वीकार करेंगे, उसे अपना उद्धारकर्ता मान लेंगे और उसे प्रभु मान कर उसकी सेवा करेंगे।

> प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि अपने श्रोताओं को लागूकरण समझ में आये इसके लिये वे उदाहरणों का उपयोग करेंगे और उन्हें प्रतिउत्तर देने की ओर ले जायेंगे।

- उपदेश की रूपरेखा को एकत्रित करना
    - इसका लक्ष्य यह होगा कि बाइबल के लेखक के उद्देश्य को ऐसे प्रकट करना कि वहः
        - अचूक,
        - स्पष्ट,
        - संक्षिप्त,
        - प्रेरणादायक,
        - याद रखने में सरल और
        - अविलंब लागूकरण के लिये आग्रह करने वाला होगा

    - आपका संदेश तर्कपूर्ण होगा और सही प्रवाह में आगे बढ़ेगा यह निश्चित कर लेने के लिये उस उपदेश की रूपरेखा बनाइये। प्रशिक्षार्थियों को प्रोत्साहित कीजिये कि दो–दो या तीन–तीन मिलकर अपनी तैयार की गई रूपरेखा और व्याख्यात्मक उपदेश के स्पष्टिकरण को पढ़ें। रूपरेखा के नमूने को चार्ट में दिखाइये जबकि प्रशिक्षार्थी अपने पाठ्यपुस्तक में दिये गये हिस्से को पढ़ते हैं। नीचे रूपरेखा का नमूना दिया गया है।

व्याख्यात्मक उपदेश
एक मृत्यु में से जीवन

मूल विषय : यीशु मसीह की मृत्यु
मूल पाठ : रोमियों 5:6–11
परिचय : उसका पौलुस के लेखन में स्थान
तर्क (मुख्य भाग) :

1. किसी की मृत्यु हुई/कोई मरा
    - क. यह एक सामान्य सच्चाई है––सभी की मृत्यु होती हैं।
    - ख. परन्तु यह एक असामान्य सच्चाई है यदि हम निम्नलिखित बातें स्मरण करते हैं:
        - – जिसकी मृत्यु हुई उसका चरित्र
        - – वह मृत्यु से बच सकता था
        - – दावें जो उसकी मृत्यु के साथ जुड़े थे।
2. लोग जिनके लिए मसीह मरा
    - क. पापी, भक्तिहीन, निर्बल, शत्रु
    - ख. ''उनके लिए मरा'' इन शब्दों का अर्थ
3. मसीह के मरने का उद्देश्य
    - क. नकारात्मक रूप से: परमेश्वर को मनुष्य से प्रेम करने का प्रलोभन देने के लिए नहीं।
    - ख. सकारात्मक रूप से: ताकि मानव बदल जाए।
        - – धर्मी ठहराया जाए।
        - – परमेश्वर से मेल कराया जाए।
        - – क्रोध से बचाया जाए।
        - – मसीह के जीवन के द्वारा बचाया जाए।

उपसंहार : (1) क्या हम उस क्रूस के महत्व को समझते हैं?
(2) क्या इसका हमारे लिये कोई महत्व नहीं है? या इसका हमारे लिये अत्यंत महत्व है?
(3) उसकी उस मृत्यु के कारण हमारा उसके प्रति प्रेम कितना अधिक होना चाहिये!

आमंत्रण : एक सुअवसर प्रदान किजिये कि श्रोता सार्वजनिक रीति से परमेश्वर के वचन से सहमती प्रगट करें और परमेश्वर हमें जो उदारता से/मुफ्त में देता है उसे विश्वास से ग्रहण करें।

प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि जब–जब सुसमाचार प्रचार किया जाता है तब–तब वह एक आग्रह करने का समय होता है। प्रशिक्षार्थियों को 2 कुरिंथियों 6:2 पढ़कर सुनाइये।
प्रशिक्षार्थियों को स्मरण दिलाइये कि जब जब सुसमाचार प्रचार किया जाता है तब तब उसे ऐसे जोर देकर बताया जाये जैसे कि वह प्रचार करने का अंतिम अवसर है। इंग्लैंड के एक प्रचारक रिचर्ड बैक्स्टर ने कहा है, ''ऐसे प्रचार करें जैसे कि फिर प्रचार करने का अवसर मिलेगा भी कि नहीं, और ऐसे कि जैसे एक मरने वाला व्यक्ति दूसरे मरने वाले को सुना रहा हो।''

क. व्याख्यात्मक उपदेश को प्रस्तुत करने का नमूना

- प्रशिक्षार्थियों को अपनी पुस्तकों को बंद करने कहिये और उनके समक्ष रोमियों 5:6–11 पर व्याख्यात्मक उपदेश प्रस्तुत कीजिये।
- रूपरेखा का जो नमूना आपने चार्ट पर बनाया है उसकी सहायता से व्याख्यात्मक संदेश प्रस्तुत कीजिये।

सत्र 6: 40 मिनट

पाठ्यपुस्तक: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

धर्मोपदेशकला

समूह कार्य

रूपरेखा:

क. प्रत्येक समूह उसे सौंपे गये उस दिन का अभ्यास–कार्य पूरा करेगा

ख. प्रत्येक समूह अपना अभ्यास–कार्य संपूर्ण कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करेगा

क. समूह में अभ्यास–कार्य

- कक्षा को उन्हीं समूहों में बांट दीजिये जैसे कि चौथे दिन बांटे गये थे। प्रत्येक समूह ने चौथे दिन प्रेरितों के काम 5:17–32 या लूका 19:1–10 से, आई. बी. एस. के तत्वों का उपयोग करते हुये जो जानकारी एकत्रित की होगी उसकी सहायता से उपदेश की रूपरेखा बनाने कहिये।
- इससे दो उद्देश्य पूरे होंगे: एक यह कि प्रशिक्षार्थियों को पवित्रशास्त्र से जानकारी एकत्रित करने का अभ्यास होगा, और दूसरा यह कि आगे की सेवकाई के लिये नये उपदेशों को बनाने के लिये उन्हें शास्त्रपाठ उपलब्ध होंगे।

ख. समूह प्रस्तुतिकरण

- प्रत्येक समूह एक व्यक्ति को चुन लेगा कि वह समूह के कार्य को कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करे।
- प्रत्येक समूह को कार्य प्रस्तुत करने के लिये 2 मिनट का समय मिलेगा।
- जब सारे समूह अपना प्रस्तुतिकरण पूरा कर लेते हैं तब शिक्षक–प्रशिक्षक अपना प्रतिसाद/जानकारी प्रस्तुत करेगा।
- सत्र को प्रार्थना के साथ समाप्त कीजिये और अगले दिन के लिये आवश्यक सूचनाएं दीजिये।

सत्र 7: 50 मिनट

पाठ्यपुस्तकः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

अंतिम दिन की तैयारी

शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापन

रूपरेखाः

क. पीबीएस के आदर्श दिन की रूपरेखा प्रस्तुत करना

ख. अंतिम दिन की तैयारी

क. पीबीएस के आदर्श दिन की रूपरेखा प्रस्तुत करना (10 मिनट)

- छठवें दिन की, पीबीएस के आदर्श दिन की, समय–सारणी प्रस्तुत कीजिये। अगले पृष्ठ पर, विभाग के छः के आरंभ में पीबीएस के आदर्श दिन की समय–सारणी का नमूना दिया गया है।
- प्रशिक्षार्थियों से कहिये कि, इन पांच दिनों के प्रशिक्षण के द्वारा, उन्हें पीबीएस पाठ्यक्रम को पढ़ाने में आवश्यक होने वाला साधन दे दिया गया है और अब उन्हें अवसर दिया जायेगा कि वे इसका उपयोग करें।
- कोई प्रश्न हों तो उन पर चर्चा कीजिये।

ख. अंतिम दिन की तैयारी

- प्रशिक्षार्थियों को पांच समूहों में विभाजित कीजिये और स्पष्ट कीजिये कि वे एक टीम के रूप में काम करेंगे कि उन्हें दिये गये विभाग के पाठ को तैयार करें। आप बीते सप्ताह में अपने प्रशिक्षार्थियों के वरदानों और व्यक्तित्व का जो अवलोकन करते आये हैं उसके आधार पर प्रत्येक टीम का संयोजन पहले से ही सोच लीजिये। प्रत्येक टीम, उनके विभाग के पाठ का शिक्षक होने के लिये, अपने में से एक को चुनेगी।
- प्रत्येक समूह को एक विभाग दीजियेः ''बाइबल की पुस्तकें,'' ''सिद्धांत,'' ''उपदेशकला,'' ''झुण्ड की चरवाही,'' या ''पवित्र जीवन''। प्रत्येक विभाग को अपने पाठ को पढ़ाने के लिये 50 मिनट का समय दिया जायेगा।
- यदि चाहिये तो छठवां समूह आराधना में अगुवाई करने हेतु नियुक्त किया जा सकता है।
- प्रत्येक समूह को, किसी भी प्रकार के चार्ट तैयार करने के लिये आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराइये और उनसे अनुरोध कीजिये कि वे अपने–अपने समूह में जाकर अगले दिन के लिये अपने विभाग के पाठ का अध्ययन करें और चार्ट की तैयारी करें।

विभाग छः

पोर्टेबल बाइबल स्कूल का एक आर्दश दिन

प्रशिक्षण–प्राप्तकर्ता शिक्षकों के द्वारा

समय–सारणी

06:30 – 07:00	नाश्ता
07:00 – 07:30	आराधना
07:30 – 08:20	बाइबल की पुस्तकें – पाठ 20
08:20 – 09:10	सिद्धांत – पाठ 20
09:10 – 10:00	उपदेशकला – वर्णनात्मक उपदेश
10:00 – 10:20	अवकाश
10:20 – 11:10	झुण्ड की चरवाही – पाठ 20
11:10 – 12:00	पवित्र जीवन – पाठ 20
12:00 – 01: 00	टिप्पणियां और मूल्यांकन
01:00 – 02:00	भोजन
02:00 – 03:00	अंतिम सत्र प्रतिउत्तर, समापन, प्रस्थान

परिशिष्ट ''ए''
प्रथम दिन के लिये आत्मिक प्रोत्साहन

पाठ 2 – उत्पत्तिः उत्पत्ती की पुस्तक का आरंभ परमेश्वर से होता है परंतु अंत शव संदूक से होता है (50:26)।आइये हम परमेश्वर की स्तुति करें कि वह हमारे जीवन की कहानी को मृत्यु में अंत नहीं करता। आज हम जानते हैं कि हमारा अंत ''शव संदूक'' में नहीं हो जायेगा क्योंकि मनुष्य इतिहास के एक सही समय में, परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को भेजा जो पुनःरुत्थान और जीवन है। आइये हम सब खड़े हो जायें और परमेश्वर की स्तुति करें कि उसने हमें मसीह में यह आशा दी है कि कब्र के पार हमारे लिये अनंत जीवन का आश्वासन दिया गया है।

पाठ 3 – निर्गमनः निर्गमन की पुस्तक हमें हमारे महान परमेश्वर के द्वारा किये जाने वाले छुटकारे के कार्य के बारे में बताती है। यह अंधकार और निराशा में आरंभ होती है तथापि महिमा में समाप्त होती है। क्या आपके जीवन में कोई अंधकार है? कोई निराशा? कोई दुःख? क्या आप किसी बुरी आदत का बोझ उठा रहे हैं? क्या आपके पास कोई चिंता, भय, निर्बलता या कमियां हैं? प्रभु से प्रार्थना कीजिये कि आपको इस अंधकार से छुटकारा दे। वह सबल से भी बढ़कर है कि आप को अपनी महिमा में लाये। आइये हम प्रार्थना करें कि अपने आप को उसके सामर्थी हाथ में दें और उससे मांगे कि वह हमारे जीवनों से अपने आप को महिमान्वित करे।

पाठ 6 – पहला और दूसरा शमूएलः इस पाठ में दाऊद की 11 गुणविशेषताएं दी गईं हैं। अपने पाठ्यपुस्तक में इन्हें रेखांकित कीजिये। इन में से कौनसी गुणविशेषता आप अपने लिये सब से अधिक चाहेंगे? (कुछ समय दीजिये कि प्रशिक्षार्थी कुछ विशिष्ट गुणविशषताओं को अपने लिये पूरी कक्षा के सामने रखेंगे।) आइये हम खड़े हों और इन विशिष्ट गुणविशषताओं को अपने में विकसित करने में परमेश्वर की सहायता मांगे कि वे उसकी महिमा और उद्देश्य के लिये काम आ सकें।

पाठ 11 – भजन संहिताः भजन संहिता यह स्तुति, प्रार्थना और आराधना की पुस्तक है। यह हमें बताती है कि मनुष्य जीवन का प्रत्येक अनुभव परमेश्वर से संबंध रखता है। आज, हम जानते हैं कि हमारे जीवन के प्रत्येक अनुभव में ''परमेश्वर हमारे साथ'' है––वह हमारे दुःखों में और हमारे क्लेशों में, हमारी आशाओं में और आनंद में हमारे साथ है। आइये हम परमेश्वर के लिये धन्यवाद का गीत गायें।

पाठ 13 – यशायाहः यह पाठ हमें उन भविष्यवाणियों का स्मरण दिलाता है जो यीशु मसीह का कुंवारी से जन्म, उसका स्वभाव, जीवन, मृत्यु और पुनःरुत्थान से संबंधित थी, जो पूरी हुई हैं। हम पूर्ण रीति से भरोसा रख सकते हैं कि उसका दूसरा आगमन भी वैसा ही पूरा होगा जैसा कि परमेश्वर के वचन में बताया गया है। हमें हमारे राजा के वापस आने के लिये तैयार रहना आवश्यक है। (कक्षा की प्रार्थना करने में अथवा मसीह यीशु के दूसरे आगमन से संबंधित गीत गाने में अगुवाई कीजिये।)

पाठ 22 – मत्तीः मत्ती यीशु को राजा के रूप में प्रस्तुत करता है। अपने नोटबूक (डायरी) में यह स्वीकृति लिख लीजिये कि यीशु आपके जीवन का राजा है। आज की तारीख लिखते हुये अपने हस्ताक्षर कर दीजिये। (प्रशिक्षार्थियों को आमंत्रित कीजिये कि यीशु हमारे जीवन का राजा है यह स्वीकार करते हुये प्रार्थना करें।)

पाठ 25 –यूहन्नाः यूहन्ना यीशु को परमेश्वर के रूप में प्रस्तुत करता है। यीशु परमेश्वर का पुत्र, स्वयं परमेश्वर है। परमेश्वर की स्तुति हो, जो हमारा सृष्टिकर्ता, उद्धारकर्ता और पोषणकर्ता है। (प्रशिक्षार्थियों की अगुवाई कीजिये कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है इससे संबंधित स्तुति का गीत गायें।)

पाठ 26 – प्रेरितों के कामः जब कि आप यीशु मसीह के मिशन के लिये अपने आप को समर्पित करते हैं, अपनी नोटबूक में लिख लीजिये, ''पवित्र आत्मा की सहायता से, मैं प्रभु यीशु मसीह के मिशन को पूरा करने के लिये जीऊंगा/जीऊंगी।'' आज की तारीख लिखते हुये हस्ताक्षर करें।

पाठ 27 – रोमियोंः हम में से बहुतेरे परमेश्वर से संबंधित सिद्धांत को जानने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तथापि हम मसीह–समान व्यावहारिक जीवन जीने में ध्यान केंद्रित करने से चुक जाते हैं। क्या आप सोचते हैं कि आप किसी क्षेत्र में यीशु के समर्पित शिष्य जैसा जीवन जीने में असफल हुये हैं? आज उस क्षेत्र को यीशु को समर्पित कर दीजिये।

पाठ 39 – प्रकाशितवाक्य और पाठ 40 – प्रकाशितवाक्य की रूपरेखाः इस पाठ के लिये दिया जाने वाला प्रोत्साहन संपूर्ण ''प्रथम दिवस'' के समापन के लिये उपयोग किया जाये जो कि विभाग एक के अंत में दिया गया है।

परिशिष्ट ''बी''

प्रश्नोत्तरी खेल के लिये प्रश्नों के नमूनें

प्रश्नों को ''प्र'' से और उत्तरों को ''उ'' से चिन्हित किया गया है।

विभाग 2 के आरंभ में प्रश्नोंत्तरी खेल

प्रः वे छः विभाग कौनसे हैं जो पोर्टेबल बाइबल स्कूल्स् (पीबीएस) का पाठ्यक्रम बनाते हैं? (6 अंक)
उः बाइबल की पुस्तकें, सिद्धांत, धर्मोपदेशकला, झुण्ड की चरवाही, पवित्र जीवन, डिनॉमिनेशनल संबंध (चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग, पृष्ठ 5)

प्रः स्पष्ट कीजिये कि पीबीएस किस प्रकार पवित्र आत्मा के समान काम करती है? (1 अंक)
उः पवित्र आत्मा को सहायक कहा गया है अर्थात् ''वह जो सहायता करने के लिये साथ आता है।'' पीबीएस इसी प्रकार सहायक की भूमिका को निभाती हैं। वे ग्रामीण और शहरी कलीसियाओं के साथ हो लेती हैं कि अयाजकीय पास्टर्स को प्रशिक्षित करके अपनी वृद्धि करने में उनकी सहायता करें।

प्रः पोर्टेबल बाइबल स्कूल में 'पोर्टेबल'' शब्द का क्या महत्व है? (1 अंक)
उः इसे पोर्टेबल कहा गया है क्योंकि प्रशिक्षण को विद्यार्थी के पास लाया जाता है और इसलिये कि वह अलग–अलग स्थानों में ले जायी जाती है।

प्रः प्रशिक्षण के बाद कितने दिनों तक पीबीएस ग्रेज्यूएल को क्षेत्रीय निरीक्षक के द्वारा सहायता प्रदान की जाती रहती है? (1 अंक)
उः कम–से–कम छः महिनों तक और फिर वार्षिक मुलाकात के द्वारा जब तक संभव होता है तब तक।

प्रः मसीही अयाजकीय पास्टर में प्रायः कौनसी छः कुशलताएं या ज्ञान आवश्यक होता है? (6 अंक)
उः बाइबल सिखाना, सुसमाचार प्रचार करना, अच्छे उपदेश प्रचार करना, आराधना में अगुवाई, प्रार्थना सभा में अगुवाई, व्यक्तिगत आत्मिक वृद्धि (व्यक्तिगत पवित्रता, चरित्र निर्माण, व्यक्तिगत और पारिवारिक आत्मिक निर्माण) को बनाये रखना।

प्रः अपने ही कलीसिया में से प्रशिक्षिति किये गये किस प्रकार से बाहर से काम पर बुलाये हुओं से बेहतर पाये गये हैं? (1 अंक)
उः वे अधिक समय तक बने रहते हैं।

प्रः लैव्यव्यवस्था की पुस्तक से पांच बलिदान हमें क्या सिखाते हैं? (1 अंक)
उः ''सही हो जाओ'' (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 10)

प्रः आठ पर्व हमें क्या सिखाते हैं? (1 अंक)
उः ''सही बने रहो'' (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 11)

प्रः गिनती की पुस्तक के पांच महत्वपूर्ण लोगों के नाम बताइये। (5 अंक)
उः मूसा, हारून, मरियम, यहोशू और कालेब (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 11)

प्रः व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से किस ने बहुत बार उद्धरण दिया है? (1 अंक)
उः यीशु ने (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 11)

प्रः पुराना नियम की पहली पांच पुस्तकों का सारांश एक–एक वाक्यांश में बताइये। (5 अंक)
उः उत्पत्ति – मनुष्य बिगड़ा हुआ; निर्गमन – मनुष्य उद्धार किया गया; लैव्यव्यवस्था – मनुष्य आराधना करता हुआ; गिनती – मनुष्य सेवा करता हुआ; व्यवस्थाविवरण – मनुष्य आज्ञा मानना सीखता हुआ। (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 11)

प्रः एक अच्छा उपदेश किस बात की घोषणा करता है? (1 अंक)
उः उद्धार के शुभ–संदेश की (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 70)

प्रः उपदेश की सामग्री को क्रमबद्ध करने का एक लाभ बताइये। (1 अंक)
उः उपदेशक के लिए स्मरण रखना सरल होता है, उपदेश स्पष्ट तथा तर्कसंगत होता है, श्रोताओं के लिए स्मरण रखने और साथ ले जाने योग्य सरल बना देता है। (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 72)

विभाग 3 के आरंभ के लिये प्रश्नोत्तरी खेल

प्रः पीबीएस का आयोजन किन्हें प्रशिक्षित करने के लिये किया गया है? (1 अंक)
उः अप्रशिक्षित/अवैतनिक अयाजकीय अगुवों को

प्रः अपने ही स्थान पर दिया जाने वाला प्रशिक्षण कितने घंटों का होता है? (1 अंक)
उः 200 घंटे का

प्रः आठ सप्ताह के पीबीएस कार्यक्रम की कार्यनीति के अंग्रेजी सात ''इ'' में से पहले तीन ''इ'' बताइये? इसे आप हिन्दी के शब्दों में बता सकते हैं। (3 अंक)
उः पता लगाना, प्रचार करना, स्थापित करना

प्रः आठ सप्ताह के पीबीएस कार्यक्रम की कार्यनीति के अंग्रेजी सात ''इ'' में से अंतिम चार ''इ'' बताइये? इसे आप हिन्दी के शब्दों में बता सकते हैं। (4 अंक)
उः प्रशिक्षित करना, विस्तार करना, मूल्यांकन करना, प्रोत्साहित करना

प्रः मत्ती 12:34 पद बोलिये। (3 अंक)
उः ''जो मन में भरा होता है वही मुंह पर आता है।'' (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 117)

प्रः हमें पवित्र जीवन जीने के लिये किन बातों को अपने से अलग करना होगा? (6 अंक)
उः उस प्रत्येक बात को जो मेरे उस विश्वास को डगमगा सकती है जो परमेश्वर में है। उस प्रत्येक बात को जो मेरी गवाही को नष्ट या कमजोर करेगी। उस प्रत्येक बात को जो मेरी नैतिकता को कम करेगी और मुझे पाप की ओर ले जाएगी। उस प्रत्येक बात को जो दूसरे मसीही के लिए ठोकर का कारण ठहर सकता है। ऐसी हर एक वस्तु को जो मेरे शरीर को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से हानि पहुँचाती है। ऐसे प्रत्येक कार्य को जो मसीह को पसंद नहीं है। (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 117)

प्रः उन दो बातों को बताइये जिन्हें याद करके आप को परिक्षाएं आने पर पीछे हटना चाहिये। (2 अंक)
उः इन में से कोई दोः–परमेश्वर, जीवन साथी, पाप में साथ देने वाली व्यक्ति, अपने बच्चे, अपना परिवार, लज्जा और पश्चाताप, कलीसिया, गैर मसीही, सुसमाचार के विरोधी, परमेश्वर का न्याय, भविष्य की महिमा।
(चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ131)

प्रः ''मसीह में'' इस प्रयोग–प्रदर्शन में पत्थर किन बातों का प्रतिक हैं? (1 अंक)
उः पाप

प्रः उन तीन विशेषताओं को बताइये जो उपदेश को अच्छा बनाती है। (3 अंक)
उः मुख्य–विषय, तर्क संगत संबंध और रूपरेखा (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 74)

प्रः उपदेश में परिचय का क्या उद्देश्य होता है? (2 अंक)
उः विषय में रुचि जागृत करना। श्रोताओं को आगे बोली जाने वाली बातों के लिये तैयार करना। (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 75)

विभाग 4 के आरंभ के लिये प्रश्नोत्तरी खेल

प्रः पीबीएस शिक्षा की दो गुणविशेषताएं क्या हैं? (2 अंक)
उः बाइबल–सम्मत और संस्कृति के लिये उपयुक्त

प्रः वह क्या बात है जो आप कम शिक्षित लोगों के साथ कदापि न करें? (1 अंक)
उः उन्हें कभी भी बौद्धिक रीति से कम ना समझे।

प्रः वे चार बातें क्या हैं जिनमें वयस्क अध्ययनकर्ता बालक अध्ययनकर्ताओं से भिन्न होते हैं? (4 अंक)
उः उनकी प्रेरणाएं भिन्न होती हैं। उनके पास जीवन का अनुभव अधिक होता है। उनमें स्वायत्तता होती है–– वे किसी के अधिन नहीं रहना चाहते। वे संभावतः जीवन में किसी परिवर्तन से गुजरते होते हैं। उन्हें अपनी कक्षाओं की उपयोगिता जान पड़ना आवश्यक होता है। वे आदर पाने की चाहत रखते हैं।

प्रः स्पष्ट कीजिये कि शिक्षा देने के लिये आपको विभिन्न रचनात्मक पद्धतियों का उपयोग करना क्यों आवश्यक है? (1 अंक)
उ. वे शिक्षा को रुचिकर बनाती हैं और शिक्षा के अध्ययन करने और शिक्षा को स्मरण रखने में सहायक ठहरती हैं।

प्रः जीवन–वृत्तांत संबंधी उपदेश का एक अच्छा उदाहरण कौनसा है? और वर्णनात्मक उपदेश का? (2 अंक)
उः अब्राहम के चार समर्पण यह जीवन–वृत्तांत संबंधी उपदेश का एक अच्छा उदाहरण है। और सिंहों के मांद में दानियेल यह वर्णनात्मक उपदेश का एक अच्छा उदाहरण है। (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 78)

प्रः पीबीएस में जीवन–वृत्तांत संबंधी उपदेश को सीखने के लिये कितने दिन दिये गये हैं? (1 अंक)
उः पांच दिन (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 78)

प्रः इस पाठ्यपुस्तक में सिखाये जाने वाले उपदेश के पांच प्रकार कौनसे हैं? (5 अंक)
उः जीवन–वृत्तांत संबंधी, वर्णनात्मक, पाठ–विषयक, प्रासंगिक या विषयसंबंधि और व्याख्यात्मक (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 78–83)।

प्रः स्पष्ट कीजिये कि 'अंधे की अगुवाई करना' यह प्रदर्शन किस प्रकार सिद्धांतों को सिखाये जाने को महत्वपूर्ण बताता है? (1 अंक)
उः सिद्धांतों के बिना, हो सकता है कि मसीही लोग गलत दिशा में चले जायें, गलत बातों पर विश्वास कर लें और खो जायें।

प्रः आपके पाठ्यपुस्तक में दिये गये सिद्धांतों के तीन विभागों का नाम बताइये। (3 अंक)
उः परमेश्वर का सिद्धांत, यीशु मसीह का सिद्धांत, पवित्र आत्मा का सिद्धांत, मुनष्य का सिद्धांत, उद्धार का सिद्धांत, कलीसिया का सिद्धांत, पवित्र शास्त्र का सिद्धांत, स्वर्गदूतों का सिद्धांत, शैतान का सिद्धांत, अंतिम बातों का सिद्धांत।
(चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 35)

विभाग 5 के आरंभ के लिये प्रश्नोत्तरी खेल

प्रः मूल्यांकन प्रक्रिया में कौन और क्या सम्मिलित होता है? (1 अंक)
उः सब कोई और सब कुछ – विद्यार्थी, शिक्षक, क्षेत्रीय निरीक्षक, कलीसिया, अन्य अयाजकीय अगुवें, पाठ्यपुस्तक और पाठ्यक्रम।

प्रः पाठ्यक्रम की पूर्णता का प्रमाणपत्र प्राप्त करने के पहले विद्यार्थी को क्या करना अनिवार्य होता है? (1 अंक)
उः छोटा प्रार्थना समूह आरंभ कर लेना अनिवार्य होता है।

प्रः कक्षा में सिखाई जानेवाली बातों को कितना स्मरण रखा गया है इसे नापने से अधिक क्या महत्वपूर्ण है? (1 अंक)
उः क्षेत्र में सेवकाई का प्रदर्शन नापना अधिक महत्वपूर्ण है ।

प्रः हम अपने मुंह से मसीह का अंगीकार क्यों करें इसका एक कारण बताइये। (1 अंक)
उः मसीह ने इसकी आज्ञा दी है। एक गवाही देने वाला मसीही परमेश्वर से दूर जाए यह सम्भव नहीं है। इससे दूसरे लोग जान जाते हैं कि आप किसके पक्ष में है। इससे आप सांसारिक स्थानों की बहुतेरी परीक्षाओं से बच सकते हैं। जो कुछ मसीह ने आपके लिए किया है उसके लिए यह आवश्यक है। (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 93)

प्रः चार आत्मिक नियम क्या हैं? (4 अंक)
उः 1. परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और आपके जीवन के लिए अद्‌भुत योजना प्रस्तुत करता है। 2. मनुष्यजाति पापी है और परमेश्वर से दूर कर दी गई है। 3. यीशु मसीह ही वह एकमात्र प्रबन्ध है जो परमेश्वर ने मनुष्यजाति की पाप–क्षमा के लिए किया है। 4. आवश्यक है कि हम व्यक्तिगत रीति से यीशु को उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करें।

प्रः चार आत्मिक नियमों में से प्रत्येक के लिये एक बाइबल वचन का हवाला दीजिये? (4 अंक)
उः 1. परमेश्वर आपसे प्रेम करता है (यूहन्ना 3:16; यूहन्ना 10:10)। 2. मनुष्यजाति पापी है और परमेश्वर से दूर कर दी गई है (रोमियों 3:23; रोमियों 6:23)। 3. यीशु मसीह ही वह एकमात्र प्रबन्ध है जो परमेश्वर ने मनुष्यजाति की पाप–क्षमा के लिए किया हैं (रोमियों 5:8; 1 कुरिन्थियों 15:3–6; यूहन्ना 14:6)। 4. आवश्यक है कि हम व्यक्तिगत रीति से यीशु को उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करें (यूहन्ना 1:12; इफिसियों 2:8–9; यूहन्ना 3:18; प्रकाशितवाक्य 3:20)।

प्रः उद्धार का रोमी रास्ता क्या है? (4 अंक)
उः रोमियों की पत्री से उद्धार का मार्ग बतानाः 1. मनुष्य की आवश्यकता; 2. पाप का दण्ड; 3. परमेश्वर का प्रबन्ध; 4. मनुष्य का प्रत्युत्तर। (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 97)

प्रः उद्धार के रोमी रास्ते के लिये चार पद बताइये। (4 अंक)
1. मनुष्य की आवश्यकता – रोमियों 3:23।
2. पाप का दण्ड – रोमियों 6:23।
3. परमेश्वर का प्रबन्ध– रोमियों 5:8।
4. मनुष्य का प्रत्युत्तर – रोमियों 10:9। (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 97)

प्रः पांच उंगलियों के द्वारा सुसमाचार में बताये जाने वाले पांच बिन्दु कौन से हैं? (5 अंक)
उः 1. परमेश्वर आपसे प्रेम करता है। 2. सबने पाप किया है! 3. यीशु मसीह ने आपके पापों की कीमत चुकाने के लिए अपना प्राण दिया। 4. विश्वास कीजिए कि यीशु मसीह आपके पापों के लिए मरा। 5. जब आप यीशु में विश्वास करते है, तब आप अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं। (चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 96,97)

प्रः पांच उंगलियों के द्वारा सुसमाचार में बताये जाने वाले पांच बिन्दुओं के लिये बाइबल पद बताइये। (5 अंक)
उ. 1. परमेश्वर आपसे प्रेम करता है – यूहन्ना 3:16।
2. सबने पाप किया है – रोमियों 3:23।
3. यीशु मसीह ने आपके पापों की कीमत चुकाने के लिए अपना प्राण दिया – 1 कुरिन्थियों 15:3,4।
4. विश्वास कीजिए कि यीशु मसीह आपके पापों के लिए मरा – यूहन्ना 1:12।
5. जब आप यीशु में विश्वास करते है, तब आप अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं – रोमियों 6:23।
(चरवाही करने के लिये बुलाये गये ... पृष्ठ 96,97)

परिशिष्ट ''सी''
क्षेत्रीय अनुभव प्रशिक्षण मूल्यांकन फार्म

कृपया, अयाजकीय पास्टर्स का मूल्यांकन करने के लिये उनके द्वारा स्थापित किये गये नये समूह में उनका अवलोकन निम्नलिखित बातों में कीजिये। निश्चित करें कि प्रत्येक कुशलता का तीन बार अवलोकन किया जायेगा और प्रत्येक अवलोकन को अलग–अलग लिखा जायेगा।

विद्यार्थी का नाम ——————————————————————

प्रथम अवलोकन तारीख —————— दूसरा अवलोकन तारीख —————— तीसरा अवलोकन तारीख ——————

उस खाने में निशान लगाइये जो उन्हें दिये जाने वाले स्तर को दर्शायेगा

	मामूली	सामान्य से नीचे	सामान्य	सामान्य से ऊपर	उत्तम
आराधना में अगुवाई					
• पहला अवलोकन					
• दूसरा अवलोकन					
• तीसरा अवलोकन					
प्रार्थना सभा की अगुवाई					
• पहला अवलोकन					
• दूसरा अवलोकन					
• तीसरा अवलोकन					
बाइबल से शिक्षा देना					
• पहला अवलोकन					
• दूसरा अवलोकन					
• तीसरा अवलोकन					
अच्छा उपदेश देना					
• पहला अवलोकन					
• दूसरा अवलोकन					
• तीसरा अवलोकन					
सुसमाचार समझाना					
• पहला अवलोकन					
• दूसरा अवलोकन					
• तीसरा अवलोकन					

परिशिष्ट ''डी''

विद्यार्थियों के द्वारा मूल्यांकन किये जाने के लिये आदर्श फार्म

उस उत्तर पर गोल कीजिये जो आपकी प्रतिक्रिया को सही–सही दर्शाता हो

1. आपके समूह के विद्यार्थियों के मध्य कैसी सहभागिता थी?

उत्तम बहुत अच्छी अच्छी सामान्य मामूली

2. क्या आप को ऐसा लगा है कि इस प्रशिक्षण ने इस समूह को पास्टरीय सेवकाई के लिये प्रेरणा दी है?

उत्तम बहुत अच्छी अच्छी सामान्य मामूली

3. क्या आप को व्यक्तिगत रीति से ऐसा लगा है कि आप इस प्रशिक्षण के द्वारा प्रेरणा पाये हैं और उत्साहित हुये हैं?

उत्तम बहुत अच्छी अच्छी सामान्य मामूली

4. क्या शिक्षक विद्यार्थियों के प्रश्नों के उत्तर देने योग्य थे?

उत्तम बहुत अच्छी अच्छी सामान्य मामूली

5. क्या आपको, आपके क्षेत्रीय निरीक्षक ने पाठ्यक्रम के पाठों को सेवकाई में लागू करने का उचित मार्गदर्शन दिया है?

उत्तम बहुत अच्छी अच्छी सामान्य मामूली

6. पाठ्यक्रम के सत्रों में चर्चा के लिये दिये गये समय के बारे में आप क्या कहोगे?

उत्तम बहुत अच्छी अच्छी सामान्य मामूली

7. क्या आपको ऐसे लगता है कि पाठ और दिये गये आभ्यास–कार्य विद्यार्थियों की सेवकाई तथा जीवन से लागू किये गये थे?

उत्तम बहुत अच्छी अच्छी सामान्य मामूली

8. आपके समूह में, व्याख्यान और चर्चा के अलावा, और किन पद्धतियों का उपयोग किया गया?

9. इस प्रशिक्षण को और कैसे बेहतर बनाया जा सकता है?

10. आपको इस प्रशिक्षण में सब से अधिक अच्छा क्या लगा?

11. आपकी इस प्रशिक्षण के संबंध और भी कोई टिप्पणी हो तो लीखिये।

परिशिष्ट ''इ''
तीसरे दिवस के लिये आत्मिक प्रोत्साहन के उदाहरण

पाठ 5: त्रिएकता – हमारा परमेश्वर महिमामय परमेश्वर है। अपने त्रिएक परमेश्वर––पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा––की स्तुति के गीत गाइये।

पाठ 7: मसीह का ईश्वरत्व – प्रशिक्षार्थियों से पूछिये कि यीशु मसीह की गुण–विशेषताओं में से वे कौनसी एक को सर्वाधिक सराहते हैं? उन्हें अपने विचार प्रगट करने दीजिये और तब समर्पण का कोई गीत गाइये या प्रार्थना कीजिये।

पाठ 12: पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व – प्रशिक्षार्थियों से पूछिये कि पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के किस गुण ने उन्हें नयी समझ प्रदान की है।

पाठ 17: मनुष्य का पतन – प्रशिक्षार्थियों को प्रोत्साहित कीजिये कि निम्नलिखित को अपनी नोटबूक में लिखेंगे: ''मैं परीक्षाओं के स्थान से दूर भाग जाऊंगा। मैं मना की गई वस्तुओं की प्रशंसा नहीं करूंगा। मैं शैतान से बातचीत नहीं करूंगा। मैं परमेश्वर के वचन में फेर–बदल नहीं करूंगा।'' उन्हें स्मरण दिलाइये कि हम शैतान से बातचीत करते हैं जब हम बुरे, पापमय, हानि पहुंचाने वाले विचार या चिंताओं में गिर जाते हैं। उन्हें कहिये कि इन बातों को वे अपनी नोटबूक में आज की तारीख और हस्ताक्षर के साथ लिख लें।

पाठ 19: पश्चाताप – सब प्रशिक्षार्थियों के द्वारा इस प्रदर्शन को किये जाने में उनकी सहायता कीजिये: ''जब व्यक्ति पाप करता है, वह परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध चलता है (बायीं ओर चलिये)। परंतु परमेश्वर चाहता है कि हम पलट जायें और उसके मार्ग पर चलना आरंभ करें'' (पलट जाइये और दाहिनी ओर चलिये)। तब प्रशिक्षार्थियों को बताइये कि ''पलटने'' के लिये ही ''पश्चाताप'' शब्द है। इसलिये पश्चाताप का अर्थ है हमने जिन गलत कामों को किया है उनके लिये दुःखी होना, ताकि परमेश्वर की सहायता से हम उन गलत कामों को पुनः नहीं करेंगे। बजाय इसके कि हम जो चाहते है उसे करें––हम पलट जाते हैं और वह करते हैं जो परमेश्वर चाहता है कि हम करें। जब आप पश्चाताप करते हैं, तब आप मसीह में नया मनुष्य बन जाते हैं, उसके मार्ग पर चलते हैं, वैसा ही जीवन जीते हैं जो उसे प्रसन्न करता है। उन्हे यह बात स्मरण दिलाइये: पश्चाताप यह विचारों का परिवर्तन है, जिससे आपके हृदय में परिवर्तन आता है, जिससे आपकी इच्छा में परिवर्तन आता है, जिससे आपके संपूर्ण जीवन में परिवर्तन आता है।

पाठ 26: कलीसिया की परिभाषा और स्थापना – प्रशिक्षार्थियों से कहिये कि वे जिस कलीसिया और/या डिनॉमिनेशन के हैं उनके अनुसार अलग–अलग समूहों में खड़े हो जायें। तब उन्हें कहिये कि आपस एक दूसरे के हाथ पकड़ते हुये कहेंगे, ''हम एक विश्वव्यापि कलीसिया है।'' तब इस बात से संबंधित एक उचित भक्ति–गीत गाने कहिये।

पाठ 30: बाइबल के विषय में दो प्रकार की सात बातें – क्या परमेश्वर के वचन ने इन सात प्रतीकों के अनुसार आपके जीवन पर प्रभाव डाला है? (एक या दो प्रशिक्षार्थियों को अपने विचार प्रगट करने कहिये।) परमेश्वर के वचन के लिये धन्यवाद और समर्पण की प्रार्थना कीजिये।

पाठ 32: बाइबल स्वर्गदूतों के विषय में क्या कहती है – इस पाठ के मुख्य बिन्दुओं पर प्रश्न पूछिये। उदाहरण के लियेः (1) आप ने स्वर्गदूतों के बारे में कौनसी एक नयी बात सीखी है? (2) स्वर्गदूतों के पतन से क्या चेतावनी सीखी है?

पाठ 35: पराजित शत्रु – हम आनंदित हो कि शैतान एक पराजित शत्रु है। मसीह ने उसे पराजित किया है। प्रशिक्षार्थियों को शैतान पर विजय पाने की कुछ बातों को बताने दीजिये जो उन्होंने मसीह की विजय के द्वारा प्राप्त की हैं। इन विजयों के लिये परमेश्वर की स्तुति कीजिये।

पाठ 39: दुष्टों का अंतिम भविष्य – जिस आत्मा तक सुसमाचार नहीं पहुंचाया गया है उसकी दशा बहुत संकटपूर्ण है। आवश्यक है कि हम बहुत बड़े स्तर पर और बहुत अधिक तेज गति से सुसमाचार प्रचार करें – इतना जितना कि हमने पहले नहीं किया होगा, क्योंकि मात्र मसीह में किया जाने वाला विश्वास ही लोगों को उद्धार देता है। इसलिये, आइये हम पवित्र आत्मा के उस कार्य में सहभागी हो जायें जो वह पीबीएस पाठ्यक्रम के द्वारा करना चाहता है कि बहुत से मजदूरों को तैयार करें और नये विश्वासियों को औरों को मसीह के पास लाने के लिये तैयार करें। (खोये हुये आत्माओं को बचाने के लिये समर्पित होने हेतु प्रार्थना करने में कक्षा की अगुवाई कीजिये।)

परिशिष्ट ''एफ''

पीबीएस आवेदन फॉर्म, विद्यार्थियों की सूची और डायरेक्टर का रिपोर्ट फॉर्म

पोर्टेबल बाइबल स्कूल आवेदन

(कृपया स्याही में लिखिये या टाईप कीजिये)

1. पीबीएस के अगुवे का नाम .....

2. पताः .....

3. दूरभाष ..... ई–मेल .....

4. डिनॉमिनेशन/संस्था .....

5. गांव/शहर जहां पीबीएस चलायी जायेगी .....

6. प्रांतः ..... जिलाः .....

7. पीबीएस में प्रवेश लिये हुये या अपेक्षित विद्यार्थियों की संख्या ..... इनमें जीसी3 के भूतपूर्व छात्र की संख्या .....

8. क्या पीबीएस के पहले उस क्षेत्र में दो माह तक सुसमाचार प्रचार किया गया था? .....

9. यदि हां तो कितने देहातों में प्रचार किया गया? .....

10. प्रशिक्षण की भाषाः ..... क्या इस भाषा में बाइबल और पाठ्यपुस्तक उपलब्ध है? .....

11. प्रभारी का काम करने वाले प्रमुख शिक्षक का नाम .....

12. उसका व्यवसाय और पद क्या है? .....

13. उसका शिक्षण और आयु क्या है? ....., ...

14. पीबीएस के अन्य शिक्षकों के नाम। क्या उन्होंने स्कूल को चलाने की आवश्यक बातें बताई गई हैं?.....

शिक्षक का नाम	व्यवसाय/पद	शिक्षण	आयु
1.			
2.			
3.			

15. स्कूल कब चलाया जायेगा? ....., ..., ... से ....., ..., ... तक
(दिनांक, माह, वर्ष) (दिनांक, माह, वर्ष)

16. आपने आज तक कितनी पीबीएस को चलाया है? .....

17. आपने आज तक पीबीएस में कितने विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया है? .....

18. भावी विद्यार्थियों के नाम, वे जिस गांव या शहर से आते हैं, उनकी आयु और उनकी कलीसिया (डिनॉमिनेशन/संस्था) इसकी सूची इस फॉर्म के साथ जोडिये। (42 से अधिक विद्यार्थियों का नामांकन ना करें।)

हस्ताक्षरः ..... दिनांकः .....

LIST OF STUDENTS REGISTERED

S.O.E. Director: _____ Location: _____ Proposed Dates: _____

No.	Name of Prospective Student	Village/City	Education	Age	Church/Org.
1.					
2.					
3.					
4.					
5.					
6.					
7.					
8.					
9.					
10.					
11.					
12.					
13.					
14.					
15.					
16.					
17.					
18.					
19.					
20.					
21.					
22.					
23.					
24.					
25.					
26.					
27.					
26.					
27.					
28.					
29.					
30.					
31.					
32.					
33.					
34.					
35.					
36.					
37.					
38.					
39.					
40.					
41.					
42.					

PBS Director's Signature: _____ PBS Head Teacher's Signature: _____

पोर्टेबल बाइबल स्कूल रिपोर्ट

1. पीबीएस डायरेक्टर का नामः .....

2. पताः .....

3. दूरभाषः ..... ई–मेलः .....

4. डिनॉमिनेशन/संस्थाः .....

5. गांव/शहर जहां पीबीएस चलायी जायेगीः .....

6. प्रांतः ..... जिलाः .....

7. नामांकित विद्यार्थियों की संख्याः .....

8. विद्यार्थियों की संख्या जिन्होंने आठ सप्ताहों को पूरा किया हैः .....

9. प्रशिक्षण में किस भाषा का उपयोग किया गया? .....

10. क्या चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग और बाइबल को पाठ्यक्रम में उपयोग किया गया?.....

11. क्या प्रत्येक विद्यार्थी ने बाइबल को प्रापत किया है? पाठ्यपुस्तक? .....

12. क्या आठ सप्ताहों के समय में पाठों के 200 घंटे पढ़ाये गये हैं? (लगातार ही हो यह आवश्यक नहीं है) .....

13. आपने आज तक कितने पीबीएस का आयोजन कर लिया है, इसे जोड़कर? .....

14. आज तक कितने विद्यार्थियों (अयाजकीय पास्टर्स) को प्रशिक्षित किया गया है, इन्हें जोड़कर? .....

15. पीबीएस के प्रमुख शिक्षक का नामः .....

16. पीबीएस के प्रमुख शिक्षक का पताः .....

17. स्कूल कब चलाया गया? ..... से ..... तक (दिनांक, माह, वर्ष लिखिये)

18. क्या सप्ताहों के अंत में सुसमाचार प्रचार किया गया? .....

19. यदि हां तो कितने गांवों में किया गया? ..... कितनों ने स्वीकार किया? .....

20. क्या आप प्रशिक्षण के दौरान की किसी एक घटना के बारे में बता सकते हैं जिससे प्रशिक्षण किस आत्मा में दिया गया और पाया गया इसका उत्तम वर्णन प्रस्तुत होगा? यह किसी विद्यार्थी की गवाही के रूप में हो सकता है या स्कूल में हुई किसी घटना का वर्णन या सप्ताहों के अंत में किये जाने वाले सुसमाचार प्रचार के विवरण से हो सकता है।

21. जिन विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण पूरा किया है उनकी सूची, वे किन गावों में सेवा करेंगे, उनकी आयु, उनके काम का वर्णन, कलीसिया/संस्था जिसके साथ वे काम करेंगे इस जानकारी को साथ में जोड़िये।

22. मेरी जानकारी के अनुसार उपरोक्त जानकारी सही है।

पीबीएस डायरेक्टर के हस्ताक्षर ..... पीबीएस प्रमुख शिक्षक के हस्ताक्षर .....

परिशिष्ट ''जी''

पीबीएस शिक्षक प्रशिक्षण सेमिनार के लिये समय–सारणी का नमूना

प्रथम दिवस

08:30–09:00 उद्घाटन (आराधना, मनन, सूचनाएं)

09:00–10:00 सत्र 1: पोर्टेबल बाइबल स्कूल शिक्षक प्रशिक्षण मैन्युअलः
- पोर्टेबल बाइबल स्कूल के लिये बाइबलीय आधार
- महान आवश्यकता
- पोर्टेबल बाइबल स्कूल्स इस बड़ी आवश्यकता को पूरा करती है
- पोर्टेबल बाइबल स्कूल किस प्रकार कार्य करती है?
- पोर्टेबल बाइबल स्कूल्स का इतिहास

10:00 – 10:30 सत्र 1 (क्रमशः) पोर्टेबल बाइबल स्कूल शिक्षक प्रशिक्षण मैन्युअलः
- पोर्टेबल बाइबल स्कूल से डिनॉमिनेशन्स् को लाभ
- पोर्टेबल बाइबल स्कूल में क्या पढ़ाया जाता है?

10:30 – 11:00 अवकाश

11:00 – 12:00 सत्र 2 बाइबल की पुस्तकेंः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग
- शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापनः 'बाइबल की पुस्तकें'' इस विभाग का परिचय
- आदर्श पाठः पाठ 4 – लैव्यव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण

12:00 – 01:00 सत्र 3: बाइबल की पुस्तकेंः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग
- समूह में अध्ययन

01:00 – 02:00 भोजन अवकाश

02:00 – 04:30 सत्र 4: बाइबल की पुस्तकेंः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग
- प्रत्येक समूह के द्वारा समूह प्रस्तुतिकरण (प्रत्येक समूह 4 मिनट)
- कक्षा में परस्पर विचार
- आत्मिक प्रोत्साहन, प्रार्थना, गीत या चिंतनशील प्रयोग

04:30 – 05:00 अवकाश

05:00 – 06:30 सत्र 5 और 6
- धर्मोपदेशकलाः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग
- धर्मोपदेशकला का परिचय
- सप्ताह एकः पांच पाठ
- प्रशिक्षण के प्रथम दिवस का समापन

द्वितिय दिवस

08:30 – 09:00 आराधना, मनन, सूचनाएं

09:00 – 10:30 सत्र 1: पोर्टेबल बाइबल स्कूल शिक्षक प्रशिक्षण मैन्युअलः
- अवलोकन प्रश्नोत्तरी खेल
- प्रशिक्षण रूपरेखा

10:30 – 11:00 अवकाश

11:00 – 12:00 सत्र 2: पवित्र जीवनः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग
- शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापनः ''पवित्र जीवन'' इस विभाग का परिचय
- आदर्श पाठः पाठ 6 – अलगाव

12:00 – 01:00 सत्र 3: पवित्र जीवनः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग
- समूह में अध्ययन

01:00 – 02:00 भोजन अवकाश

02:00 – 04:30 सत्र 4: पवित्र जीवनः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग
- प्रत्येक समूह के द्वारा समूह प्रस्तुतिकरण (प्रत्येक समूह 4 मिनट)
- कक्षा में परस्पर विचार'
- 'मसीह में'' प्रयोग का प्रदर्शन

04:30 – 05:00 अवकाश

05:00 – 06:30 सत्र 5 और 6:

- धर्मोपदेशकला: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग
- पुनः धर्मोपदेशकला का परिचय
- सप्ताह दो: पांच पाठ
- समूह में अभ्यास–कार्य और प्रस्तुतिकरण
- प्रशिक्षण के द्वितीय दिवस का समापन

तीसरा दिवस

08:30 – 09:00 आराधना, मनन, सूचनाएं

09:00 – 10:30 सत्र 1: पोर्टेबल बाइबल स्कूल शिक्षक प्रशिक्षण मैन्युअल:

- अवलोकन प्रश्नोत्तरी खेल
- प्रणाली संबंधी दृष्टिकोण

10:30 – 11:00 अवकाश

11:00 – 12:00 सत्र 2: सिद्धांत: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

- शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापनः 'सिद्धांत'' इस विभाग का परिचय
- आदर्श पाठः पाठ 2 – परमेश्वर का व्यक्तित्व

12:00 – 01:00 सत्र 3: सिद्धांत: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

- समूह में अध्ययन

01:00 – 02:00 भोजन अवकाश

02:00 – 04:30 सत्र 4: सिद्धांत: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

- प्रत्येक समूह के द्वारा समूह प्रस्तुतिकरण (प्रत्येक पाठ 4 मिनट)
- कक्षा में परस्पर विचार
- ''अंधे की अगुवाई'' का प्रदर्शन

4:30 – 05:00 अवकाश

05:00 – 06:30 सत्र 5 और 6:

- धर्मोपदेशकला: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग
- पुनः धर्मोपदेशकला का परिचय
- जीवन–वृत्तांत संबंधी उपदेश, वर्णनात्मक उपदेश, पाठ–विषयक उपदेश, और प्रासंगिक या विषयसंबंधी उपदेश का नमूना
- समूह में अभ्यास–कार्य और प्रस्तुतिकरण
- प्रशिक्षण के तीसरे दिवस का समापन

चौथा दिवस

08:30 – 09:00 आराधना, मनन, सूचनाएं

09:00 – 10:00 सत्र 1: पोर्टेबल बाइबल स्कूल शिक्षक प्रशिक्षण मैन्युअल:

- अवलोकन प्रश्नोत्तरी खेल
- प्रशिक्षण उपरांत मूल्यांकन

10:00 – 10:30 अवकाश

10:30 – 12:00 सत्र 2: झुण्ड की चरवाही: चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

- शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापनः ''झुण्ड की चरवाही'' इस विभाग का परिचय
- आदर्श पाठः पाठ 14 से पाठ 17

12:00 – 01:00 सत्र 3: झुण्ड की चरवाही – पाठ 18 (भोजन के बाद भी यह सत्र क्रमशः रहेगा)

01:00 – 02:00 भोजन अवकाश

02:00 – 03:30 सत्र 3: झुण्ड की चरवाही – पाठ 18 (भोजन के पहले आरंभ किया गया यह सत्र क्रमशः रहेगा)

03:30 – 04:30 सत्र 4: धर्मोपदेशकलाः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

- पुनः धर्मोपदेशकला का परिचय
- व्याख्यात्मक उपदेश का परिचय
- इन्डक्टीव बाइबल स्टडी के तत्व

04:30 – 05:00 अवकाश

05:00 – 06:00 सत्र 5: धर्मोपदेशकलाः

- समूह में अभ्यास–कार्य और प्रस्तुतिकरण
- प्रशिक्षण के चौथे दिवस का समापन

पांचवा दिवस

08:30 – 09:00 आराधना, मनन, सूचनाएं

09:00 – 10:00 सत्र 1: पोर्टेबल बाइबल स्कूल शिक्षक प्रशिक्षण मैन्युअलः

- अवलोकन प्रश्नोत्तरी खेल
- डिनॉमिनेशनल संबंध और एकता पर शिक्षा

10:00 – 10:30 अवकाश

11:00 – 12:00 सत्र 2: झुण्ड की चरवाहीः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

- शिक्षक–प्रशिक्षक के द्वारा अध्यापनः ''झुण्ड की चरवाही'' इस विभाग का पुनः परिचय
- जिम्मेवार चरवाहे की व्यक्तिगत गुण–विशेषताएं
- सर्वसामान्य सेवकाइयां और विशिष्ट सेवकाइयां

12:00 – 01:00 सत्र 3: झुण्ड की चरवाहीः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

- व्यक्तिगत पाठ का अध्ययन

01:00 – 02:00 भोजन अवकाश

02:00 – 04:30 सत्र 4: झुण्ड की चरवाहीः चरवाही करने के लिये बुलाये गये परमेश्वर के लोग

- व्यक्तिगत पाठ का प्रस्तुतिकरण
- आत्मिक प्रोत्साहन
- समापन

04:30 – 5:20 सत्र 5: धर्मोपदेशकलाः शिक्षक–प्रशिक्षक द्वारा अध्यापन

- व्याख्यात्मक उपदेश के नमूने की रूपरेखाः आई. बी. एस. के तत्वों का उपयोग करते हुये
- व्याख्यात्मक उपदेश को प्रस्तुत करने का नमूना

05:20 – 05:30 अवकाश

05:30 – 06:00 सत्र 6: समूह कार्य

06:00 – 06:40 सत्र 7: अंतिम दिवस की तैयारी

- पीबीएस के एक आर्दश दिवस का परिचय
- अंतिम दिवस की तैयारी
- पांचवे दिवस का समापन

परिशिष्ट ''एच''

अपने साथियों के उपदेश के अवलोकन–मूल्यांकन हेतु जांच–सूची

पीबीएस विद्यार्थियों के द्वारा तैयार किये गये और प्रस्तुत किये गये प्रत्येक उपदेश का इस जांच–सूची की सहायता से मूल्यांकन किया जाये ।

उपदेश प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थी का नामः .....
अवलोकन करने वाले साथी का नामः .....

उपदेश का प्रकारः जीवन–वृत्तांत संबंधी वर्णनात्मक पाठ–विषयक विषयसंबंधी व्याख्यात्मक

1. क्या उपदेश के लिये लिया गया शास्त्रपाठ स्पष्टता से बताया गया था? • हां • नहीं

   • क्या शास्त्रपाठ था? .....

2. क्या विषय/मुख्य विषय (मुख्य बिन्दु) स्पष्टता से बताया गया? • हां • नहीं

   • विषय/मुख्य विषय (मुख्य बिन्दु) क्या था? .....

3. क्या विषय/मुख्य विषय सुनने वालों के लिये उचित/अनुकुल था? • हां • नहीं

   • टिप्पणियांः

4. क्या परिचय ने श्रोताओं के ध्यान को आकर्षित किया? • हां • नहीं

   • क्या वक्ता ने परिचय को विषय/मुख्य विषय से जोड़ा? • हां • नहीं

   • टिप्पणियांः

5. क्या उपदेश के मुख्य भाग में तर्कसंगत प्रवाह था? • हां • नहीं

   • क्या उपदेश के मुख्य भाग ने मुख्य विषय का समर्थन किया? • हां • नहीं

   • टिप्पणियांः

6. बाइबल से लिये गये उदाहरणों की सूची दीजिये।

   • जीवन से दिये गये उदाहरणों की सूची दीजिये।

   • क्या बताये गये उदाहरण मुख्य विषय को बताने में सहायक हुये? • हां • नहीं

7. वक्ता ने उपदेश का उपसंहार/समापन कैसे किया? (किसी एक पर चिन्ह लगाइये)

   • मुख्य बातों को दोहराकर • उदाहरण देकर • कविता/गीत • अन्य

   • क्या उपसंहार ने उपदेश के मुख्य विषय पर जोर दिया? • हां • नहीं

   • टिप्पणियां

8. क्या वक्ता ने अंत में आमंत्रण दिया? • हां • नहीं

   • वक्ता ने श्रोताओं से क्या करने का आमंत्रण दिया?

9. संपूर्ण बोलने का ढंग/प्रस्तुतिकरण कैसा था?

   • उत्तम • बहुत अच्छा • अच्छा • सामान्य • निम्न

   • टिप्पणियां